



AL HAQQUL MUBEEN (HINDI)

जामिअतुल मदीना (लिलबनात) के निसाब में शामिल



इस्लामी अकाइद की अहम किताब

अल हक्कुल मुबीन



मुसनिफ :-

गज़ालिये ज़मां, राज़िये दौरां हज़रते अल्लामा
सय्यिद अहमद सईद काज़िमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي



(दعوت इस्लामी)

शो'बे वसी कुतुब



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ لَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले।

(المُسْتَطَرَف ج ١ ص ٣٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना

बकीअ

व मग़फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त्बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रूजूअ फ़रमाइये।

अल हक्कुल मुबीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" ने येह किताब "उर्दू" ज़बान में पेश की है और मजलिसे तराजिम ने इस किताब को हिन्दी की राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी" में रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो उर्दू ही है जब कि लीपि हिन्दी रखी है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए SMS या E-MAIL) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = ف	प = پ	भ = ب	ब = ب	अ = ا
झ = ج	ज = ج	स = ث	ठ = ث	ट = ث	थ = ث
ढ = ڈ	ध = د	ड = ڈ	द = د	ख = خ	ह = ح
ज़ = ز	ज़ = ز	ढ़ = ڈ	ड़ = ڈ	र = ر	ज़ = ز
अ = ع	ज़ = ظ	त = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش
ग = گ	ख = ک	क = ک	क = ق	फ = ف	ग = غ
य = ی	ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
= ُ	= ُ	= ِ	= ِ	= ِ	= ِ

याद द्वाशत

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्दर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी।

[illegible]

याद द्वाशत

दौराने मुतालाआ जरूरतन अन्दर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी।

[illegible]

﴿فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ﴾

—: तर्जमए कन्जुल ईमान :-

तो तुम **अल्लाह** पर भरोसा करो बेशक तुम रोशन हक पर हो (अल: ८९)

जामिअतुल मदीना (लिल बनात) के निशाब में
शामिल इस्लामी अकाइद की अहम किताब

अल हक्कुल मुबीन

गज़ालिये जमां, राजिये दौरां

हज़रते अल्लामा सय्यिद अहमद सईद काज़िमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي

—: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

(शो'बए दर्सी कुतुब)

—: नाशिऱ :-

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद,
देहली-110006 फ़ोन : 011-23284560

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

وَعَلَىٰ إِلَيْكَ وَأَصْلُحْ بِكَ يَا حَبِيبُ اللَّهِ
الصلوة والسلام عليك يا رسول الله

नाम किताब : अल हक्कुल मुबीन
मुसन्निफ़ : गज़ालिये ज़मां, राज़िये दौरां हज़रते अल्लामा सय्यिद
अहमद सईद काज़िमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَرِي
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो 'बए दर्सी कुतुब)
सिने त़बाअत : ज़िलक़ा 'दतुल हराम, सि. 1435 हि.
नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली (अल हिन्द)

-: मक्तबतुल मदीना की मुश्तलिफ़ शाख़ें :-

- ✽...अहमदाबाद : फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बागीचे के सामने, मिरज़ापूर,
अहमदाबाद, गुजरात -1, फ़ोन : 9327168200
- ✽... मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट
ओफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429
- ✽... नागपूर : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने,
मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 09373110621
- ✽.... अजमेर : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नल्ला
बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385
- ✽....हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड,
ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860
- ✽... हैदराबाद : मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद,
आन्ध्र प्रदेश, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
- ✽... कानपूर : मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, डिपटी का पडाव,
गुर्बत पार्क, कानपूर, फ़ोन : 09335272252
- ✽... बनारस : अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बा शाह की तकया,
मदन पूरा, बनारस, फ़ोन : 09369023101

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या ('दा ते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

“بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ” के 19 हुरफ़ की निश्चत से इस

किताब को पढ़ने की 19 “नियतें”

نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाने मुस्तफ़ा

या'नी मुसलमान की नियत उस के अमल से बेहतर है ।

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٢٢، ج ٦، ص ١٨٥)

दो मदनी फूल :

﴿1﴾ बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अमले खैर का सवाब नहीं मिलता ।

﴿2﴾ जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

﴿1﴾ हर बार हम्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअव्वुज़ व ﴿4﴾ तस्मिया से आगाज़ करूंगा । (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अमल हो जाएगा) ।

﴿5﴾ रिज़ाए इलाही غَزَوَجَل के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुतालआ करूंगा । ﴿6﴾ हत्तल वस्अ इस का बा वुजू और ﴿7﴾ किब्ला रू मुतालआ करूंगा । ﴿8﴾ किताब को पढ़ कर कलामुल्लाह व कलामे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सहीह मा'नों में समझ कर अवामिर का इमतिसाल और नवाही से इजतिनाब करूंगा । ﴿9﴾ दरजे में इस किताब पर उस्ताद की

बयान कर्दा तौज़ीह तवज्जोह से सुनूंगा । ﴿10﴾ उस्ताद की

तौज़ीह को लिख कर اِسْتَعِيْنْ بِمِثْلِكَ عَلٰى حِفْظِكَ पर अमल करूंगा ।

«11» तलबा के साथ मिल कर इस किताब के अस्बाक़ की तकरार करूंगा । «12» अगर किसी तालिबे इल्म ने कोई नामुनासिब सुवाल किया तो उस पर हंस कर उस की दिल आज़ारी का सबब नहीं बनूंगा । «13» दरजे में किताब, उस्ताद और दर्स की ता'जीम की खातिर गुस्ल कर के, साफ़ मदनी लिबास में, खुशबू लगा कर हाज़िरी दूंगा । «14» अगर किसी तालिबे इल्म को इबारत या मस्अला समझने में दुश्वारी हुई तो हत्तल इमकान समझाने की कोशिश करूंगा । «15» सबक़ समझ में आ जाने की सूरत में हम्दे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** बजा लाऊंगा । «16» और समझ में न आने की सूरत में दुआ करूंगा और बार बार समझने की कोशिश करूंगा । «17» सबक़ समझ में न आने की सूरत में उस्ताद पर बद गुमानी के बजाए इसे अपना कुसूर तसव्वुर करूंगा । «18» किताबत वगैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वगैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता) «19» किताब की ता'जीम करते हुवे इस पर कोई चीज़ क़लम वगैरा नहीं रखूंगा । इस पर टेक नहीं लगाऊंगा ।



गाइबाना नमाज़े जनाज़ा

मय्यित का सामने होना ज़रूरी है, गाइबाना नमाज़े जनाज़ा नहीं हो सकती । (الدر المختار ورد المختار، ج ۳، ص ۱۲۳)

फ़ेहरिस्त

उन्वान	स.	उन्वान	स.
किताब पढ़ने की नियतें	A-7	अहले सुन्नत पर तक्फ़ीर का इल्ज़ाम लगाने की वजह	24
पेशे लफ़्ज़	1	मस्अलए तक्फ़ीर में अहले सुन्नत का मस्लक	24
इस ज़माने के ख़वारिज का तअरुफ़ ?	4	अपनों की नज़र में भी कुफ़्र	26
ख़ारिजिय्यत की इब्तिदा	5	अस्ल पीर परस्त कौन ?	28
हज़रते अ़ली को शहीद करने वाले कौन ?	6	मुसलमानों को काफ़िर कहने वाला कौन है ?	29
फ़ितनए ख़ारिजिय्यत की ग़ैबी ख़बर	7	अफ़ज़लिय्यत व असालते मुस्तफ़विय्या	30
फ़ितनए ख़ारिजिय्यत और उ-लमाए उम्मत	7	साहिबे बराहीने का़िताआ की ग़लत फ़हमी	32
हिन्द में फ़ितनए ख़ारिजिय्यत	8	बा'ज उलूम की सरकार عَلَيْهِ السّلام से नफ़ी करना	35
तक्विद्यतुल ईमान उ-लमा की नज़र में	9	एक कसीरुल वुकूअ शुबे का इज़ाला	39
सच्चा कौन?	10	कुफ़्र, शिर्क व बिदअत की यलगार	40
सबबे तालीफ़	11	शिर्क व बिदअत के मुतअल्लिक अहले सुन्नत का अक्दीदा	41
एक ज़रूरी गुज़ारिश	12	इन्साफ़ कीजिये	43
कुरआने करीम और ता'जीमे रसूल عَلَيْهِ السّلام	13	एक ए'तिराज़ और इस का जवाब	46
तौहीने रसूल का हुक्म	15	तौबा नामा दिखाना होगा	47
एक शुबे का इज़ाला	16	तौहीन आमेज़ इबारात के इज़हार की ज़रूरत	49
एक और ए'तिराज़ का जवाब	17	फ़रीक़े सानी की तहज़ीब का एक नमूना	49
तौहीन का तअल्लुक उर्फ़ से है	18	बा'ज लोग कहते हैं	53
काइल की निय्यत का ए'तिबार नहीं	19	आख़िरी सहारा	55
तौहीन का दारो मदार वाक़ेइय्यत पर नहीं होता	20	एक ताज़ा शुबे का जवाब	56
अहले सुन्नत पर तक्फ़ीर के इल्ज़ाम का जवाब	22	ज़रूरी तम्बीह	58
आ'ला हज़रत और तक्फ़ीरे मुस्लिमीन	23	हर्फ़े आख़िर	60

कुफ़्रिया इबारात	62	अम्बिया व मलाइका को शैतान कहना (مَعَادُ اللَّهِ)	89
इल्मे इलाही की नफ़ी	62	नबी को झूठा कहना	89
रब तआला को झूठा कहना	65	उम्मत की आ'माल में नबी से बढ़ाना	90
कुरआने करीम की फ़साहत व बलागत का इन्कार	65	मुफ़स्सरीन को झूठा कहना	92
शैतान व मलकुल मौत के इल्म को बढ़ाना	66	शैख़ नजदी और तक्वियतुल ईमान की ताईद	93
हुज़ूर को अपने अन्जाम की भी ख़बर नहीं (مَعَادُ اللَّهِ)	68	अहले सुन्नत को मुशरिक बनाना	94
इल्मे नबी को जानवरों के इल्म से तश्बीह देना	69	फ़तावा रशीदिया की मुतनाज़िआ इबारात	96
सिफ़ते "रहमतुल्लिल आलमीन" का इन्कार करना	71	नियाज़ और फ़ातिहा को ह़राम कहना	97
ख़त्मे नबुव्वत का इन्कार करना	72	मुहर्म्म की सबील से खाने को ह़राम कहना	101
हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام को अपना शागिर्द बताना (مَعَادُ اللَّهِ)	73	हिन्दूओं की होली दीवाली के खाने को ह़लाल कहना	102
हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام को गिरने से बचा लिया (مَعَادُ اللَّهِ)	74	कच्चा खाने को ह़लाल व सवाब कहना	103
अपने पीर को रसूलुल्लाह कहना (مَعَادُ اللَّهِ)	75	गंगोही साहिब को हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام का सानी कहना	104
हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام पर एक अज़ीम बोहतान	77	हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की सरीह तौहीन	105
नबी की ता'ज़ीम फ़क़्त बड़े भाई जितनी बताना	78	हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की सरीह तौहीन	106
हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام मर कर मिट्टी में मिल गए (مَعَادُ اللَّهِ)	79	का'बए मुशरफ़ा की सरीह तौहीन	107
हुज़ूर की सिफ़त दज्जाल के लिये साबित करना	80	बाब "अक्सी इबारात"	109
तक्वियतुल ईमान की गुस्ताख़ाना इबारात	82	माख़ज़ो मराजेअ	118

अल हदीस : "अगर (बद मज़हब) बीमार पड़ें तो उन को पूछने न जाओ और अगर वोह मर जाएं तो उन के जनाजे पर हाज़िर न हो और अगर उन का सामना हो तो सलाम न करो।" (सनن ابن ماجه، المقدمة، باب القدر)

और एक जगह यूं फ़रमाया : "उन से शादी बियाह न करो, उन के साथ न खाओ, उन के साथ न पियो, उन के जनाजे की नमाज़ न पढ़ो और उन के साथ नमाज़ न पढ़ो।

(کنز العمال، کتاب الفضائل فی الباب الثالث فی ذکر الصحابة وفضلهم)

أَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ! فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल मदीनतुल इल्मिया

अज : बानिये दा'वते इस्लामी, अशिके आ'ला हज़रत, शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरि रज़वी ज़ियाई **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه**

الحمد لله على إحسانه وفضل رسوله صلى الله تعالى عليه وآله وسلم

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, इहयाए सुन्नत और इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आम करने का अज़मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो खूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअद्दिद मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिया” भी है जो दा'वते इस्लामी के उ-लमा व मुफ़्तियाने किराम **كَثَرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى** पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए जैल छे शो'बे हैं :

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| ﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत | ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब |
| ﴿3﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब | ﴿4﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब |
| ﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब | ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज |

“अल मदीनतुल इल्मिया” की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे त्रीकत, बाइसे खैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अहमद रज़ा

ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की गिरां मायह तसानीफ़ को अंसरे हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हतल वुसअ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “दा'वते इस्लामी” की तमाम मजालिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इल्मिया” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अमले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदफ़न और जन्नतुल फिरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

امین بجاه النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم



रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

क्या नबी का बदन मिट्टी खा सकती है ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने अजीमुश्शान है :

إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَتَّى يُرْزَقَ

“बेशक **अल्लाह** तआला ने ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है कि वोह अम्बियाए किराम के बदन खाए। **अल्लाह** के नबी ज़िन्दा हैं और उन को रोज़ी दी जाती है।”

(سُئِلَ ابْنُ مَاجَةَ ۲ ص ۲۹۱ حَدِيث ۲۳۶ اِدَار المَعْرِفَةِ بِيْرُوت)

अल मदीनतुल इल्मिय्या का इस किताब पर काम

..... الحمد لله على احسانه दा'वते इस्लामी की मजलिस अल

मदीनतुल इल्मिय्या शबो रोज़ इल्मी काविशों में मसरूफ़ है। इस्लाहे अक्काइदो आ'माल की गरज़ से मुख़्तलिफ़ कुतुबो रसाइल मजलिस की जानिब से मक्तबतुल मदीना के ज़रीए मन्ज़रे आम पर आते रहते हैं।

इस ज़िम्मेदारी को ब हुस्नो ख़ूबी निभाने के लिये अल मदीनतुल इल्मिय्या को कई शो'बाजात में तक्सीम किया गया है। इन्हीं में से एक शो'बा "दसी कुतुब" भी है जो मजलिसे जामिआतुल मदीना (दा'वते इस्लामी) की मुआवनत से दर्से निज़ामी (लिलबनीन वलबनात) के निसाब में शामिल कुतुब की शुरुआत व हवाशी तहरीर करने और इन को दौरे जदीद के तक़ाज़ों से हम आहंग कर के शाएअ करने की सड़ये पैहम कर रहा है।

ग़ज़ालिये ज़मां राज़िये दौरां हज़रते अल्लामा सय्यिद अहमद सईद साहिब काज़िमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعْدِي की किताब "अल हक्कुल मुबीन" पर काम भी इसी कड़ी का एक हिस्सा है। इस्लामी अक्काइद की यह किताब तन्ज़ीमुल मदरिस व मजलिसे जामिआतुल मदीना (लिलबनात) की तरफ़ से इस्लामी बहनों के निसाब में शामिल है लेकिन मस्लके हक्क की मा'रिफ़त पर मुश्तमिल होने की बिना पर तालिबात के साथ साथ दीगर इस्लामी भाइयों और बहनों के लिये भी यक्सां मुफ़ीद है। लिहाज़ा अल मदीनतुल इल्मिय्या इस पर मुन्दरिजए ज़ैल काम कर के हदिथ्यए नाज़ीरीन कर रहा है।

काम की तफ़्सील

①....मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ के हवाला जात को बाकी रखते हुवे अलग से भी हाशिये में आयात, अहादीस और अरबी इबारात की तख़रीज की गई है।
 ②....बद मज़हबों की किताबों की इबारात के सिलसिले में मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ के हवाला जात पर ही इक्तिफ़ा किया गया है अलबत्ता चन्द अहम कुतुब की इबारात स्कैन (Scane) कर के बाब "अक्सी इबारात" में शामिल कर दी गई हैं।

③....किताब की तस्हील के पेशे नज़र अल्फ़ाज़, मअानी और हेडिंगज़

(सुरखियों) का एहतिमाम किया गया है अलबत्ता इल्मिय्या की हेडिंगज़ के साथ स्टार (☆) की अलामत लगाई गई है ताकि मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ की हेडिंगज़ से इमतियाज़ रहे।

- ④....हत्तल इमकान मुतवफ़फ़ा (या'नी किताब में मज़कूर बुजुर्गों वगैरा के इन्तिक़ाल का सिने हिजरी) का एहतिमाम किया गया है।
- ⑤....अरबी व फ़ारसी इबारात का तर्जमा कर दिया गया है।
- ⑥....मुश्किल अल्फ़ाज़ बिल खुसूस अरबी इबारात पर ए'राब का ख़ास एहतिमाम किया गया है।
- ⑦....मतन को चन्द मतबूआत से तकाबुल कर के हत्तल इमकान अग़लात से पाक करने की कोशिश की गई है।
- ⑧....मुश्किल अल्फ़ाज़ और इबारात को हाशिया लगा कर आसान करने की कोशिश की गई है। (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

ज़ियाराते औलिया व करामाते औलिया

☆....कभी ज़ियारत, अहले कुबूर से फ़ाइदा उठाने के लिये होती है जैसा कि कुबूरे सालिहीन की ज़ियारत के बारे में अहादीस आई हैं।

(जज़बुल कुलूब तर्जमा अज़ फ़ारसी)

☆....अल्लामा नाबुलुसी عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ ने हदीकतुन्नदिय्या में फ़रमाया :

كَرَامَاتُ الْأَوْلِيَاءِ بَاقِيَةٌ بَعْدَ مَوْتِهِمْ أَيْضًا وَمَنْ زَعَمَ خِلَافَ ذَلِكَ فَهُوَ جَاهِلٌ مُتَعَصِّبٌ وَلَنَا رِسَالَةٌ فِي خُصُوصِ إِبْتِهَاثِ الْكَرَامَةِ بَعْدَ مَوْتِ الْوَلِيِّ - آه مُلَخَّصًا

(الحديقة الندية: أولهم آدم أبو البشر ۱/ ۲۹۰) नूरिय्या रज़विय्या सरदारा बाद

या'नी औलिया की करामात बा'दे इन्तिक़ाल भी बाक़ी हैं जो इस के ख़िलाफ़ ज़अम करे वोह जाहिल हटधर्म है, हम ने एक रिसाला ख़ास इसी अम्र के सुबूत में लिखा है।

☆....इमाम शैखुल इस्लाम शहाब रमली से मन्कूल हुवा :

مُعْجَزَاتُ الْأَنْبِيَاءِ وَكَرَامَاتُ الْأَوْلِيَاءِ لَا تَنْقَطِعُ بِمَوْتِهِمْ
या'नी अम्बिया के मो'जिज़े और औलिया की करामतें इन के इन्तिक़ाल से मुन्क़तअ नहीं होतीं।

तझारुफे मुशन्निक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

विलादत : ग़ज़ालिये ज़मां रज़िये दौरां इमामे अहले सुन्नत अल्लामा सय्यिद अहमद सईद काज़िमी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की विलादत सि. 1913 ई. को मुरादाबाद के शहर अमरोहा में हुई ।

(मक़ालाते काज़िमी, स. 11 काज़िमी पब्लीकेशन्ज़ मुल्तान)

ता'लीमो तर्बिय्यत : आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इब्तिदा से इन्तिहा तक ता'लीम अपने बड़े भाई शैखुल मशाइख़ हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद ख़लील काज़िमी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से हासिल की और उन्हीं के दस्ते हक़ पर बैअत की ।

(मक़ालाते काज़िमी, स. 11 काज़िमी पब्लीकेशन्ज़ मुल्तान)

तदरीस के मैदान में : ग़ज़ालिये ज़मां ता'लीम से फ़राग़त के बा'द अहबाब से मुलाक़ात के लिये लाहोर ख़ाना हुवे इसी असना में एक दिन ज़ामिअ नो'मानिय्या जाना हुवा वहां एक क्लास में हाफ़िज़ मुहम्मद ज़माल साहिब मुसल्लमुस्सुबूत पढ़ा रहे थे । आप भी सुनने की ख़ातिर एक तरफ़ बैठ गए, उस वक़्त माहिyyते मुजर्रदा पर गुफ़्तगू हो रही थी आप ने भी बहूस में हिस्सा लिया । आप की जूदते तब्ब़ और इस्तिहज़ारे मसाइल से हाफ़िज़ साहिब बहुत मुतअस्सिर हुवे और उन्हीं ने दबीर अन्जुमन, ख़लीफ़ा ताजुद्दीन साहिब से आप की काबिलिय्यत का तज़क़िरा किया । उन्हीं ने आप को ज़ामिअ नो'मानिय्या में तदरीस की पेशकश की, जिसे आप ने अपने बरादरे मुअज़्ज़म से इजाज़त की शर्त पर क़बूल कर लिया । ज़ामिअ नो'मानिय्या में तदरीस के दौरान आप के ज़िम्मे नूरुल अन्वार, कुतूबी, मुख़्तसरुल मअानी और शर्हें ज़ामी वगैरा की तदरीस मुक़र्रर की गई । रफ़्ता रफ़्ता त़लबा का मैलान आप की तरफ़ बढ़ने लगा यहां तक कि एक वक़्त में अठ्ठाईस अस्बाक़ की तदरीस की ज़िम्मेदारी आप के कन्धों पर आ गई । तदरीस का तज़रिबा आप को दौराने ता'लीम ही हासिल

हो गया था, ज़मानए ता'लीम के आख़िरी दो सालों में आप बाक़ाइदा अस्बाक़ पढ़ाया करते थे । वोह महारत यहां काम आई और नो'मानिय्या में

आप की तदरीस का सिक्का बैठ गया। सि. 1931 ई. में आप लाहोर वापस आ गए और वहां अमरोहा में मुतअद्दिद मुबाहसे होते रहे। मशहूर मुनाज़िर

मौलवी मुर्तज़ा हुसैन दरभंगी से भी कई बार मुनाज़रे हुवे और **अब्बाह** तआला के फज़लो करम से आप हमेशा कामयाब व कामरान रहे। आप दो साल ओकाड़ा भी रहे, उस ज़माने में वहां गुस्ताख़ाने रसूल की बड़ी शोरश थी आप ने वहां **मस्लके अहले सुन्नत** की तब्लीग़ और दर्सों तदरीस के सिलसिले को जारी किया आप की मसाई से बहुत जल्द फ़ज़ा बेहतर हो गई और अज़मते रसूल के ना'रों से ओकाड़ा के दरो दीवार गूँजने लगे।

दीगर दीनी ख़िदमात : आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने मदीनतुल औलिया मुल्तान में “जामिआ इस्लामिय्या अरबिय्या अन्वारुल उलूम” क़ाइम फ़रमाया, दर्सों तदरीस और क़ौम व मिल्ली ख़िदमात सर अन्जाम देने के साथ साथ आप ने कुतुबो रसाइल भी तस्नीफ़ फ़रमाए हैं।

तसानीफ़ : आप ने मुतअद्दिद तसानीफ़ फ़रमाई जिन में से : तर्जमतुल कुरआनुल बयान शरीफ़, तफ़्सीरुल तिबयान (पारह अब्वल), अल हक्कुल मुबीन (किताबे हाज़ा) तस्बीहुर्रहमान अनिल किज़्ब व नुक्सान, और आप के मक़ालात का मजमूआ बनाम मक़ालाते काज़िमी (तीन जिल्दों में) ज़ियादा मशहूर हैं।

वफ़ात व मदफ़न :

☆.... आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने 25 रमज़ानुल मुबारक ब मुताबिक़ 4 जून सि. 1986 ई. को विसाल फ़रमाया और आप का मज़ारे पुर अन्वार ईदगाह मदीनतुल औलिया मुल्तान में है। जहां हर साल चार पांच शव्वालुल मुकर्रम को उर्स मनाया जाता है।

(माहनामा अस्सईद मुल्तान, शा'बान रमज़ान सि 1431 हि. जुलाई 2010 ई.)

अब्बाह **عَزَّوَجَلَّ** की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो।

☆.....आप के तफ़्सीली तआरुफ़ के लिये देखिये मक़ालाते काज़िमी जिल्द अब्वल।

पेशे लफ्ज

तख़्कीके इन्सानी का मक्सद मा'रिफ़ते इलाही है और मा'रिफ़ते इलाही का मम्बा (1) मुशाहदए तजल्लिय्याते हुस्ने ला मुतनाही (2) । इस मक्सदे अज़ीम के तसव्वुर ने इन्सान को वर्तए हैरत (3) में मुब्तला कर दिया । वोह एक ऐसे ज़ईफ़ व नादार अजनबी मुसाफ़िर की तरह हैरान था जिसे करोड़ों मील की दुश्वार गुज़ार राहें दरपेश हों और मन्ज़िले मक्सूद तक पहुंचने का कोई ज़रीआ उस के पास मौजूद न हो ।

वोह अलामे हैरत में ज़बाने हाल से कहता था : इलाही ! तेरी मा'रिफ़त की मन्ज़िल तक कैसे पहुंचूं ? मैं कमज़ोर ज़ईफ़ुल बुनयान (4) और फिर मुझे बहकाने के लिये क़दम क़दम पर शैतान । वोह परेशान हो कर सोचता था कि जो'फ़ को कुव्वत से क्या निस्बत ? इम्कान (5) को वुजूब (6) से क्या वासिता ? महदूद को ग़ैर महदूद से क्या अलाका ? कहां हादिस (7) कहां क़दीम ? कहां इन्सान कहां रहमान ? न उस के हुस्नो जमाल की तजल्लियों तक मेरी निगाहें पहुंच सकती हैं ? न मैं उस के दीदारे जमाल की ताब ला सकता हूं !

इन्सान इसी कश्मकश में मुब्तला था कि कुदरत ने बर वक़्त उस की दस्तगीरी फ़रमाई और रूहे दो अलाम हज़रते मुहम्मद ﷺ के आईनए वुजूद से अपने हुस्ने ला महदूद की तजल्लियां ज़ाहिर फ़रमा कर अपनी मा'रिफ़त की राहें उस पर रोशन कर दीं । (8)

1 बुन्याद 2 खुदाए तआला के ला महदूद हुस्न की तजल्लिय्यात का मुशाहदा करना । 3 इन्तिहाई हैरत की हालत में 4 पैदाइशी कमज़ोर 5 जो अपने वुजूद में दूसरे का मोहताज हो या'नी मख़लूक 6 जो अपने वुजूद में दूसरे का मोहताज न हो या'नी ख़ालिक 7 क़दीम की ज़िद नई चीज़ जो पहले न हो, फ़ानी 8 या'नी **अल्लाह** तआला ने नबिय्ये करीम ﷺ को अपनी ज़ात व सिफ़ात का मज़हरे अतम बना कर इन्सान पर अपनी मा'रिफ़त की राहें खोल दीं कि जिस ने रब के हुस्नो जमाल और कुदरत को देखना हो वोह हुज़ूर ﷺ को देख ले ।

सलातो सलाम हो उस बरज़खे कुब्रा⁽¹⁾ हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा عليه وآله التحية والثناء पर जिस ने जो'फे इन्सानी को कुव्वत से बदल दिया।

हुदूस को क़दीम का आईना बना दिया। इमकान को बारगाहे वुजूब में हाज़िर कर दिया। मकान का रिश्ता ला मकान से जोड़ दिया। महदूद को ग़ैरे महदूद से मिला दिया या'नी बन्दे को खुदा तक पहुंचा दिया।

हक़ येह है कि रुख़्सारे मुहम्मदी आईनए जमाले हक़ है और ख़द्दो ख़ाले मुस्तफ़ा मज़हरे हुस्ने किब्रिया।⁽²⁾ फिर किस तरह मुमकिन है कि एक का इन्कार दूसरे के इक़रार के साथ जम्अ हो जाए। अगर हक़ के साथ बातिल, नूर के साथ जुल्मत, कुफ़्र के साथ इस्लाम का इजतिमाअ़ मुतसव्वर हो तो येह भी⁽³⁾ मुमकिन होगा। जब वोह मुहाल है तो येह भी मुहाल।

बिना बरीं इस हक़ीक़त को तस्लीम करने के सिवा कोई चारा ही नहीं कि हुस्ने मुहम्मदी का इन्कार जमाले खुदावन्दी का इन्कार और बारगाहे नबुव्वत की तौहीन हज़रते उलूहिय्यत⁽⁴⁾ की तन्कीस है। शाने उलूहिय्यत की तौहीन करने वाला मोमिन नहीं तो गुस्ताख़े नबुव्वत क्यूंकर मुसलमान हो सकता है।

कोई मक्तबए ख़याल⁽⁵⁾ हो हमें किसी से इनाद नहीं अलबत्ता मुन्किरीने कमालाते नबुव्वत और मुनक्किसीने शाने रिसालत⁽⁶⁾ से हमें तबई तनफ़्फ़ुर⁽⁷⁾ है। इस लिये कि वोह आईनए जमाले उलूहिय्यत में ऐब के मुतलाशी हैं और उन का येह तर्जे अमल न सिर्फ़ मक्सदे तख़लीके इन्सानी के मुनाफ़ी है बल्कि आदाबे बन्दगी⁽⁸⁾ के भी ख़िलाफ़ और ख़ालिके काइनात से खुली बगावत के मुतरादिफ़ है।

① बरज़ख़ से मुराद वोह शै जो दो अश्या के दरमियान वासिता हो चूँकि सरकार عليه السلام ख़ालिक और मख़लूक के दरमियान वासिता हैं लिहाज़ा हक़ीक़ते मुहम्मदी बरज़ख़ है। ② या'नी हुज़ूर عليه السلام का हुस्नो जमाल और सिफ़ात **अव्वाह** तअ़ाला के हुस्नो जमाल और सिफ़ात का मज़हर हैं।

③ या'नी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इन्कार **अव्वाह** तअ़ाला का इन्कार न हो। ④ शाने खुदावन्दी ⑤ फ़िर्का ⑥ शाने रिसालत घटाने वाले

⑦ फ़ितरी नफ़रत ⑧ इबादत के आदाब

इस के बा वुजूद भी हमें उन से कुछ सरोकार नहीं, हमारा ख़िताब तो जमाले उलूहियत के दीवानों और शम्ए रिसालत के उन परवानों से है जो जाते पाके मुस्तफ़ा عليه وآله الصّحیة والثناء को मा'रिफ़ते इलाही और कुर्बे खुदावन्दी का वसीलए उज़मा जान कर उन की शम्ए हुस्नो जमाल पर कुरबान हो जाने को अपना मक्सदे हयात समझते हैं और इसी लिये हम ने दलाइल से अलग हो कर सिर्फ़ मसाइल बयान किये हैं। अलबत्ता इब्तिदा में बतौर मुक़द्दमा चन्द ऐसे उसूल लिख दिये हैं जिन की रोशनी में नाज़िरीने किराम पर उन तमाम तावीलात का फ़साद रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह हो जाएगा जो तौहीन आमेज़ इबारात⁽¹⁾ में आज तक की गई हैं। रहे दलाइल तो ان شاء الله تعالیٰ मुस्तक़बिले क़रीब में हर इख़िलाफ़ी मस्अले पर एक मुस्तक़िल रिसाला हदिय्यए नाज़िरीन होगा जिस में पूरी तफ़सील के साथ दलाइल मरकूम होंगे।⁽²⁾ وَمَا ذَلِكْ عَلَى اللَّهِ بَعِزٌ

इस के बा'द येह भी अर्ज कर दूं कि इस रिसाले में तमाम हवालाजात व इबाराते मन्कूला को मैं ने बजाते खुद अस्ल कुतुब में देख कर पूरी तहक़ीक़ और एह्तियात के साथ नक़ल किया है। अगर एक हवाला भी ग़लत साबित हो जाए तो मैं उस से रुजूअ कर के अपनी ग़लती का ए'तिराफ़ कर लूंगा और साथ ही इस का ए'लान भी शाएअ कर दूंगा।

आख़िर में दुआ है कि **अल्लाह** तआला इस मुख़्तसर रिसाले को बरादराने अहले सुन्नत के लिये अपने मस्लक पर साबित क़दम रहने का मूजिब और दूसरों के लिये रुजूअ इलल हक़⁽³⁾ का सबब बनाए। (आमीन) غُفْرَانُهُ सय्यिद अहमद सईद काज़िमी

① जो देवबन्दी फ़िर्के के अकाबिर उ-लमा की किताबों में मौजूद हैं।

② और येह **अल्लाह** पर कुछ दुश्वार नहीं ③ हक़ की तरफ़ लौटने

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ

अमाबेदु : नाज़िरीने किराम की खिदमत में अर्ज़ है कि इस रिसाले में अस्ल मवाद तो मैं ने सि. 1946 ई. में ही मुरत्तब कर लिया था लेकिन बा'ज मवानेअ⁽¹⁾ की वजह से तबाअत न हो सकी...हत्ता कि इस अर्से में देवबन्दी हज़रात के बा'ज रसाइल व मज़ामीन नज़र से गुज़रे जिन से मुफ़ीदे मतलब कुछ इक्तिबासात ले कर इस में शामिल कर दिये गए ।

इस रिसाले की इशाअत से मेरी ग़रज़ सिर्फ़ येह है कि जो भोले भाले मुसलमान उ-लमाए देवबन्द के ज़ाहिरे हाल को देख कर उन्हें अहले हक़ और सहीहुल अक़ीदा सुन्नी मुसलमान समझते हैं और इसी बिना पर दीनी मा'मूलात में उन्हें अपना मुक्तदा व पेशवा⁽²⁾ बनाते हैं । उन के पीछे नमाज़ें पढ़ते हैं । उन से मज़हबी मसाइल दरयाफ़्त करते हैं और उन के साथ मज़हबी उलफ़्त रखते हैं मगर येह नहीं जानते कि उन के अक़ाइद कैसे हैं ? इस रिसाले को पढ़ कर उन्हें उ-लमाए देवबन्द के अक़ाइद से वाकिफ़ियत हो जाए और वोह अपनी अक़िबत⁽³⁾ की फ़िक्र करें और सोचें कि जिन लोगों के ऐसे अक़ीदे हैं उन को अपना मुक्तदा और पेशवा मान कर हमारा क्या हर्ष⁽⁴⁾ होगा ।

❦ वहाबी - देवबन्दी ❦

अगर्चे वहाबी-देवबन्दी दो लफ़ज़ हैं लेकिन इन से मुराद सिर्फ़ वोही गुरौह है जो अपने मा सिवा दूसरे तमाम मुसलमान को काफ़िर व मुशरिक और बिदअती क़रार देता है और जिस के सर बरआवरदा लोगों ने⁽⁵⁾ अपनी किताबों में

❶ रुकावटों ❷ अमल व अक़ाइद में उन की पैरवी करते हैं ।

❸ आख़िरत ❹ अन्जाम ❺ वहाबिय्या के अकाबिर उ-लमा ने

رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ व दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

महबूबाने खुदावन्दी की शान में तौहीन आमेज़ इबारतें लिखीं

और बा 'ज उयूब व नक़ाइस को अम्बिया व औलिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

की तरफ़ बे धड़क मन्सूब किया । इस किस्म के लोगों का वजूद अहदे रिसालत⁽¹⁾ से ही चला आ रहा है । चुनान्चे,

अल्लाह तअ़ाला कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है ।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَلْمِزَكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْتَخْطُونَ وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ

(پ ۱۰، سورة التوبة، ۵۹:۵۸)

तर्जमा : और इन में कोई वोह है जो सदके बांटने में तुम पर ता'न करता है तो अगर इन में से कुछ मिले तो राज़ी हो जाएं और न मिले तो जब ही वोह नाराज़ हैं और क्या अच्छा होता अगर वोह इस पर राज़ी होते जो **अल्लाह** और उस के रसूल ने उन को दिया और कहते **अल्लाह** काफी है अब देता है **अल्लाह** हमें अपने फ़ज़ल से और उस का रसूल, हमें **अल्लाह** ही की तरफ़ रग़बत है ।

येह आयत जुल खुवैसिरा तमीमी⁽²⁾ के हक़ में नाज़िल हुई । इस शख़्स का नाम हुरकूस बिन जुहैर⁽³⁾ है येही ख़वारिज की अस्ल बुन्याद है ।

ख़ारिजियत की इब्तिदा

बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** माले ग़नीमत तक्सीम फ़रमा रहे थे तो जुल खुवैसिरा ने कहा : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अद्ल कीजिये ।⁽⁴⁾

१ सरकार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के ज़मानए मुबारका से २ जुल खुवैसिरा तमीमी ३ हुरकूस बिन जुहैर ४ इन्साफ़ से तक्सीम कीजिये ।

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तुझे ख़राबी हो, मैं अदल न करूंगा तो कौन करेगा ? हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ किया : मुझे इजाज़त दीजिये कि इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूं । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : इसे छोड़ दो । इस के और भी हमराही⁽¹⁾ हैं कि तुम उन की नमाज़ों के सामने अपनी नमाज़ों को और उन के रोज़ों के सामने अपने रोज़ों को हक़ीर देखोगे । वोह कुरआन पढ़ेंगे और उन के गलों से न उतरेगा । वोह दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शीकार से ।⁽²⁾

दीन में दाख़िल हो कर बे दीन होने वालों की इब्तिदा ऐसे ही लोगों से हुई है जो नमाज़, रोज़ा और दीन के सब काम करने वाले थे लेकिन इस के बा वुजूद उन्होंने ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शाने अक़दस में गुस्ताख़ी की और बे दीन हो गए ।

हज़रते अली को शहीद करने वाले कौन ?

हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शाने मुबारक में तौहीन करने वाले जुल खुवैसिरा के जिन हमराहियों का ज़िक्र हदीस शरीफ़ में आया है उन से मुराद वोही लोग हैं जिन्होंने ने जुल खुवैसिरा की तरह शाने रिसालत में गुस्ताख़ियां कीं । इस्लाम में येह पहला गुरौह ख़ारिजियों का है, येही गुरौह अहले हक़ को काफ़िर व मुशरिक कह कर उन से क़िताल व जिदाल⁽³⁾ को जाइज़ क़रार देता है । चुनान्वे,

① साथी

② مسلم، کتاب الزکاة، باب ذکر الخوارج و صفاتهم، ص ۵۳۳، الحديث: ۱۰۶۴..... بخاری، کتاب

المناقب، باب علامة النبوة فی الاسلام، ۵۰۳/۲، الحديث: ۳۶۱۰

③ जंग

सब से पहले हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और आप के हमराहियों को ख़ारिजियों ने **مَعَادُ اللَّهِ** काफ़िर करार दिया और ख़लीफ़ए बरहक़ से बगावत की और अहले हक़ के साथ जिदाल व क़िताल किया हत्ता कि अब्दुरहमान बिन मुलजिम ख़ारिजी के हाथों हज़रते अली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم शहीद हुवे।⁽¹⁾

फ़ितनए ख़ारिजियत की ग़ैबी ख़बर

इसी बद बख़्त गुरौह के फ़ितनों की ख़बर ज़बाने रिसालत ने सर ज़मीने नज्द⁽²⁾ में ज़ाहिर होने के मुतअल्लिक़ दी है और फ़रमाया है : **هُنَاكَ الزَّلَازِلُ وَالْفِتَنُ وَبِهَا يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ** :⁽³⁾
(رواه البخارى ، مشكاة ، مطبوعه مجتبائی دهلّی ، ص ۵۸۲) (4)

चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पेशगोई के मुताबिक़ येह फ़ितना “नज्द” में बड़े ज़ोरो शोर से ज़ाहिर हुवा।

फ़ितनए ख़ारिजियत और उ-लमाए उम्मत

मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब ख़ारिजी ने सर ज़मीने नज्द में मुसलमानों को काफ़िर व मुशरिक कह कर सब को “मुबाहुद्दम”⁽⁵⁾ करार दिया और तौहीद की आड़ ले कर शाने नबुव्वत व विलायत में ख़ूब गुस्ताख़ियां कीं और अपने मज़हब व अक़ाइद की तरवीज के लिये “किताबुत्तौहीद” तस्नीफ़ की। जिस पर उसी ज़माने के उ-लमाए किराम ने सख़्त मुआख़ज़ा⁽⁶⁾ किया और इस के शर से

①.....تاريخ الخلفاء، فصل في مبايعة علي، ص ۱۳۸۰

② सऊदी अरब का मौजूदा शहर “रियाज़” ③ तर्जमा : वहां (नज्द में) ज़लज़ले और फ़ितने हैं और वहां से शैतानी गुरौह निकलेगा।

④ بخارى، کتاب الاستسقاء، باب ما قيل في زلازل، ۳۵۴/۱..... مشكاة، کتاب المناقب، باب نكرالين و الشام، ۴۵۹/۲، الحديث: ۱۲۷۱

⑤ जिस का क़त्ल जाइज़ हो ⑥ सख़्ती से रद्द किया

मुसलमानों को महफूज रखने के लिये सड़ये बलीग⁽¹⁾ फ़रमाई हत्ता कि मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब के हक्कीकी भाई “सुलैमान बिन अब्दुल वहहाब”⁽²⁾ ने अपने भाई पर सख़्त रद्द किया और उस की तरदीद में एक शानदार किताब तस्नीफ़ की जिस का नाम “الصَّوَاعِقُ الْإِلَهِيَّةُ فِي الرَّدِّ عَلَى الْوَهَابِيَّةِ”⁽³⁾ है और इस में वहाबियत को पूरी तरह बे नकाब कर के अहले सुन्नत के मजहब की ज़बरदस्त ताईद व हिमायत फ़रमाई ।

अल्लामा शामी हनफी,⁽⁴⁾ इमाम अहमद सावी मालिकी⁽⁵⁾ वगैरहुमा जलीलुल क़द्र उ-लमाए उम्मत ने मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब को बागी और ख़ारिजी क़रार दिया और मुसलमानों को इस फ़ितने से महफूज रखने के लिये अपनी जिद्द जहद में कोई दक्कीक़े फ़िरोगुजाश्त⁽⁶⁾ न किया । (मुलाहज़ा फ़रमाइये शामी, जिल्द 3, बाबुल बगात, सफ़हा 339 और तफ़्सीरे सावी जिल्द 3, सफ़हा 255, मतबूआ मिस्स)⁽⁷⁾

हिन्द में फ़ितनउ ख़ारिजियत और उ-लमाए उम्मत

फिर इसी “किताबुत्तौहीद” के मज़ामीन का खुलासा “तक्विथतुल ईमान” की सूरत में सर ज़मीने हिन्द में शाएअ हुवा और मौलवी इस्माईल देहल्वी ने अपने मुक्तदा मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब की पैरवी और जा नशीनी का ख़ूब हक़ अदा किया और इसी तक्विथतुल ईमान की तस्दीक़ व तौसीक़ तमाम उ-लमाए देवबन्द ने की । जैसा कि फ़तावा रशीदिय्या, जिल्द 1, स. 20 पर मरकूम है ।

① बहुत ज़ियादा कोशिश ② رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ③ तर्जमा : वहाबिय्या के रद्द में खुदाई

बिजली ④ मतवफ़फ़ 1252 हि. ⑤ मतवफ़फ़ 1241 हि. ⑥ कसर न छोड़ी

⑦رد المحتار، كتاب الجهاد، مطلب في اتباع عبد الوهاب الخوارج في زماننا، ١/٦٠٠.....تفسير الصاوي، ٢٢ سورة فاطر تحت الآية ٨، ٢/٧٨ مكتبة الفقيه

फिर जिस तरह मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब के खिलाफ उस ज़माने के उ-लमाए अहले सुन्नत ने आवाज़ उठाई और उस का रद्द किया इसी तरह मौलवी इस्माईल देहलवी मुसन्निफ़े तक्वियतुल ईमान के खिलाफ़ भी उस दौर के उ-लमाए हक़ ने शदीद एहतिजाज किया और उन के मस्लक पर सख़्त नुक्ताचीनी की।

तक्वियतुल ईमान उ-लमा की नज़र में

तक्वियतुल ईमान के रद्द में कई रिसाले शाएअ हुवे। मौलाना शाह फ़ज़ले इमाम हज़रत शाह अहमद सईद देहलवी शागिर्दे रशीद मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी⁽¹⁾ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मौलाना फ़ज़ले हक़ खैराबादी⁽²⁾ मौलाना इनायत अहमद काकोरवी मुसन्निफ़े इल्मुस्सीगा⁽³⁾ मौलाना शाह रऊफ़ अहमद नक्शबन्दी मुजद्दिदी तल्मीजे रशीद हज़रते मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने “मौलवी इस्माईल देहलवी” और मसाइले “तक्वियतुल ईमान” का मुख़्तलिफ़ तरीकों से रद्द फ़रमाया हत्ता कि “शाह रफ़ीउद्दीन साहिब मुहद्दिसे देहलवी” ने अपने फ़तावा में भी “किताबुत्तौहीद” और मसाइले “तक्वियतुल ईमान” के खिलाफ़ वाजेह और रोशन मसाइल तहरीर फ़रमा कर उम्मते मुस्लिमा को इस फ़ितने से बचाने की कोशिश की। लेकिन उ-लमाए देवबन्द और उन के बा'ज असातिज़ा ने मौलवी इस्माईल देहलवी और उन की किताब तक्वियतुल ईमान की तस्दीक़ व तौसीक़ कर के इस फ़ितने का दरवाज़ा मुसलमानों पर खोल दिया। उ-लमाए देवबन्द ने न सिर्फ़ तक्वियतुल ईमान और इस के मुसन्निफ़ मौलवी इस्माईल देहलवी की तस्दीक़ पर इक्तिफ़ा किया बल्कि खुद मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब की तार्ईद व तौसीक़ से भी दरेग़ न किया। मुलाहज़ा फ़रमाइये (फ़तावा रशीदिय्या

जिल्द 1 सफ़्हा 111 मुसन्निफ़्हू मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही)

① बिन शाह वलियुल्लाह देहलवी मुतवफ़्फ़ा 1239 हि. ② शहीदे जंगे आज़ादी 1857 ई. ③ मुतवफ़्फ़ा 1279 हि.

सच्चा कौन?

लेकिन चूंकि तमाम रूए ज़मीन के अहनाफ़ और अहले सुन्नत मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब के खारिजी और बागी होने पर मुत्तफ़िक् थे। इस लिये फ़तावा रशीदिय्या की वोह इबारत जिस में मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब की तौसीक की गई थी, उ-लमाए देवबन्द के मज़हब व मस्लक को अहले सुन्नत की नज़रों में मश्कूक करार देने लगी और अहले सुन्नत फ़तावा रशीदिय्या में मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब की तौसीक पढ़ कर येह समझने पर मजबूर हो गए कि उ-लमाए देवबन्द का मज़हब भी मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब से तअल्लुक रखता है। इस लिये मुतअख़िबरीन उ-लमाए देवबन्द ने अपने आप को छुपाने की गरज़ से मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब से अपनी ला तअल्लुकी का इज़हार करना शुरू कर दिया बल्कि मजबूरन उसे खारिजी भी लिख दिया⁽¹⁾ ताकि आम्मतुल मुस्लिमीन पर उन का मज़हब वाजेह न होने पाए।

लेकिन उ-लमाए अहले सुन्नत बराबर इस फ़ितने के ख़िलाफ़ नबर्द आजमा रहे।⁽²⁾ इन उ-लमाए हक़ में मज़कूरैने सद्र⁽³⁾ हज़रात के इलावा “हज़रते हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की”, हज़रते मौलाना अब्दुस्समीअ साहिब रामपूरी मुअल्लिफ़ अन्वारे सातिआ, हज़रते मौलाना इरशाद हुसैन साहिब रामपूरी, हज़रते मौलाना अहमद रज़ा ख़ां साहिब बरेलवी, हज़रते मौलाना अन्वारुल्लाह साहिब हैदराबादी, हज़रते मौलाना अब्दुल क़दीर साहिब बदायूनी वगैरहुम⁽⁴⁾ ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

इन उ-लमाए अहले सुन्नत का उम्मत मुस्लिमा पर अहसाने अज़ीम है कि इन हज़रात ने हक़ व बातिल में तमीज़ की और रसूलुल्लाह ﷺ की शाने अक़दस में तौहीन करने वाले ख़वारिज से मुसलमानों को आगाह किया। उन लोगों के साथ हमारा उसूली इख़िलाफ़⁽⁵⁾ सिर्फ़ उन इबारात की वजह से है

① अल मुहन्नद, स 19-20 ② मुक़बला करते रहे ③ वोह उ-लमाए अहले सुन्नत जिन का अभी ज़िक्र हुवा ④ رَحْمَهُمُ اللَّهُ الْبَرِّين ⑤ बुन्यादी इख़िलाफ़

जिन में उन लोगों ने **अब्बाह** तआला और रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** व महबूबाने हक़ **سُبْحَانَهُ وَتَعَالٰی** की शान में

सरीह⁽¹⁾ गुस्ताखियां की हैं। बाकी मसाइल में महज फ़रोई इख़्तिलाफ़⁽²⁾ है जिस की बिना पर जानिबैन⁽³⁾ में से किसी की तक्फ़ीर व तज़लील⁽⁴⁾ नहीं की जा सकती।

तअज्जुब है कि सरीह तौहीन आमेज़ इबारात लिखने के बा वुजूद येह कहा जाता है कि हम ने तो हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ता'रीफ़ की है। गोया तौहीने सरीह को ता'रीफ़ कह कर कुफ़्र को इस्लाम क़रार दिया जाता है। हम ने इस रिसाले में उ-लमाए देवबन्द और उन के मुक्तदाओं की इबारात बिला कमी व बेशी नक़ल कर दी हैं ताकि मुसलमान खुद फैसला कर लें कि इन में तौहीन है या नहीं...? उम्मीद है नाज़िरीने किराम हक़ व बातिल में तमीज़ कर के हमें दुआए ख़ैर से फ़रामोश न फ़रमाएंगे।

सबबे तालीफ़

इस में शक नहीं कि इस मौजूअ पर इस से पहले बहुत कुछ लिखा जा चुका है लेकिन बा'ज़ किताबें इतनी तवील हैं कि इन्हें अव्वल से आख़िर तक पढ़ना हर एक के लिये आसान नहीं और बा'ज़ इतनी मुख़्तसर हैं कि उ-लमाए देवबन्द की अस्ल इबारात के बजाए उन के मुख़्तसर खुलासों पर इक्तिफ़ा कर लिया गया। जिस की वजह से भी बा'ज़ लोग शुक्क व शुब्हात में मुब्तला होने लगे। इस लिये ज़रूरी मा'लूम हुवा कि इस मौजूअ पर ऐसा रिसाला लिखा जाए जो इस ततवील व इख़्तिसार⁽⁵⁾ से पाक हो।

① वाजेह ② जैसे फ़िक्ए हनफी, शाफ़ेई वगैरा का बाहमी इख़्तिलाफ़ है।

③ दोनों तरफ़ से ④ ला'न ता'न करना या काफ़िर कहना ⑤ न बहुत ज़ियादा तवील न बहुत ज़ियादा मुख़्तसर

जर्नरी गुजरिश

अभी गुजरिश की जा चुकी है कि देवबन्दी हज़रात और अहले सुन्नत के दरमियान बुन्यादी इख़िलाफ़ का मूजिब उ-लमाए देवबन्द की सिर्फ़ वोह इबारात हैं जिन में **अब्बाह** तअ़ाला और नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की शाने अक्दस में खुली तौहीन की गई है। उ-लमाए देवबन्द कहते हैं कि इन इबारात में तौहीन व तन्कीस का शाइबा तक नहीं पाया जाता और उ-लमाए अहले सुन्नत का फ़ैसला येह है कि इन में साफ़ तौहीन पाई जाती है।

इस रिसाले में उ-लमाए देवबन्द की वोह अस्ल इबारात बि लफ़िज़हा मअ हवाला कुतुब व सफ़हा व मतबअ⁽¹⁾ पूरी एह्तियात के साथ नक्ल कर दी गई हैं अपनी तरफ़ से इन में किसी किस्म की बहस व तमहीस नहीं की गई।

अलबत्ता इन मुख़लिफ़ इबारात पर मुतअ़िद्दि उनवानात महज़ सहूलते नाज़िरीन और तनव्वुअ़ फ़िल कलाम⁽²⁾ की गरज़ से काइम कर दिये गए हैं और फ़ैसला नाज़िरीने किराम पर छोड़ दिया गया है कि बिला तशरीह़ इन इबारात को पढ़ कर इन्साफ़ करें कि इन इबारतों में **अब्बाह** तअ़ाला और उस के रसूलों की तौहीन व तन्कीस है या नहीं?

इस के साथ ही हर उनवान और इबारत के तहत अपना मस्लक भी वाज़ेह़ कर दिया गया है ताकि नाज़िरीने किराम को उ-लमाए देवबन्द और अहले सुन्नत के मस्लक का तफ़सीली इल्म हो जाए और हक़ व बातिल में किसी किस्म का इल्तिबास बाकी न रहे।

① उ-लमाए देवबन्द की इबारात के अस्ल अल्फ़ाज़, किताब का नाम, सफ़हा नम्बर और छापने वाले मक्तबे का नाम, सब बहुत एह्तियात से लिखा गया है। ② कलाम को मुख़लिफ़ अन्दाज़ में लाना

कुरआने करीम और ता'जीमे रसूल ﷺ

इस हकीकत से इन्कार नहीं हो सकता कि तमाम दीन हमें हुज़ूर ﷺ की ज़ाते अक्दस से मिला है इत्ता कि **अल्लाह** तअला की ज़ात व सिफ़ात, उस के मलाइका, उस की किताबों और रसूलों और यौमे क़ियामत वगैरा अक़ाइदो आ'माल सब चीज़ों का इल्म रसूलुल्लाह ﷺ ने हम को अता फ़रमाया। इस लिये सारे दीन की बुन्याद और अस्लुल उसूल⁽¹⁾ नबिय्ये करीम ﷺ की ज़ाते मुक़द्दसा है और बस....बिनाबरीं रसूले करीम ﷺ की हैसियत ऐसी अज़ीम है जिस के वज़्न को मोमिन का दिलो दिमाग़ महसूस करता है। मगर कमाहक्कुहु⁽²⁾ इस का इज़हार किसी सूरत से मुमकिन नहीं।

ऐसी सूरत में ता'जीमे रसूल की अहम्मियत किसी मुसलमान से मख़फ़ी नहीं रह सकती। इसी लिये **अल्लाह** तअला ने कुरआने करीम में निहायत एहतिमाम के साथ मुसलमानों को बारगाहे रिसालत के आदाब की ता'लीम फ़रमाई।

पहली आयते मुबारक

इरशाद होता है :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ

بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ﴾ (प २६, الحجرات: الآية २)

(ऐ ईमान वालो ! बुलन्द न करो अपनी आवाज़ें नबिय्ये करीम ﷺ की आवाज़ पर और न इन के साथ बहुत जोर से बात करो जैसे तुम एक दूसरे से आपस में जोर से बोला करते हो कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा किया कराया सब अकारत जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो।)

① खुलासा, लुब्बे लुबाब ② जैसा उस का हक़ है।

दूसरी आयते मुबारक

इस के साथ ही दूसरी आयत में इरशाद होता है :

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ﴾ (1)

(बेशक जो लोग अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के नज़दीक वोह ऐसे लोग हैं जिन के दिल को **अल्लाह** तआला ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है। उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।)

तीसरी आयते मुबारक

और तीसरी आयत में इरशाद फ़रमाया :

﴿إِنَّ الَّذِينَ ينادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ (2)

(ऐ नबी **صلّى الله تعالى عليه وآله وسلّم** बेशक जो लोग आप को आप के रहने के हुजरो से बाहर पुकारते हैं इन में अकसर बे अक्ल हैं अगर येह लोग इतना सब्र करते कि आप खुद हुजरो से निकल कर इन की तरफ़ तशरीफ़ ले आते तो इन के हक़ में बहुत बेहतर होता और **अल्लाह** तआला बख़्शने वाला मेहरबान है।)

चौथी आयते मुबारक

चौथी जगह इरशाद फ़रमाया :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمِعُوا وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ (3) (प १, बقرة)

2..... २६ प २, سورة الحجرات, الآية २, ५

1..... २६ प २, سورة الحجرات, الآية ३

3..... १ प १, سورة البقرة, الآية २, १०

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (ऐ ईमान वालो ! तुम नबिय्ये करीम

के साथ رَاعِنًا कह कर ख़िताब न किया करो बल्कि اَنْظُرًا कहा करो और ध्यान लगा कर सुनते रहा करो और काफ़िरों के लिये अज़ाबे दर्दनाक है)

इन आयाते तय्यिबात में बारगाहे रिसालत के आदाब और तर्जे तखातुब में ता'ज़ीम व तौकीर को मल्हूज़ रखने की जो हिदायात **अल्लाह** तआला ने फ़रमाई हैं, मोहताजे तशरीह नहीं। नीज़ इन की रोशनी में शाने नबुव्वत की अदना गुस्ताख़ी का जुमें अज़ीम होना आफ़ताब से ज़ियादा रोशन है। इस के बा'द इस मस्अले को उ-लमाए उम्मत की तस्रीहात में मुलाहज़ा फ़रमाइये।

तमाम उ-लमाए उम्मत के नज़दीक २२ लुल्लाह

की शाने अक्दस में तौहीन कुफ़्र है

शर्हे शिफ़ा काज़ी इयाज़⁽¹⁾ लिमुल्ला अलिल का़री⁽²⁾ जि. 2 स. 393 पर है :

”قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ سَحْنُونٍ أَجْمَعَ الْعُلَمَاءُ عَلَى أَنَّ شَاتِمَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْمُسْتَفْضَى لَهُ كَافِرٌ وَمَنْ شَكَّ فِي كُفْرِهِ وَعَذَابُهُ كَفَرٌ.“⁽³⁾

(اَكْفَاؤُ الْمُتَلَحِّجِينَ، مؤلفه مولوی النورشاہ صاحب کشمیری دیوبندی، صفحہ ۵)

“मुहम्मद बिन सहनून फ़रमाते हैं कि तमाम उ-लमाए उम्मत का इस बात पर इजमाअ है कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की शाने अक्दस में तौहीन व तन्कीस करने वाला काफ़िर है और जो शख़्स इस के कुफ़्र व अज़ाब में शक़ करे वोह भी काफ़िर है।”

① मुतवफ़्फ़ा 544 हि. ② मुतवफ़्फ़ा 1014 हि.

③..... الشفا للقاضي عياض، الباب الاول في سبه، حصه ۲ / ۲۱۰، مركز اهلسنت بركات رضا

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

एक शुबे का इज़ाला

इस मक़ाम पर शुबा वारिद किया जाता है कि अगर किसी मुसलमान के कलाम में निनानवे⁹⁹ वजह कुफ़्र की हों और एक वजह इस्लाम की हो तो फुक़हा का कौल है कि कुफ़्र का फ़तवा नहीं दिया जाएगा। इस का इज़ाला यह है कि कौल इस तक़दीर पर है कि किसी मुसलमान के कलाम में निनानवे⁹⁹ वजूहे कुफ़्र का सिर्फ़ एहतिमाल हो कुफ़्रे सरीह⁽¹⁾ न हो लेकिन जो कलाम मफ़हूमे तौहीन में सरीह हो उस में किसी वजह को मलहूज़ रख कर तावील करना जाइज़ नहीं इस लिये कि लफ़्ज़े सरीह में तावील नहीं हो सकती।

देखिये “इक्फ़ारुल मुल्हिदीन” के स.72 पर उ-लमाए देवबन्द के मुक़तदा मौलवी अन्वर शाह साहिब कश्मीरी लिखते हैं :

(2) “قَالَ حَبِيبُ بْنُ رَبِيعٍ إِنَّ ادِّعَاءَ التَّائِيلِ فِي لَفْظِ صُرَاحٍ لَا يُقْبَلُ”

हबीब इब्ने रबीअ ने फ़रमाया कि लफ़्ज़े सरीह में तावील का दा'वा क़बूल नहीं किया जाता और अगर बा वुजूदे सराहत⁽³⁾ तावील की गई तो वोह तावील फ़सिद होगी और तावीले फ़सिद खुद ब मन्ज़ला कुफ़्र⁽⁴⁾ है।

मुलाहज़ा फ़रमाइये येही मौलवी अन्वर शाह साहिब देवबन्दी “इक्फ़ारुल मुल्हिदीन” के सफ़हा 62 पर लिखते हैं।

التَّائِيلُ الْفَاسِدُ كَالْكُفْرِ तावीले फ़सिद कुफ़्र की तरह है।

1 वाजेह कुफ़्र न हो

2.....الشفّا للقاضى عياض، الباب الاول فى سبه، حصه ٢/ ٢١٧، مركز اهل سنت بركات رضا

3 वाजेह कुफ़्रिया कलिमा होने के बा वुजूद

4 सरीह कलिमाए कुफ़्रिया को सहीह साबित करने के लिये तावील करना खुद कुफ़्र के दरजे में है।

एक और ए'तिराज़ का जवाब

हदीस शरीफ़ में आया है। ⁽¹⁾ **يَا'نِي** अमलों का दारो मदार **निय्यतों** पर है। लिहाज़ा उ-लमाए देवबन्द की इबारतों में अगर्चे कलिमाते तौहीन पाए जाते हैं मगर उन की निय्यत तौहीन और तन्कीस की नहीं। इस लिये उन पर हुक्मे कुफ़्र अइद नहीं हो सकता।

इस के जवाब में गुज़ारिश है कि हदीस का मफ़ाद सिर्फ़ इतना है कि किसी नेक अमल का सवाब निय्यते सवाब के बिगैर नहीं मिलता। येह मतलब नहीं कि हर अमल में निय्यत मो'तबर है। अगर ऐसा हो तो कुफ़्र व इल्हाद और तौहीन व तन्कीसे नबुव्वत का दरवाज़ा खुल जाएगा। हर दरीदा दहन ⁽²⁾ बे बाक जो चाहेगा कहता फ़िरेगा, जब गिरिफ़्त होगी तो साफ़ कह देगा कि मेरी निय्यत तौहीन की न थी, वाजेह रहे कि लफ़्जे सरीह में जैसे तावील नहीं हो सकती ऐसे ही निय्यत का उज़्र भी इस में क़बिले क़बूल नहीं होता।

इक्फ़ारुल मुल्हिदीन, सफ़हा 73 पर मौलवी अन्वर शाह साहिब कश्मीरी देवबन्दी लिखते हैं।

“الْمَدَارُ فِي الْحُكْمِ بِالْكَفْرِ عَلَى الظَّوَاهِرِ وَلَا نَظَرَ لِلْمَقْصُودِ وَالْيَتَاتِ وَلَا نَظَرَ لِقَرَائِنِ حَالِهِ”

(कुफ़्र के हुक्म का दारो मदार ज़ाहिर पर है। क़स्द व निय्यत और क़राइने हाल पर नहीं।) ⁽³⁾ नीज़ इसी “इक्फ़ारुल मुल्हिदीन” के सफ़हा 86 पर है।

“وَقَدْ ذَكَرَ الْعُلَمَاءُ أَنَّ التَّهْوَرَ فِي عَرْضِ الْأَنْبِيَاءِ وَإِنْ لَمْ يَقْصِدِ السَّبَّ كُفْرٌ”

(उ-लमा ने फ़रमाया है कि अम्बिया **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की शान में ज़ुरअत व दिलेरी कुफ़्र है अगर्चे तौहीन मक्सूद न हो।)

①..... صحيح البخارى، كتاب بدء الوحي، باب كيف كان بدء الوحي الى رسول الله، ٥١/١، الحديث:

② बद ज़बान ③ या'नी कुफ़्र का हुक्म लगाते वक़्त ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ व अफ़आल का ए'तिबार होता है, अगर वोह वाजेह कुफ़्र पर मबनी हुवे तो अब हुक्मे कुफ़्र लगाएंगे अगर्चे कहने वाला निय्यत व इरादा अच्छा होना बयान करे।

तौहीन का तअल्लुक उर्फ़ आम और मुहावरात अहले ज़बान से होता है

बा'ज लोग कलिमाते तौहीन के मा'ना में किस्म किस्म की तावीलें करते हैं लेकिन येह नहीं समझते कि अगर किसी तावील से मा'ना मुस्तक़ीम⁽¹⁾ भी हो जाएं और इस के बा वुजूद उर्फ़ आम व मुहावरात अहले ज़बान⁽²⁾ में उस कलिमे से तौहीन के मा'ना मफ़हूम होते हों तो वोह सब तावीलात बेकार होंगी। मसलन एक शख्स अपने वालिद या उस्ताद को कहता है आप बड़े “वलदुल हराम” हैं और तावील येह करता है कि लफ़्जे हराम के मा'ना फे'ले हराम नहीं बल्कि मोहतरम के हैं जैसे “अल मस्जिदुल हराम” और “बैतुल्लाहिल हराम” लिहाज़ा वलदुल हराम से मुराद वलदे मोहतरम है और मा'ना येह है कि आप बड़े मोहतरम हैं तो यकीनन कोई अहले इन्साफ़ किसी बुजुर्ग के हक़ में इस तावील की रू से लफ़्जे वलदुल हराम बोलने को क़तअन जाइज़ नहीं कहेगा और इन कलिमात को बर बिनाए उर्फ़ व मुहावराते अहले ज़बान कलिमाते तौहीन ही क़रार देगा।

लिहाज़ा हम नाज़िरीने किराम से दरख़्वास्त करेंगे कि वोह उ-लमाए देवबन्द की तौहीन आमेज़ इबारात⁽³⁾ पढ़ते वक़्त इस उसूल को पेशे नज़र रखते हुवे येह देखें कि उर्फ़ व मुहावरात के ए'तिबार से इस इबारात में तौहीन है या नहीं।

① मा'ना दुरुस्त ② लोगों के सोचने समझने या बोल चाल में

③ जो इसी किताब में मअ हवाला अगले सफ़हात में तहरीर की जाएंगी

तौहीने रसूलुल्लाह ﷺ में काइल की नियत का ए'तिबार नहीं होता

नाज़िरीने किराम की खिदमत में गुज़ारिश है कि वोह तौहीनी इबारात पढ़ते हुवे येह खयाल भी दिल में न लाएं कि काइल की नियत तौहीन की है या नहीं ?

इस लिये कि रसूलुल्लाह ﷺ की शान में तौहीन आमेज़ अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त नियत का ए'तिबार नहीं होता और कलिमए तौहीन बहर सूरत तौहीन ही क़रार पाता है बशर्त येह कि काइल को येह इल्म हो जाए कि येह कलिमा कलिमए तौहीन है या येह कलिमए तौहीन का सबब हो सकता है तो ऐसी सूरत में बिगैर नियते तौहीन के भी इस कलिमे का बोलना यकीनन मूजिबे तौहीन होगा ।

“राइना” कहने से मुमानअत

देखिये सहाबए किराम رَضَوَان रसूलुल्लाह ﷺ को ब नियते ता'ज़ीम “राइना” कह कर ख़िताब किया करते थे लेकिन यहूदी चूँकि इस कलिमे को हुज़ूर के हक़ में ब नियते तौहीन इस्ति'माल करते थे या अदना तसररुफ़ से इस को कलिमए तौहीन बना लेते थे । इस लिये **अल्लाह** तआला ने सहाबए किराम को “राइना” कहने से मन्अ कर दिया⁽¹⁾ और इस हुक्म के बा'द इस कलिमे का हुज़ूर के हक़ में बोलना तौहीन और मूजिबे अज़ाबे अलीम क़रार दे दिया । मा'लूम हुवा कि अबनाए ज़माना⁽²⁾ की रकीक⁽³⁾ तावीलों से साख़ते नबुव्वत बहुत बुलन्दो बाला है और मुअव्विलीन⁽⁴⁾ की मन घड़त तावीलात उन को तौहीन के जुर्म अज़ीम से बचा नहीं सकतीं । जैसा कि हम इस से पहले मौलवी अनवर शाह कश्मीरी देवबन्दी की

- ① ऐ ईमान वालो ! राइना न कहो और यूं अर्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ैर सुनो और काफ़ि़रों केलिये दर्दनाक अज़ाब है (البقرة: १०६) ② या'नी उ-लमाए देवबन्द ③ घटया ④ तावील करने वालों (उ-लमाए देवबन्द)

तसरीहात इसी ए'तिराज के जवाब में नक़ल कर चुके हैं।⁽¹⁾

तौहीन का दावे मदार वाक़ेइयत पर नहीं होता

बा'ज लोग तौहीन को वाक़ेइयत पर मौकूफ़ समझते हैं⁽²⁾ हालांकि तौहीन व तन्कीस का तअल्लुक अल्फ़ाज व इबारात से होता है। बसा अवकात किसी वाक़िए को इजमाल के साथ कहना मूजिबे तौहीन नहीं होता लेकिन इसी अग्रे वाक़िआ में बा'ज तफ़्सीलात का आ जाना तौहीन का सबब हो जाता है अगर्चे इन तफ़्सीलात का बयान वाक़िए के मुताबिक़ भी क्यूं न हो। मुलाहज़ा फ़रमाइये शर्हे फ़िक़हे अक्बर मतबूआ मुजतबाई, सफ़हा 64, बारे सिवुम 1907 ई. में है।

“आलम में कोई शै ऐसी नहीं जिस के साथ इरादए इलाहिyyा मुतअल्लिक़ न हो और इस बिना पर अगर येह कह दिया जाए कि तमाम काइनात **अल्लाह** तआला की मुराद (या'नी इरादा की हुई) है तो इस में कोई तौहीन नहीं लेकिन अगर इसी वाक़िए को इस तफ़्सील से कहा जाए कि जुल्म, चोरी, शराब ख़ोरी **अल्लाह** तआला की मुराद है तो अगर्चे येह कलाम वाक़िए के मुताबिक़ है लेकिन जुल्म, फ़िस्क़ वग़ैरा की तफ़्सीलात आ जाने के बाइस ख़िलाफ़े अदब और तौहीन आमेज़ होगा इसी तरह ब दलीले आयए कुरआनिyyा **اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ** येह कहना बिल्कुल जाइज़ है कि **अल्लाह** तआला हर शै का ख़ालिक़ है लेकिन **اللّٰهُ خَالِقُ الْفَاوْزَاتِ وَغَيْرِهَا** (**अल्लाह** गन्दगियों और दूसरी बुरी चीज़ों को पैदा करने वाला है) कहना जाइज़ नहीं कि ज़लील और रज़ील अश्या की तफ़्सील ईहामे कुफ़्र⁽³⁾ की वजह से यकीनन मूजिबे तौहीन है।” (मुलख़ख़सन)⁽⁴⁾

① मुलाहज़ा फ़रमाइये सफ़हा 15 ता 17

② या'नी वोह लोग येह समझते हैं कि बयान कर्दा शै अगर हकीक़त में मौजूद है तो इस के बयान करने में कोई तौहीन नहीं जैसे “**अल्लाह** तआला सुवर का ख़ालिक़ है”

③ कुफ़्र का शुबा डालने की वजह से

④ شرح فقه الاكبر، ص ١٤١، دار البشائر الاسلاميه، مفهوماً

मुल्ला अली क़ारी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इस बयान की रोशनी में हमारे नाज़िरीने किराम पर मौलवी अशरफ़ अली साहिब थानवी की इबारते हिफ़ज़ुल ईमान⁽¹⁾ का तौहीन आमेज़ होना ब ख़ूबी वाज़ेह हो गया होगा और थानवी साहिब ने अपनी इबारत की ताईद के लिये शर्हें मवाकिफ़ की इबारत से इस्तिदलाल किया है, इस का बेसूद होना भी अहले इल्म ने अच्छी तरह समझ लिया होगा। जिस का खुलासा येह है कि अगर बिलफ़र्ज़ येह तस्लीम भी कर लिया जाए कि बा'ज़ इल्मे ग़ैब हैवानात, बहाइम और पागलों को होता है तब भी मौलवी अशरफ़ अली साहिब थानवी की तरह येह कहना कि अगर हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये बा'ज़ इल्मे ग़ैब माना जाए तो ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ेद व अम्र बल्कि हर सबी⁽²⁾ व मजनून⁽³⁾ बल्कि जमीअ हैवानात व बहाइम⁽⁴⁾ के लिये भी हासिल है, यकीनन हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हक़ में मूजिबे तौहीन होगा।

क्यूंकि इस इबारत में बच्चों, पागलों, हैवानात और बहाइम के अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जिन की तसरीह हर अहले फ़हम के नज़दीक इस कलाम में ऐसी सरीह तौहीन पैदा कर रही है जिस का इन्कार बजुज़ मुआनिद मुतअस्सिफ़⁽⁵⁾ के कोई शख़्स नहीं कर सकता। ब ख़िलाफ़ इबारते शर्हें मुवाकिफ़ के कि इस में बच्चों, पागलों, जानवरों और हैवानों की क़तअन कोई तफ़्सील मज़कूर नहीं और हकीक़त येह है कि

① “फिर येह कि आप की ज़ाते मुक़द्दसा पर इल्मे ग़ैब का हुक्म किया जाना अगर ब क़ौले ज़ैद सहीह हो तो दरयाफ़्त त़लब येह अम्र है कि इस ग़ैब से मुराद बा'ज़ ग़ैब है या कुल ग़ैब, अगर बा'ज़ इल्मे ग़ैबिय्या मुराद हैं तो इस में हुज़ूर ही की क्या तख़्सीस है। ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ैद व अम्र बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमीअ हैवानात व बहाइम के लिये भी हासिल है।”.....अस्ल किताब

की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं।

② बच्चा ③ पागल ④ चोपाए ⑤ इनाद रखने वाले रन्जीदा शख़्स के

उ-लमाए देवबन्द की अकसर इबारात इसी नौइय्यत की हैं कि इन में कहीं चोहड़े चमार⁽¹⁾ की तफ्सील मजकूर है, कहीं शैताने लईन की।⁽²⁾

इस लिये हमारे मन्कूला बाला बयान की रोशनी में उ-लमाए देवबन्द की ऐसी तमाम इबारात का तौहीन आमेज होना रोजे रोशन की तरह ज़ाहिर है और इन में जो तावीलात की जाती हैं इन सब का लगव व बेकार होना अजहर मिनशमस⁽³⁾ है।

उ-लमाए अहले सुन्नत पर तक्फ़ीर के इल्ज़ाम का जवाब

उ-लमाए अहले सुन्नत पर येह इल्ज़ाम लगाया जाता है कि इन्हों ने उ-लमाए देवबन्द को काफ़िर कहा। राफ़िज़ियों, नेचरियों, वहाबियों, बहायों हत्ता कि नदवियों, कौंग्रेसियों, लैगियों बल्कि तमाम मुसलमानों को काफ़िर करार दिया। गोया बरेली में कुफ़्र की मशीन लगी हुई है जिस के निशाने से कोई मुसलमान नहीं बच सका। इस के जवाब में बजुज इस के क्या कहा जाए कि⁽⁴⁾ سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ सो किसी मुसलमान को काफ़िर कहना मुसलमान की शान नहीं।

हमारा अक्कीदा है कि मुसलमान को काफ़िर कहने का वबाल काफ़िर कहने वाले पर अ़ाइद होता है। मैं पूरे वसूक से कह सकता हूँ कि उ-लमाए बरेली या इन के हम ख़याल किसी अ़ालिम ने आज तक किसी मुसलमान को काफ़िर नहीं कहा।

① तक्वियतुल ईमान के स. 8 पर तहरीर है : “और येह यक्नीन जान लेना चाहिये कि हर मख़्लूक बड़ा हो या छोटा **अल्लाह** की शान के आगे चमार से भी ज़लील है।” ② बराहिने क़ातिअ सफ़हा 51 पर है : “अल हासिल ग़ौर करना चाहिये कि शैतान व मलकुल मौत का हाल देख कर इल्मे मुहीत ज़मीन का फ़ख़्रे अ़ालम को ख़िलाफ़ नुसूसे क़तइय्या के बिला दलील महज़ क़ियासे फ़ासिदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है शैतान व मलकुल मौत को येह वुस्अत नस्स से साबित हुई, फ़ख़्रे अ़ालम की वुस्अते इल्म की कौन सी नस्से क़तई है जिस से तमाम नुसूस को रद्द कर... अस्ल

किताब की इबारात बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं। ③ सूरज से ज़ियादा रोशन है। ④ इलाही पाकी है तुझे येह बहुत बड़ा बोहतान है

आ'ला हज़रत और तक्फ़ीरे मुस्लिमीन

खुसूसन आ'ला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खां साहिब बरेलवी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तो मस्लाए तक्फ़ीर⁽¹⁾ में इस क़दर मोहतात वाकेअ हुवे थे कि इमामुत्ताइफ़ा मौलवी इस्माईल साहिब देहलवी के ब कसरत अक्वाले कुफ़्रिया नक्ल करने के बा वुजूद लुज़ूम व इल्तिज़ामे कुफ़्र⁽²⁾ के फ़र्क़ को मल्हूज़ रखने या इमामुत्ताइफ़ा

① कुफ़्र का फ़तवा लगाने में ② लुज़ूमे कुफ़्र के मा'ना हैं : “कुफ़्र का लाज़िम होना” और इल्तिज़ामे कुफ़्र के मा'ना हैं : “कुफ़्र को अपने ऊपर लाज़िम करना।” बा'ज़ अवकात एक कलाम कुफ़्र को लाज़िम होता है मगर काइल को इस का इल्म नहीं होता। येह लुज़ूमे कुफ़्र है या'नी काइल को काफ़िर न कहेंगे मगर जब उसे बता दिया जाए कि तेरे इस कलाम को कुफ़्र लाज़िम है और वोह इस के बा वुजूद भी इस पर अड़ा रहे और अपने कलाम में लुज़ूमे कुफ़्र के पाए जाने पर ख़बरदार होने के बा वुजूद भी इस से रुजूअ न करे तो इल्तिज़ामे कुफ़्र होगा या'नी अब काइल पर कुफ़्र का हुक्म लगेगा। मिसाल के तौर पर तक्वियतुल ईमान की वोह इबारत सामने रख लीजिये जिस में मौलवी इस्माईल साहिब देहलवी ने हर छोटी बड़ी मख़्लूक को **अब्बाह** की शान के आगे चोहडे चमार से ज़ियादा ज़लील कहा है। ज़ाहिर है कि छोटी मख़्लूक से आम मख़्लूक और बड़ी मख़्लूक से ख़ास मख़्लूक अम्बिया व मलाइकए मुकर्रबीन, महबूबाने बारगाहे इज़्दी के मा'ना बिला तअम्मुल समझ में आते हैं और तमाम बड़ी मख़्लूक का चोहडे चमार से ज़ियादा ज़लील होना लाज़िम आता है। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को इस तरह कहना कुफ़्रे सरीह है लेकिन अगर हम हुस्ने ज़न से काम ले कर येह समझ लें कि इमामुत्ताइफ़ा इस्माईल देहलवी साहिब इस से बे ख़बर थे तो येह लुज़ूमे कुफ़्र होगा और जब इन्हें ख़बरदार कर दिया जाए कि तुम्हारा येह कलाम कुफ़्र पर मुश्तमिल है मगर वोह इस के बा वुजूद भी अपने इस कौल से रुजूअ न करें तो येह इल्तिज़ामे कुफ़्र होगा। इमामुत्ताइफ़ा के मुतअल्लिक तो थोड़ी देर के लिये हम येह तस्लीम भी कर सकते हैं कि वोह इस लुज़ूमे कुफ़्र से गाफ़िल थे और उन्हें किसी ने मुतनब्बेह भी नहीं किया। इस लिये येह लुज़ूमे इल्तिज़ाम की हद तक नहीं पहुंचा लेकिन उन के पैरूकार व मो'तकिदीन बार बार तम्बीह किये जाने के बा वुजूद भी इस इबारत को सहीह़ क़रार देते हैं। इन के हक़ में कैसे कहा जाए कि वोह इल्तिज़ामे कुफ़्र से बरी हैं।

की तौबा मशहूर होने के बाइस अज़ राहे एहतियात मौलवी इस्माईल देहलवी साहिब की तक्फ़ीर से कफ़े लिसान⁽¹⁾ फ़रमाया ।

अगर्चे वोह शोहरत इस वजह की न थी कि कफ़े लिसान का मूजिब हो सके लेकिन आ'ला हज़रत ने एहतियात का दामन हाथ से न छोड़ा । मुलाहज़ा फ़रमाइये : (अल कौकबतुश्शहाबियह, मतबूआ अहले सुन्नत व जमाअत बरेली सफ़हा 62)⁽²⁾

हैरत है ऐसे मोहतात अ़लिमे दीन पर तक्फ़ीरे मुस्लिमीन का इल्ज़ाम आइद किया जाता है ।⁽³⁾ بَسُوْخُتْ عَقْلُ رَحِيْرَتْ كَهْ اِيْنِ جِهْ بَوَالْعَجَبِيْ اَسْتُ

तक्फ़ीर का इल्ज़ाम देने की वजह

दर अस्ल इस प्रोपगन्डे का पस मन्ज़र येह है कि जिन लोगों ने बारगाहे नबुव्वत में सरीह गुस्ताख़ियां कीं उन्होंने ने अपनी सियाह कारियों पर निकाब डालने के लिये आ'ला हज़रत और इन के हम ख़याल उ-लमा को तक्फ़ीरे मुस्लिमीन का मुजरिम क़ारार दे कर बदनाम करना शुरू कर दिया ताकि अ़वाम की तवज्जोह हमारी गुस्ताख़ियों से हट कर आ'ला हज़रत की तक्फ़ीर की तरफ़ मबज़ूल हो जाए और हमारे मक़्ासिद की राह में कोई चीज़ हाइल न होने पाए लेकिन बा ख़बर लोग पहले भी ख़बरदार थे और अब भी वोह इस हकीक़त से बे ख़बर नहीं ।

हमारा मस्लक

मस्लए तक्फ़ीर में हमारा मस्लक⁽⁴⁾ हमेशा से येही रहा है कि जो शख़्स भी कलिमए कुफ़्र बोल कर अपने कौल या फ़े'ल से

① कुफ़्र का फ़तवा नहीं लगाया ② मुलाहज़ा फ़रमाइये “फ़तावा रज्विय्या, जि. 15, स. 236, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर” ③ अक्ल हैरत से जल गई कि येह क्या बे वुकूफी है ④ तरीक़ा, नुक्ताए नज़र

इल्तिज़ामे कुफ़र कर लेगा तो हम इस की तक्फ़ीर में तअम्मुल⁽¹⁾ नहीं करेंगे। ख़्वाह वोह देवबन्दी हो या बरेलवी, लैगी हो या कौंगरेसी, नेचरी हो या नदवी। इस बारे में अपने पराए का इम्तियाज़ करना अहले हक़ का शैवा नहीं। इस का मतलब येह नहीं कि एक लैगी ने कलिमए कुफ़र बोला तो सारी लैग काफ़िर हो गई या एक नदवी ने एक इल्तिज़ामे कुफ़र किया तो **مَعَادُ اللَّهِ** सारे नदवी मुर्तद हो गए। हम तो बा'जू देवबन्दियों की इबाराते कुफ़रिया की बिना पर हर साकिने देवबन्द⁽²⁾ को भी काफ़िर नहीं कहते चे जाइका तमाम लैगी और सारे नदवी काफ़िर हों।

हम और हमारे अकाबिर ने बारहा ऐ 'लान किया है कि हम किसी देवबन्द या लखनऊ वाले को काफ़िर नहीं कहते। हमारे नज़दीक सिर्फ़ वोही लोग काफ़िर हैं जिन्हों ने **مَعَادُ اللَّهِ** **अल्लाह** तआला और उस के रसूल व महबूबाने ईजदी की शान में सरीह गुस्ताखियां कीं और बा वुजूदे तम्बीहए शदीद के उन्हों ने अपनी गुस्ताखियों से तौबा नहीं की नीज़ वोह लोग जो उन की गुस्ताखियों को हक़ समझते हैं और गुस्ताखियां करने वालों को मोमिन, अहले हक़ अपना मुक़्तदा और पेशवा मानते हैं और बस... इन के इलावा हम ने किसी मुद्इये इस्लाम की तक्फ़ीर नहीं की।

ऐसे लोग जिन की हम ने तक्फ़ीर की है अगर उन को टटोला जाए तो वोह बहुत क़लील और महदूद अफ़राद हैं⁽³⁾ इन के इलावा न कोई देवबन्द का रहने वाला काफ़िर है न बरेली का, न लैगी न नदवी हम सब **मुसलमान** को **मुसलमान** समझते हैं।

① वक्फ़ा, शको शुबा ② देवबन्द के रहने वाले को ③ जैसे आ'ला हज़रत ने

अपने रिसाले “हुसामुल हरमैन” में कुफ़रिया इबारात की बिना पर मिरज़ा गुलाम अहमद कादयानी समेत फ़क़त् पांच की तक्फ़ीर की है।

मुफ़्तियाने देवबन्द श्री अपने अक्बिरे उ-लमाए देवबन्द की

इबाराते मुतनाजेआ के इबाराते कुफ़्रिया शमझते हैं

अरबो अजम के उ-लमाए अहले सुन्नत ने जो उ-लमाए देवबन्द की तौहीन आमेज़ इबारात पर तक्फ़ीर फ़रमाई अगर आप सच पूछें तो मुफ़्तियाने देवबन्द के नज़दीक भी वोह तक्फ़ीर हक़ है और उ-लमाए देवबन्द अच्छी तरह जानते हैं कि इन इबारात में कुफ़्र सरीह मौजूद है लेकिन महज़ इस लिये कि वोह इन के अपने मुक्तदाओं और पेशवाओं की इबारात हैं, तक्फ़ीर नहीं करते और अगर मुफ़्तियाने देवबन्द से उन ही के पेशवाओं की किसी ऐसी इबारात को लिख कर फ़तवा तलब किया जाए जिस के मुतअल्लिक उन्हें येह इल्म न हो कि येह हमारे बड़ों की इबारात है तो वोह इस इबारात के लिखने वाले पर बे धड़क कुफ़्र का फ़तवा सादिर फ़रमा देते हैं। फिर जब उन्हें बता दिया जाए कि जिस इबारात पर आप ने कुफ़्र का फ़तवा दिया येह आप के फुलां देवबन्दी मुक्तदा का कौल है तो फिर बजुज़ ज़िल्लत आमेज़ सुकूत⁽¹⁾ के कोई जवाब नहीं बन पड़ता। इस की बहुत सी मिसालें पेश की जा सकती हैं। सरे दस्त हम एक ताज़ा मिसाल नाज़िरीने किराम की ज़ियाफ़ते तब्ज़ के लिये पेश करते हैं। और वोह येह है कि...

अपनों की नज़र में श्री कुफ़्र

एक देवबन्दी अक़ीदा मौलवी साहिब ने जो मौदूदियत⁽²⁾ का शिकार हो चुके हैं मौदूदी साहिब को देवबन्दियों के आइद कर्दा इल्ज़ामाते तौहीन से बरिय्युज्ज़िम्मा साबित करने के लिये, मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब (बानिये मद्रसए देवबन्द) की एक इबारात

① अलावा ज़िल्लत आमेज़ ख़ामोशी के

② अबुल आ'ला मौदूदी साहिब के पैरूकार हो चुके हैं

इन की किताब “तस्फ़ियतुल अक़ाइद” से नक़ल कर के देवबन्द

भेजी और इस पर फ़तवा त़लब किया मगर येह न बताया कि येह इबारत किस की है तो देवबन्द के मुफ़्ती साहिब ने इस इबारत पर बे धड़क कुफ़्र का फ़तवा सादिर फ़रमा दिया । मुलाहज़ा फ़रमाइये :

इश्तिहार ब उनवान “दारुल उलूम देवबन्द के मुफ़्ती का मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानोतवी पर फ़तवाए कुफ़्र”

येह फ़तवा देवबन्दियों के गले में मछली के कांटे की तरह फंस कर रह गया । दारुल इफ़्ता देवबन्द की तरफ़ से जो फ़तवा मौसूल हुवा है । वोह दरजे ज़ैल है ।

मौलाना क़ासिम साहिब दारुल उलूम देवबन्द की इबारत : “दरोगे सरीह⁽¹⁾ भी कई तरह पर होता है हर क़िस्म का हुक्म यक़्सां नहीं । हर क़िस्म से नबी को मा'सूम होना ज़रूरी नहीं । बिल जुम्ला अलल उमूम किज़्ब⁽²⁾ को मुनाफ़ी शाने नबुव्वत बई मा'ना समझना कि येह मा'सिय्यत है और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मआसी से मा'सूम हैं, ख़ाली ग़लती से नहीं”⁽³⁾

फ़तवा 41/786 अल जवाब :

“अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मआसी से मा'सूम हैं इन को मुर्तकिबे मआसी समझना⁽⁴⁾ اَلْعَيَاذُ بِاللّٰهِ अहले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा नहीं । इस की वोह तहरीर ख़तरनाक भी है और अ़ाम मुसलमानों को ऐसी तहरीरात पढ़ना जाइज़ भी नहीं ।” फ़क़त : وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

① वाजेह झूट ② खुलासा कलाम येह है कि मुतलक़न झूट को

③ या'नी अम्बिया भी झूट बोल सकते हैं इन्हें झूट से मा'सूम मानना ग़लती है (مَعَاذَ اللّٰهِ)

④ **अब्बाह** तआला की पनाह

सय्यिद अहमद सईद (नाइब मुफ्ती दारुल उलूम देवबन्द)

“जवाब सहीह है। ऐसे अक्कीदे वाला काफ़िर है। जब तक वोह तजदीदे ईमान और तजदीदे निकाह⁽¹⁾ न करे उस से क़त्ल तअल्लुक़ करें।”

मसरूद अहमद عَفَى عَنْهُ (महर दारुल इफ़ता फ़ी देवबन्द, अल हिन्द)

अल मुश्तहिर⁽²⁾ मुहम्मद ईसा नक़्शबन्दी नाज़िम मक्तबए इस्लामी लूधरां, ज़िल्ज़ मुलतान

नाज़िरीने किराम ! ग़ौर फ़रमाएं कि देवबन्द से मौलवी कासिम साहिब पर येह फ़तवाए कुफ़्र मंगवा कर इश्तिहार में छापने वाला मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब नानोतवी और अकाबिर उ-लमाए देवबन्द का मो'तकिद और इन को अपना मुक्तदा व पेशवा मानने वाला है मगर मौदूदी होने की वजह से इस ने मौदूदी साहिब के मुख़ालिफ़ीन उ-लमाए देवबन्द को नीचा दिखाने के लिये और मौदूदी साहिब पर उ-लमाए देवबन्द के सादिर किये हुवे फ़तवों को ग़ुलत साबित करने के लिये येह चाल चली अगर्चे मुश्तहिर देवबन्दिख्युल अक्कीदा होने की वजह से मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब नानोतवी बानिये मद्रसए देवबन्द पर मुफ़्तिये देवबन्द के इस फ़तवाए कुफ़्र को सहीह तस्लीम नहीं करता लेकिन हमारे नाज़िरीने किराम पर इस फ़तवे को पढ़ कर येह हक्कीक़त ब ख़ूबी वाज़ेह हो गई होगी कि मुफ़्तियाने देवबन्द की नज़र में उ-लमाए देवबन्द की इबाराते कुफ़्रिया यक्कीनन कुफ़्रिया हैं। लेकिन चूंकि वोह अपने मुक्तदा और पेशवा हैं इस लिये उन की इबारात के सामने खुदा व रसूल के अहक़ाम की कुछ वुक्अत नहीं।

अश्ल पीर परस्ती कौन ?

अहले सुन्नत पर पीर परस्ती का इल्ज़ाम लगाने वाले ज़रा अपने गिरेबानों में मुंह डाल कर देखें कि इस से बढ़ कर भी कोई पीर

① या'नी जब तक नए सिरे से कलिमा पढ़ कर मुसलमान न हो जाए और नए हक्के महर के साथ नया निकाह न कर ले ② इश्तिहार छापने वाला

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

परस्ती हो सकती है कि खुदा व रसूल से बढ़ कर भी अपने पीरों और पेशवाओं को बढ़ा दिया जाए। अहले इन्साफ़ के नज़दीक फ़ी ज़माना येही लोग आयते करीमा... (1) ﴿اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ﴾ के सहीह मिस्दाक़ हैं, या'नी वोह लोग जिन्हों ने अपने अहबार व रुहबान (अलिमों और दुर्वेशों) को **अल्लाह** के सिवा अपना रब बना लिया है और वोह इस तरह कि एक बात कोई दूसरा कहे तो उसे काफ़िर बना डालें और वोही बात उन के उ-लमा व पेशवा कहें तो पक्के मोमिन रहें। (2) اَلْعِيَاذُ بِاللّٰهِ وَالّٰى اللّٰهُ الْمُسْتَعٰى

मुसलमानों को काफ़िर कहने वाला कौन है?

वोही लोग मुसलमानों को काफ़िर कहने वाले हैं जो बात बात पर कुफ़्रो शिर्क का फ़तवा लगाते रहते हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइये : तक्विवयतुल ईमान सफ़ह 4, और बुलगतुल हैरान सफ़ह 4 :

इन दोनों किताबों में ऐसी इबारतें और फ़तवे दर्ज किये गए हैं जिन की रू से अहदे सहाबा से ले कर क़ियामत तक पैदा होने वाला कोई मुसलमान भी कुफ़्रो शिर्क से नहीं बचा।

हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के इल्मे ग़ैब का काइल, हाज़िरो नाज़िर होने का मो'तकिद, (3) उमूरे ख़ारिक़तुन लिलआदत (4) में बुजुर्गाने दीन के तसरूफ़ात के मानने वाला, या रसूलल्लाह कहने वाला, बुजुर्गाने दीन की ता'ज़ीम बजा लाने वाला, मजलिसे मीलाद शरीफ़ में क़ियामे ता'ज़ीमी और औलियाए किराम को ईसाले सवाब करने वाला ग़रज़ हर वोह मुसलमान जो इन लोगों के मस्लक के ख़िलाफ़ हो, **مَعَادُ اللّٰهِ** काफ़िर व मुशरिक, बिदअती, गुमराह मुलहि़द और बे दीन है।

(प १०, سورة التوبة, الآية ३)

(2) **अल्लाह** की पनाह और उसी की बारगाह में फ़रयाद है। (3) अक़ीदा रखने वाला (4) वोह उमूर जो आदतन मुहाल हों जैसे मुर्दे ज़िन्दा करना वग़ैरा

नाज़िरीने किराम गौर फ़रमाएं कि इस किस्म के फ़तवों से कौन सा मुसलमान बच सकता है ? तअज्जुब है खुद तमाम मुसलमानों को काफ़िर

व मुशरिक कहें और अहले सुन्नत पर इल्ज़ाम लगाएं। (1) **فَاللّٰهُ اَكْبَرُ**

अफ़ज़लियत व अशालते मुस्तफ़विय्या **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**

इज़हारे कमालाते मुहम्मदी **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के बारे में उ-लमाए उम्मत का हमेशा येह मस्लक रहा है कि जब उन्होंने ने किसी फ़र्दे मख़्लूक में कोई ऐसा कमाल पाया जो अज़ रूए दलील ब हैअते मख़सूसा इस के साथ मुख़्तस नहीं (2) तो इस कमाल को हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के लिये इस बिना पर तस्लीम कर लिया कि हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** तमाम अलम के वुजूद और इस के हर कमाल की अस्ल हैं। जो कमाल अस्ल में न हो, वोह फ़र्ज़ में भी नहीं हो सकता लिहाज़ा फ़र्ज़ में एक कमाल पाया जाना इस अम्र की रोशन दलील है कि अस्ल में येह कमाल ज़रूर है और इस में शक नहीं कि येह उसूल बिल्कुल सहीह है। मा'मूली समझ रखने वाला इन्सान भी समझ सकता है कि जब फ़र्ज़ का हर कमाल अस्ल से मुस्तफ़ाद (3) है तो येह कैसे हो सकता है कि एक कमाल फ़र्ज़ में हो और अस्ल में न हो ब ख़िलाफ़ ऐब के या'नी येह ज़रूरी नहीं कि फ़र्ज़ का ऐब अस्ल के ऐब की दलील बन जाए ! हम अकसर देखते हैं कि हरे भरे दरख़्त की बा'ज़ टहनियां सूख जाती हैं मगर जड़ तरो ताज़ा रहती है इस लिये कि अगर जड़ ही खुश्क हो जाती तो उस की एक शाख़ भी सर सब्ज़ो शादाब न रहती और जब सिवाए चन्द शाख़ों के सब टहनियां सर सब्ज़ो शादाब हों तो मा'लूम हुवा कि जड़ तरो ताज़ा है और येह चन्द शाख़ें जो मुरझा कर खुश्क हो गई हैं इस की वजह येह है कि अन्दरूनी

① और **अब्बाह** की बारगाह में ही फ़रयाद है

② जो दलील की रोशनी में सिर्फ़ इसी के साथ मख़सूस हो जैसे हज़रते ईसा **عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** का बिगैर बाप के पैदा होना ③ हासिल किया गया है

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

और बातिनी तौर पर इन का तअल्लुक अस्ल से टूट गया है। येह सहीह है कि बा'ज अवकात फ़र्ज़ का ऐब अस्ल की तरफ़ मन्सूब हो जाता है

लेकिन येह उसी वक़्त होता है जब अस्ल में ऐब पाया जाए और जब अस्ल का बे ऐब होना दलील से साबित हो तो फिर फ़र्ज़ का कोई ऐब अस्ल की तरफ़ मन्सूब नहीं हो सकता और इस में शक नहीं कि अस्ले काइनात या'नी हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का बे ऐब होना दलील से साबित है। खुद नामे पाक “मुहम्मद” इस की दलील है क्यूंकि लफ़्ज़े मुहम्मद के मा'ना हैं बार बार ता'रीफ़ किया हुवा और ज़ाहिर है कि नक्स व ऐब मज़म्मत का मूजिब है न ता'रीफ़ का।⁽¹⁾ लिहाज़ा वाजेह हो गया कि मौजूदाते मुमकिना⁽²⁾ के उयूब व नकाइस अस्ले मुमकिनात हज़रते मुहम्मद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ मन्सूब नहीं हो सकते बल्कि उन का अस्ल ऐब येही है कि वोह बातिनी और मा'नवी तौर पर अपनी अस्ल से मुन्क़तअ हो कर इस के फुयूजो बरकात से महरूम हो गए।

हम कह सकते हैं कि मौजूदाते आलम⁽³⁾ का हर कमाल कमाले मुहम्मदी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दलील है मगर किसी फ़र्दे आलम का ऐब مَعَادُ اللهِ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ऐब की दलील नहीं हो सकता क्यूंकि जिस फ़र्दे में ऐब पाया जाता है दर हकीक़त वोह अन्दरूनी और बातिनी तौर पर अस्ले काइनात या'नी रूहानिय्यते मुहम्मदिय्या عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالنَّجَاةُ से मुन्क़तअ हो चुका है। गोया अस्ल से कट जाना ही ऐब है।

इसी उसूल के मुताबिक़ हज़रते मौलाना अब्दुस्समीअ साहिब बैदल⁽⁴⁾ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मुसन्निफ़े “अन्वारे सातिआ” ने तहरीर फ़रमाया

① नक्स व ऐब वाली चीज़ की मज़म्मत बयान की जाती है न कि ता'रीफ़

② तमाम मख़लूक, काइनात ③ कुल काइनात ④ आप महबूबे इलाही हज़रते हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं।

था कि “जब चांद सूरज की चमक दमक तमाम रूए ज़मीन पर पाई जाती है और शैतान व मलकुल मौत तमाम मुहीत ज़मीन पर मौजूद रहते हैं। बनी आदम को देखते और उन के अहवाल को जानते हैं तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का अपनी रूहानिय्यत व नूरानिय्यत के साथ बयक वक़्त बहुत से मक़ामात पर तमाम रूए ज़मीन में रौनक अफ़रोज़ होना और इस का इल्म रखना किस तरह कुफ़्रो शिर्क हो सकता है?” (1)

मौलवी अम्बेठवी की ग़लत फ़हमी

ज़ाहिर है कि मौलाना मुहम्मद अब्दुस्समीअ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का येह कलाम तो इसी अस्ले मज़कूर पर मब्नी था लेकिन मौलवी अम्बेठवी साहिब जब अन्वारे सातिआ के रद्द में बराहीने क़ातिआ लिखने बैठे तो इन्हों ने अपनी हलावते तब्बअ के बाइस अन्वारे सातिआ में लिखे हुवे हुज़ूर के इस कमाल को हुज़ूर के वस्फ़े असालत (2) के बजाए इसे अफ़ज़लिय्यत पर मब्नी समझ लिया या'नी मौलवी अम्बेठवी साहिब ने येह समझा कि साहिबे अन्वारे सातिआ ने जो शैतान व मलकुल मौत के हर जगह मौजूद होने और रूए ज़मीन की अश्या का आलिम होने को बयान कर के हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हर जगह मौजूद होने और रूए ज़मीन के उलूम से मुत्तसिफ़ होने की तरफ़ मुसलमानों को मुतवज्जेह किया है इस का मम्बा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अफ़ज़लिय्यते महज़ा है।

अम्बेठवी साहिब ने अपनी ग़लत फ़हमी से बज़ो'मे खुद एक बुन्यादे फ़ासिद काइम कर दी और इस पर मफ़ासिद की ता'मीर करते चले गए, चुनान्वे, इसी (3) بِنَاءُ الْفَاسِدِ عَلَى الْفَاسِدِ के सिलसिले में वोह तहरीर फ़रमाते हैं :

①.....انوار سلطه در بیان مولود و فاتحه، ص ۳۵۹، ضیاء القرآن پبلیکیشنز، ملخصا

② मख़लूक में जिस को जो ख़ूबी भी मिली हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मिली

③ फ़ासिद पर फ़ासिद की ता'मीर किये चले जाना।

“आ’ला इल्लिय्यीन में रूहे मुबारक عَلَيْهِ السَّلَام का तशरीफ़ रखना और मलकुल मौत से अफ़ज़ल होने की वजह से हरगिज़ साबित नहीं होता कि इल्म आप का इन उमूर में मलकुल मौत के बराबर भी हो चे जाइका ज़ियादा” (बराहीने क़ातिआ, स. 52)

ع بَرِيْءٌ عَقْلٌ وَدَانِشٌ بَيَّابِدٌ غَرِيْئٌ (1)

अम्बेठवी जी ! आप से किस ने कह दिया कि साहिबे अन्वारे सातिआ ने मलकुल मौत से महज़ अफ़ज़ल होने की वजह से हुज़ूर का इल्म मलकुल मौत से ज़ियादा तस्लीम किया है। साहिबे अन्वारे सातिआ या किसी सुन्नी अ़लिम ने भी अफ़ज़लिय्यते महज़ा (2) को ज़ियादतिये इल्म की दलील नहीं बनाया हम तो हुज़ूर को ज़ियादतिये इल्म की दलील नहीं बनाया हम तो हुज़ूर की असालत (3) को हुज़ूर की आ’लमिय्यत (4) की दलील क़रार देते हैं और अगर बिलफ़र्ज़ किसी ने हुज़ूर की अफ़ज़लिय्यत को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अफ़ज़लिय्यत की दलील बनाया भी हो तो इस से अफ़ज़लिय्यते महज़ा समझना इन्तिहाई हमाकत है क्यूंकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अफ़ज़लिय्यत हुज़ूर के साथ मख़सूस है जिस का तहक्कुफ़ असालत के बिगैर नामुमकिन है। (5)

हमारे इस बयान की रोशनी में मुख़ालिफ़ीन का उन तमाम हवाला जात को पेश करना बे सूद हो गया जिन से वोह साबित किया

① इस अक्ल व दानिश पर रोना चाहिये ② फ़क़त अफ़ज़ल होना ③ हर वस्फ़ व ख़ूबी की अस्ल होने को ④ इल्म में सब से बढ़ कर होने ⑤ या’नी अगर कोई कहे कि चूंकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तमाम मख़लूक से अफ़ज़ल हैं इसी लिये इल्म में भी तमाम मख़लूक से बढ़ कर हैं, तो उस का येह कहना सहीह है इस लिये कि अफ़ज़लिय्यत में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का वस्फ़े असालत भी मौजूद है या’नी काइनात में जिस को जो इल्म मिला हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से मिला।

करते हैं कि अफ़ज़लियत को आ'लमियत मुस्तलज़म नहीं। मसलन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से अफ़ज़ल हैं लेकिन बा'ज़ उलूम हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के लिये हासिल हैं, हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये उन का हुसूल साबित नहीं वगैरा वगैरा।

मुख़ालिफ़ीन ने अभी तक इस हकीक़त को समझा ही नहीं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अफ़ज़लियत पर दूसरों को अफ़ज़लियत का कियास करना दुरुस्त नहीं इस लिये कि हुज़ूर अस्ते काइनात हैं और येह वस्फ़ “असालते आम्मा” हुज़ूर के इलावा किसी को नहीं मिला। बिनाबरीं हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अफ़ज़लियत, आ'लमियत को मुल्तज़िम होगी और हुज़ूर के इलावा किसी दूसरे की अफ़ज़लियत में आ'लमियत का इस्तिलज़ाम न होगा।

है ख़लीलुल्लाह के हाज़त रसूलुल्लाह की

इस बात की ताईद व तस्दीक़ कि हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तमाम रसूलों से अफ़ज़ल और सब अम्बिया के ख़ातिम हैं नीज़ येह कि तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से मदद हासिल करते हैं। शैख़ अक्बर मुहियुद्दीन इब्नुल अरबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ⁽¹⁾ के इस कौल से होती है जो शैख़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ⁽²⁾ ने बाब 491 के उलूम में इरशाद फ़रमाया है कि “मख़्नूक़ का कोई फ़र्द दुन्या व आख़िरत का कोई इल्म हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बातिनियत (रुहानियत) के बिगैर किसी ज़रीए से हासिल नहीं कर सकता। बराबर है कि अम्बिया मुतक़द्दिमीन ⁽³⁾ हों या वोह उलमा हों जो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बिअूसत से मुतअख़ि़रीन हैं और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया है कि मुझे अव्वलीन व आख़िरीन के तमाम उलूम

① मुतवफ़ा 638 हि. ② अपनी किताब “अल फ़ुतूहातुल मक्किया” के

③ अम्बियाए साबिकीन

अता किये गए हैं और इस में शक नहीं कि हम आखिरीन से हैं (फिर हमारा कोई इल्म बिला वासितए रूहानिय्यते मुहम्मदिय्या क्यूंकर हासिल हो सकता है) और हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन उलूम के हुक्म में ता'मीम फरमाई लिहाजा येह हुक्म हर किस्म के उलूम को शामिल है। ख्वाह वोह इल्म मन्कूल व मा'कूल⁽¹⁾ हो या मफहूम व मौहूब।⁽²⁾ लिहाजा हर मुसलमान को कोशिश करनी चाहिये कि वोह बवासितए नबिय्ये करीम हजरते मुहम्मदे मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **अब्बाह** तआला से इल्म हासिल करे क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ **अब्बाह** तआला की तमाम मख्लूक में अलल इत्लाक सब से जियादा इल्म वाले हैं।⁽³⁾

बा'ज उलूम के बुरा कह कर शूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की जाते
मुकद्दशा से इश की नफी करना बद् तरीन जहालत
और बाश्गाहे नबुव्वत से खुली अद्वावत है

देवबन्दी हजरात अहले सुन्नत के मुआख़जे से तंग आ कर येह कह दिया करते हैं कि हम हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के लिये वोही उलूम मानते हैं जो नबुव्वत व रिसालत से मुतअल्लिक और हुजूर की शान के लाइक हैं। गैर ज़रूरी उलूम और नजासतों, ग़लाज़तों, मक्रो फ़रेब, चोरी, दगाबाज़ी, ज़लालत व गुमराही के तरीकों और इन तफ़्सीलात का बुरा और मज़मूम इल्म और शैतानी उलूम को हुजूर के लिये साबित करना हुजूर के हक़ में ऐब है जिस से हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का पाक होना ज़रूरी है।

इस का जवाब येह है कि इल्म का मुक़ाबिल जहल⁽⁴⁾ है और जहल फ़ी नफ़िसही⁽⁵⁾ नुक्स व ऐब है तो ला मुहाला इल्मे

① मन्कूल जैसे कुरआनो हदीस, मा'कूल जैसे मन्तिक व फ़ल्सफ़ा

② तजरिबात से हासिल शुदा हो या इल्मे वहबी हो

③ **اليواقيت والجواهر**, جلد ۲ ص ۳۹ مطبوعه مصر

④ **اليواقيت والجواهر**, جلد ۲ ص ۳۹ مطبوعه مصر

⑤ **اليواقيت والجواهر**, جلد ۲ ص ۳۹ مطبوعه مصر

फी नफ़्सही⁽¹⁾ हुस्नो कमाल होगा। देखिये शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ**⁽²⁾ तफ़्सीरे “फ़तहुल अज़ीज़” में इरक़ाम फ़रमाते हैं :

“دَرْبِ جَا بَايَدَ دَانَسْتُ كَذَلِكَ عِلْمُ فِي نَفْسِهِ مَذْمُومٌ نَيْسَتْ هُوَ جَوْنُكَهَ بَاشَدُ”

(तफ़्सीर फ़िख्रुल अरिज़, ज. १, पृ. २२५, مطبوعه مطبعه العلوم متعلقه مدارس دینی)

तर्जमा : यहां जानना चाहिये कि इल्म जैसा भी हो, फ़ी नफ़्सही बुरा नहीं होता।

इस के बा’द शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने उन अस्बाब का तफ़्सीली बयान फ़रमाया है जिन की वजह से किसी इल्म में बुराई आ सकती है जिस का खुलासा हस्बे ज़ैल है।

(1) तवक्कोए ज़रर⁽³⁾

(2) इस्ति’दादे अल्लिम का कुसूर⁽⁴⁾

(3) उलूमे शरइय्या में बेजा गौर करना।

हमारे नाज़िरीने किराम अक्ल व इन्साफ़ की रोशनी में इतनी बात ब ख़ूबी समझ सकते हैं कि हज़रते शाह साहिब के बयान फ़रमूदा तीनों सबबों का रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हक़ में पाया जाना मुमकिन नहीं क्योंकि इस्मते इलाहिyya⁽⁵⁾ की वजह से हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हक़ में ज़रर की तवक्कोअ नहीं हो सकती। इसी तरह हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की इस्ति’दादे मुक़द्दसा में कुसूर का पाया जाना भी मुहाल है। **عَلَى هَذَا الْقِيَاسِ**⁽⁶⁾

उमूरे शरइय्या में बेजा गौरो फ़िक्क करना भी रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के लिये क़तअन नामुमकिन है वरना उलूमे शरइय्या भी **مَعَاذَ اللَّهِ** हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** के हक़ में मज़मूम हो जाएंगे।

1 बज़ते खुद 2 बिन शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी मुतवफ़्फ़ा 1239

हि. 3 इस इल्म के सबब नुक्सान में पड़ने का अन्देशा हो 4 अल्लिम की

फ़हम व फ़िरासत में कमी है, जिस के सबब वोह उस इल्म के हासिल करने से

हलाकत में पड़ेगा 5 खुदाई हिफ़ज़त की बिना पर 6 इसी पर क़ियास करते हुवे

२ब तअ़ाला से श्री इल्म की नफ़ी.....?

मा'लूम हुआ कि जिन अस्बाबे ख़ारिजा की वजह से किसी इल्म में बुराई पैदा हो सकती है हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हक्क में इन का पाया जाना मुमकिन नहीं। लिहाज़ा साबित हो गया कि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को ख़्वाह कैसा ही इल्म क्यूं न हो वोह हुज़ूर के हक्क में बुरा नहीं हो सकता और अगर हम आंखें बन्द कर के येह तस्लीम ही कर लें कि बा'ज् उलूम फ़ी नफ़िसही बुरे होते हैं तो मैं अर्ज़ करूंगा जो चीज़ फ़ी नफ़िसही बुरी और मज़मूम हो वोह ऐब है और ऐब सिर्फ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हक्क में मुहाल नहीं बल्कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से पहले **अल्लाह** तअ़ाला के हक्क में मुहाल है न सिर्फ़ मुहाल बल्कि मुहाले अक्ली⁽¹⁾ और मुमतनिअ लिज़ातिही⁽²⁾ है। लिहाज़ा ऐसे इल्म को जो फ़ी नफ़िसही बुरा हो और हुज़ूर के हक्क में इस का होना ऐब करार पाए इसे **अल्लाह** तअ़ाला के लिये भी साबित करना नामुमकिन होगा क्यूंकि सिफ़्ते ज़मीमा⁽³⁾ का इसबाते हकीक़तन ऐब लगाना है। जब **अल्लाह** तअ़ाला हर ऐब से पाक है तो बुरे इल्म से भी पाक होना उस के लिये यकीनन वाजिब होगा। जो चीज़ (फ़ी नफ़िसही) बन्दों के हक्क में ऐब हो **अल्लाह** तअ़ाला का इस से मुनज़्ज़ा⁽⁴⁾ होना ज़रूरी है। देखिये किज़्ब, जहल, जुल्म, सफ़ा⁽⁵⁾ वगैरा उमूर फ़ी नफ़िसही⁽⁶⁾ जिस तरह बन्दों के हक्क में ऐब हैं इसी तरह **अल्लाह** तअ़ाला के हक्क में भी ऐब हैं और **अल्लाह** तअ़ाला का इन से पाक होना ज़रूरी है। इसी लिये “मुसामरह” जुज़् सानी, स. 60 मतबूआ मिस्स में अल्लामा कमाल इब्ने अबी शरीफ़ एक सुवाल का जवाब

- ① जिस चीज़ का पाया जाना अक्लन नामुमकिन हो ② जिस का पाया जाना मुतलकन नामुमकिन हो ③ बुरी सिफ़्त ④ पाक होना ⑤ बे वुकूफ़ी ⑥ बजाते खुद

देते हुवे इरक़ाम फ़रमाते हैं : “हम कहेंगे कि अशअरी⁽¹⁾ और इन के इलावा तमाम (अहले सुन्नत) इस बात पर मुत्तफ़िक् हैं कि हर वोह चीज़ जो (फ़ी नफ़िसही) बन्दों के हक् में ऐब और नुक्स की सिफ़त हो, **अल्लाह** तआला इस से पाक है और वोह सिफ़ते नुक्स **अल्लाह** तआला पर मुहाल है।”⁽²⁾

ऐसी सूत में हज़राते उलमाए देवबन्द से मुख़्लिसाना इस्तिफ़सार है कि जब आप **अल्लाह** तआला को हर ऐब से पाक समझते हैं तो क्या उस की ज़ाते मुक़दसा से उन तमाम उलूम की नफ़ी करेंगे जिन्हें नजासत व ग़लाज़त, मक्रो फ़रैब का इल्म और शैतानी उलूम कह कर बुरा और मज़मूम करार दिया गया है। अगर नहीं तो क्या **अल्लाह** तआला को आप उयूब व नक़ा़इस से मुबर्रा⁽³⁾ नहीं मानते ?

हैरत है कि जिन लोगों की इबाराते तौहीने रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से मुलव्विस हैं इस मस्अले में उन्हें रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से इस क़दर हद से ज़ा़िद महब्बत किस तरह हो गई कि **अल्लाह** तआला की तन्ज़िया⁽⁴⁾ से भी उन के नज़दीक हुज़ूर की तक्दीस ज़ियादा अहम और ज़रूरी करार पा गई। **فَيَا لَلْعَجَبِ**

महब्बत की आड़ में दुश्मनी

दर हक़ीक़त येह भी अ़दावते रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का एक बय्यिन सुबूत है क्यूंकि काइदा है कि अगर किसी अच्छी चीज़ से किसी को बर बिनाए अ़दावत महरूम रखना हो तो उस चीज़ को बुरा और मज़मूम कह दिया जाता है ताकि दूसरों पर येह ज़ा़िह कर दिया जाए कि हम इस शख़्स की महब्बत और ख़ैर ख़्वाही की बिना पर इस बुरी चीज़ से इसे महफूज़ रखना चाहते हैं, लेकिन

① अशअरी के इमाम हज़रत शैख़ अबुल हसन अशअरी **عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ** मुतवफ़्फ़ा 324 हि.

②المسامرة بشرح المسامرة: ص २०६، مطبعة السعادة بمصر

③ पाक, बे ऐब ④ पाकी

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

हकीकतन अदावत की वजह से इस को एक अच्छी और मुफीद चीज़ से महसूस रखना मकसूद है। बिल्कुल येही सूरते हाल यहां है कि बुरी चीज़ों के फ़ी नफ़िसही इल्म को (जो ऐन कमाल है) नुक्स व ऐब करार दे दिया गया ताकि वोह हज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये साबित न हो सके। أَلْعِيَاذُ بِاللّٰهِ وَآلِیْهِ الْمُسْتَكْبَرِ

एक कशीरुल बुकूअ शुबे क इज़ाला

बा'ज लोगों को येह कहते हुवे सुना गया है कि उ-लमाए देवबन्द ने दीन की बहुत ख़िदमत की। सेंकड़ों उ-लमा इन से पैदा हुवे। इन्हों ने बे शुमार किताबें लिखीं। इन में बहुत से लोग पीरी मुरीदी करते हैं और इन में आबिदो ज़ाहिद भी पाए जाते हैं। इन्हों ने अपनी तक़रीरों और तहरीरों से दीन की बहुत कुछ तब्लीग़ व इशाअत की। ऐसी सूरत में ज़ेहन इस बात को क़बूल नहीं करता कि इन्हों ने रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की शान में तौहीन आमेज़ इबारात लिखी हों।

इस का जवाब येह है कि इस किस्म के लोगों से तौहीने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का सरज़द हो जाना अक्लन या शरअन किसी तरह भी मुहाल नहीं। बलअम बिन बाऊरा कितना बड़ा आबिदो ज़ाहिद और मुस्तजाबुद्वा'वात था लेकिन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की मुख़ालफ़त और इन की इहानत का मुर्तकिब हो कर (۱) وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ का मिस्दाक़ बन गया और हमेशा के लिये क़अरे मज़ल्लत में गिर गया। (۲) शैतान का आबिदो ज़ाहिद और आलिम व आरिफ़ होना सब को मा'लूम है जब वोह हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौहीन कर के रान्दए दरगाह हो गया तो दूसरों के लिये तौहीने रसूल का इर्तिकाब क्यूंकर नामुमकिन करार पा सकता है।

①तर्जमा : मगर वोह तो ज़मीन पकड़ गया (१, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)

②.....التفسير الكبير، تحت الآية ١٧٥/٤٠٣، بيروت

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

ख़वारिज व मो 'तजिला⁽¹⁾ और दीगर फ़िर्कए बातिला के इल्मी और अमली कारनामे अगर तारीख़ की रोशनी में देखे जाएं तो इस ज़माने के हज़राते मज़क़रीन⁽²⁾ से उन के इल्मो अमल का पल्ला कहीं भारी था इन की मज़क़मा दीनी ख़िदमात, तदरीस व तब्लीग़, तस्नीफ़ व तालीफ़ के मुक़ाबले में अबनाए ज़माना⁽³⁾ की ख़िदमात और कारगुज़ारियां ज़रूर बे मिक्दार की हैसियत भी नहीं रखतीं लेकिन उन के येह तमाम इल्मी और अमली कारनामे इन को क़अरे ज़लालत से बचा न सके।

रही ख़िदमत व हिमायते दीन तो इस के लिये ज़रूरी नहीं कि अहले हक़ही के ज़रीए हो बल्कि **अल्लाह** तआला अपने दीन की ताईद नाफ़रमानों और फ़ाजिरों से भी करा लेता है। चुनान्चे, हदीस शरीफ़ में वारिद है **إِنَّ اللَّهَ يُؤَيِّدُ هَذَا الدِّينَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ**⁽⁴⁾ लिहाज़ा इआनत व हिमायते दीन और ज़ाहिरी इल्मो अमल के पाए जाने से हरगिज येह लाज़िम नहीं आता कि ऐसे लोग फ़िल वाक़ेअ⁽⁵⁾ **अल्लाह** तआला के नज़दीक पसन्दीदा और महबूब हों।



कुफ़्रो शिर्क व बिदअत



अगर ग़ौर से देखा जाए तो इन हज़रात का सब से बड़ा कारनामा येह है कि इन्हों ने तमाम उम्मत मुस्लिमा को काफ़िर व मुशरिक और बिदअती बना डाला मसलन या रसूलल्लाह कहना

1 ख़वारिज : एक फ़िर्का जिन्हों ने हज़रते अली **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के ख़िलाफ़ बगावत कर के इन्हें शहीद किया। (तاريخ الخلفاء)

मो 'तजिला : एक फ़िर्का जो अम्र बिन उबैद का पैरुकार है (غنية الطالبين)

2 या'नी वहाबियों देवबन्दियों **3** वहाबियों देवबन्दियों

4 तर्जमा : बेशक **अल्लाह** तआला इस दीन का काम फ़ाजिर शख़्स से भी करवा लेता है (بخاری، کتاب المغازی، باب غزوة خیبر ۸۲/۳، الحديث ۴۰۳-۴)۔

5 हकीकत में भी

शिरक, औलियाए किराम की नज़्र (लुग़वी) शिरक, मज़ाराते औलिया पर जाना कुफ़्र, मीलाद बिदअत, उर्स हराम, ग्यारहवीं शिरक, अज़ान में हुजुरे पाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का नाम सुन कर अंगूठे चूमना बिदअत। अल गरज़ कुफ़्रो शिरक की ऐसी भरमार की जिस से दूसरे तो क्या बचते खुद भी महफूज़ न रह सके।

अहले शुन्नत का अक्कीदा

इस मुख़्तसर रिसाले में तफ़्सील की तो गुन्जाइश नहीं अलबत्ता इजमालन इतना अर्ज कर देना काफ़ी है कि मन्सूसे क़तई⁽¹⁾ का इन्कार कुफ़्र है। ग़ैरे खुदा को खुदा मानना या खुदा की कोई सिफ़त किसी ग़ैर के लिये साबित करना शिरक है⁽²⁾ और दीन में ऐसी चीज़ पैदा करना जिस की अस्ल दीने मतीन में न पाई जाए बिदअत है। या'नी हर वोह चीज़ जो किसी दलीले शरई के मुआरिज़ हो बिदअते शरइय्या है।⁽³⁾

बिदअत की हकीक़त

येह उर्स व मीलाद व दीगर आ'माले मुस्तहूसना जिन्हें कुफ़्रो शिरक और बिदअत क़रार दिया जाता है हकीक़तन उमूरे मुस्तहब्बा⁽⁴⁾ हैं। आज तक कोई मुन्किर इन उमूर में से किसी अम्र को न किसी नस्से क़तई⁽⁵⁾ के ख़िलाफ़ साबित कर के इन के कुफ़्र होने पर दलील

1 ऐसी दलील जिस का सुबूत कुरआने पाक या हदीसे मुतवातिर से हो।

(फ़तावा फ़कीहे मिल्लत)

2.....شرح العقائد النسفية، مبحث: الأفعال كلها بخلق الله تعالى، ص २०१، مكتبة المدينة

3.....مسلم، كتاب الاقضية، باب نقض الاحكام الباطلة، الحديث: १७१८، ص १९६، دار ابن حزم، مفهومأ

4 **मुस्तहब्ब** : वोह कि नज़रे शरअ में पसन्द हो मगर तर्क पर कुछ ना पसन्दी न हो, ख़्वाह खुद हुजुरे अक्दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इसे किया या इस की तरगीब दी या उ-लमाए किराम ने पसन्द फ़रमाया अगर्चे अह़ादीसे में इस का ज़िक्र न आया। इस का करना सवाब और न करने पर मुतलक़न कुछ नहीं। (बहारे शरीअत) 5 ऐसी दलील जिस का सुबूत कुरआने पाक या हदीसे मुतवातिर से हो। (फ़तावा फ़कीहे मिल्लत)

ला सका और न इन को किसी दलीले शरई के खिलाफ़ साबित कर के इन के बिदअत होने पर इस्तिदलाल कर सका। अलबत्ता इतनी बात ज़रूर कही जाती है कि जिस तरीके से तुम येह काम करते हो इसी तरह खैरुल कुरून⁽¹⁾ में येह काम किसी ने नहीं किये लिहाज़ा येह सब उमूर बिदअत हैं।

इस के जवाब में तहकीक़ व तफ़्सील तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दूसरे रिसाले में हदिय्यए नाज़िरीन होगी। सरे दस्त इतना अर्ज कर देना काफ़ी है कि अगर इन उमूर की हैअते कज़ाइय्या⁽²⁾ की तफ़्सीलात कुरूने औला⁽³⁾ में नहीं पाई गई तो सिर्फ़ इस वजह से इन को बिदअत कहना हरगिज़ दुरुस्त नहीं हो सकता।

देखिये कुरआने मजीद की तीस पारों में तक्सीम, ऐ'राबे कुरआन, जमए अहादीस, बिनाए मदारिस, ता'लीमे दीन पर उजरत लेना, अवराद व आ'माले मशाइख़ वगैरा बे शुमार काम ऐसे हैं कि खैरुल कुरून में इन का वुजूद नहीं पाया गया लेकिन उ-लमाए देवबन्द भी इन्हें बिदअत नहीं कहते। मा'लूम हुवा कि येह बात क़तअन ग़लत और नाक़ाबिले क़बूल है।

शिरक़ की हकीक़त

इसी तरह कोई मुन्किर किसी हुज्जते शरइय्या से इन उमूर के ए'तिकाद या अमल का शिरक़ होना भी साबित न कर सका। शिरक़ के मुतअल्लिक़ हमारे नाज़िरीने किराम येह बात ज़रूर याद रखें कि शिरक़ तौहीद का मुक़ाबिल है और मस्अलए

⁽¹⁾ वोह ज़माना जिस को हदीसे पाक में सब से बेहतर दौर कहा गया है (مسند البزار)

और येह सहाबए किराम, ताबेईन व तब्ज़ ताबेईन का ज़माना है (تفسير خازن)

⁽²⁾ जिस शक्लो सूरत में मौजूदा दौर में येह काम किये जाते हैं जैसे मीलाद वगैरा ⁽³⁾ सहाबए किराम, ताबेईन व तब्ज़ ताबेईन के ज़माने में

तौहीद वाजिबे अक्ली⁽¹⁾ है लिहाजा शिर्क ला मुहाला ए'तिकादे अम्र मुमतनिअ लिजातिही⁽²⁾ का नाम होगा ।

जाहिर है कि तसरुफाते अम्बिया व औलिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और इन के बाकी कमालाते इल्मिया व अमलिया सब मुकय्यद बिल अता व बिइजिल्लाह⁽³⁾ है और येह अम्र भी रोजे रोशन की तरह वाजेह है कि अताए इलाही और इज्ने खुदावन्दी के साथ **अब्बाह** के किसी महबूब के लिये इल्मी या अमली कमालात व तसरुफात का होना हरगिज मुमतनिअ लिजातिही नहीं । इस लिये इज्ज व अता की कैद के साथ इन का ए'तिकाद किसी तरह शिर्क नहीं हो सकता ।

अलबत्ता उलूहियत और वुजूबे वुजूद और गनाए जाती⁽⁴⁾ ऐसे उमूर हैं जिन की अता मुमतनिअ लिजातिही है । इस लिये जो शख्स किसी के हक में इन उमूर में से किसी अम्र की अता का ए'तिकाद रखेगा वोह यकीनन मुशरिक होगा । जैसा कि मुशरिकीने अरब अपने आलिहए बातिला⁽⁵⁾ के हक में इसी किस्म का ए'तिकाद रखते थे और किसी मुसलमान का किसी गैरुल्लाह के हक में हरगिज येह ए'तिकाद नहीं । وَاللَّهُ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ⁽⁶⁾ इस मुख्तसर बयान से अहले इल्म पर मुखालिफीन के वोह तमाम मक्रो फ़रैब आशकार हो गए जिन में बा'ज हज़रात मुब्तला हो जाते हैं ।

इन्शाफ़ कीजिये

जो देवबन्दी हज़रात उ-लमाए देवबन्द की सरीह तौहीनी इबारतों में तौहीन नहीं मानते उन की खिदमत में मुख़िलसाना गुज़ारिश

- ① अक्ल तकाज़ा करती हो कि इस का पाया जाना ज़रूरी है
- ② जिस का पाया जाना मुतलकन नामुमकिन हो
- ③ उन के इख़्तियारात **अब्बाह** तआला के दिये हुवे हैं और वोह तमाम तसरुफ़ात **अब्बाह** तआला के इज्ज से करते हैं
- ④ मा'बूद होना, फ़ना न होना और किसी का मोहताज न होना
- ⑤ झूटे मा'बूदों
- ⑥ और **अब्बाह** ही की हुज्जत पूरी है

है कि आप के उ-लमा की इबारात के मुकाबले में मौदूदी साहिब की वोह इबारतें तौहीन के मफ़हूम से बहुत दूर हैं जिन से खुद आप के उ-लमाए देवबन्द ने तौहीन का मफ़हूम निकाल कर मौदूदी साहिब पर इल्जामाते तौहीन आइद किये हैं। अगर्चे हमारे नज़दीक दोनों में कोई फ़र्क नहीं लेकिन इबारात में सराहत व वज़ाहते तौहीन के बय्थिन तफ़ावुत⁽¹⁾ का इन्कार नहीं किया जा सकता।

हम मौदूदी साहिब की इन इबारात में से सिर्फ़ एक इबारात बिना तशरीह तहरीर करते हैं जिस की बिना पर उ-लमाए देवबन्द ने मौदूदी साहिब को तौहीने खुदा व रसूल का मुजरिम गरदाना है। इसी तरह इस इबारात के मुकाबले में तीन इबारतें अकाबिरे उ-लमाए देवबन्द की भी बिना तशरीह पेश करते हैं जिन से उ-लमाए अहले सुन्नत ने **अल्लाह** तआला और रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तौहीन समझी है और येह फैसला आप पर छोड़ते हैं कि मफ़हूमे तौहीन में किस की इबारात ज़ियादा वाजेह और सरीह है।

मौदूदी साहिब की वोह इबारात जिस से उ-लमाए देवबन्द ने **अल्लाह** तआला और रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तौहीन अख़्ज़ कर के मौदूदी साहिब पर खुदा और रसूल की तौहीन का इल्जाम आइद किया है।

“हुज़ूर को अपने ज़माने में येह अन्देशा था कि शायद दज्जाल अपने अहद में ज़ाहिर हो जाए या आप के बा’द किसी करीबी ज़माने में ज़ाहिर हो लेकिन क्या साढ़े तेरह सौ (1350) बरस की तारीख़ ने येह साबित नहीं कर दिया कि हुज़ूर का येह अन्देशा सहीह न था। अब इन चीज़ों को इस तरह नक़ल व रिवायत किये जाना कि गोया येह भी इस्लामी अ़काइद हैं न तो इस्लाम की सहीह नुमाइन्दगी है और न इसे हदीस ही का सहीह मफ़हूम कहा जा सकता

❶ वाजेह फ़र्क

है। जैसा कि मैं अर्ज कर चुका हूँ इस किस्म के मुआमलात में नबी के कियास व गुमान का दुरुस्त न निकलना हरगिज़ मन्सबे नबुव्वत पर ता'न का मूजिब नहीं है।” (माखूज़ अज़ तर्जमानुल कुरआन)

(“हक़ परस्त उ-लमा की मौदूदियत से नाराज़ी के अस्बाब” मुअल्लिफ़ मौलवी अहमद अली साहिब अमीरे अन्जुमन खुदामुद्दीन, दरवाज़ा शेरान वाला, लाहोर स. 18)

अब मुलाहज़ा हों अकाबिरे उ-लमाए देवबन्द की वोह इबारात जिन से उ-लमाए अहले सुन्नत ने **अल्लाह** तआला और उस के रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तौहीन समझ कर इन पर तौहीने खुदा और रसूल का हुक्म लगाया है।

(1)....“और इन्सान खुद मुख्तार है, अच्छे काम करें या न करें और **अल्लाह** तआला को पहले से कोई इल्म भी नहीं होता कि क्या करेंगे बल्कि **अल्लाह** को इन के करने के बा'द मा'लूम होगा और आयाते कुरआनी जैसा कि **(1) ﴿وَيَعْلَمُ الَّذِينَ﴾** वगैरा भी और अहादीस के अल्फ़ाज़ इस मज़हब पर मुन्तबिक हैं।”

(बुल ग़तुल हैरान, मुसन्निफ़ मौलवी हुसैन अली, स. 157,158)
(2).....“फिर दरोगे सरीह⁽²⁾ भी कई तरह पर होता है जिन में से हर एक का हुक्म यक्सां नहीं। हर किस्म से नबी को मा'सूम होना ज़रूरी नहीं।” (तस्फ़ियतुल अक़ाइद, स. 25 मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब नानोतवी)
(3).... “बिल जुम्ला अलल उमूम⁽³⁾ किज़्ब को मनाफ़िये शाने नबुव्वत बई मा'ना समझना कि येह मा'सिय्यत है और अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** मआसी से मा'सूम हैं। ख़ाली ग़लती से नहीं।”

(तस्फ़ियतुल अक़ाइद, स. 28 मौलवी मुहम्मद कासिम नानोतवी बानिये मद्रसए देवबन्द)
मौदूदी साहिब और उ-लमाए देवबन्द दोनों की अस्ल इबारात बिला क़मो कास्त⁽⁴⁾ आप के सामने मौजूद हैं। अगर आप ने ख़ौफ़े

① ١٦٧، سورة آل عمران، الآية ② वाजेह झूट ③ अल हासिल मुतलकन किज़्ब को ④ बिला कमी बेशी

खुदा को दिल में जगह दे कर पूरी दियानतदारी से ब नज़रे इन्साफ़ गौर फ़रमाया तो आप येह तस्लीम करने पर मजबूर हो जाएंगे कि मौदूदी साहिब की इबारत के मुक़ाबले में उ-लमाए देवबन्द की इबारत मफ़हूमे तौहीन में ज़ियादा सरीह हैं।

**देवबन्दी हज़रात क उ-लमाए अहले सुन्नत पर एकए'तिराज़
और देवबन्दी अल्लिम की तहरीर से इस का जवाब**

देवबन्दी हज़रात उ-लमाए अहले सुन्नत पर ए'तिराज़ करते हैं कि उ-लमाए देवबन्द पर ए'तिराज़ करने वाले उन की इबारतों के सियाक़ व सबाक़ को नहीं देखते जो फ़िक़रा काबिले ए'तिराज़ होता है फ़क़त उस को पकड़ लेते हैं और सिर्फ़ उसी फ़िक़रे के बाइस उ-लमाए देवबन्द पर ता'न व तशनीअ⁽¹⁾ शुरूअ कर देते हैं।

बरादराने इस्लाम ! सियाक़ व सबाक़ से देवबन्दी हज़रात की मुराद येह होती है कि अगली पिछली इबारतों को देख कर फिर ए'तिराज़ हो तो करना चाहिये।

जवाबन अर्ज है कि मौदूदी साहिब पर ए'तिराज़ करने वाले देवबन्दियों पर बिऐनिहि⁽²⁾ येही ए'तिराज़ इन्ही अल्फ़ाज़ में मौदूदियों की तरफ़ से आप के मौलवी अहमद अली साहिब देवबन्दी ने अपने रिसाले “हक़ परस्त उ-लमा की मौदूदिथ्यत से नाराज़ी के अस्बाब” के सफ़हा नम्बर 80 पर नक्ल किया है और इस का जवाब भी इसी सफ़हे पर दिया है हम बिऐनिहि वोही जवाब नक्ल किये देते हैं।

मुलाहज़ा फ़रमाइये : “अगर दस¹⁰ सेर दूध किसी खुले मुंह वाले देगचे में डाल दिया जाए और उस देगचे के मुंह पर एक लकड़ी रख कर एक तागा⁽³⁾ में खिन्ज़ीर की एक बोटी एक तोले की उस

① बुरा भला कहना ② बिल्कुल येही ③ धागे में

लकड़ी में बांध कर दूध में लटका दी जाए। फिर किसी मुसलमान को उस दूध में से पिलाया जाए। वोह कहेगा कि मैं इस दूध से हरगिज़ न पियूंगा क्योंकि सब हुराम हो गया है। पिलाने वाला कहेगा कि भाई दस¹⁰ सेर दूध के आठ सो तोले होते हैं आप फ़क़त इस बोटी को क्यूं देखते हैं? देखिये! इस बोटी के आगे पीछे, दाएं बाएं और इस के नीचे चार⁴ इंच की गहराई में दूध ही दूध है। वोह मुसलमान येही कहेगा कि येह सारा दूध ख़िन्ज़ीर की एक बोटी के बाइस हुराम हो गया।

येही किस्सा मौदूदी साहिब की इबारतों का है जब मुसलमान मौदूदी साहिब का येह लफ़्ज़ पढ़ेगा कि ख़ानए का'बा के हर तरफ़ जहालत और गन्दगी है इस के बा'द मौदूदी साहिब इस फ़िक़रे से तौबा कर के ए'लान नहीं करेंगे, मुसलमान कभी राज़ी नहीं होंगे। जब तक ख़िन्ज़ीर की येह बोटी उस दूध से नहीं निकालेंगे।" (स. 80, 81)

पस देवबन्दी हज़रात येही जवाब हमारी तरफ़ से समझ लें और ख़ूब याद रखें कि उ-लमाए देवबन्द की इबारात में महबूबाने हक़ तबारक व तअाला की हज़ार ता'रीफ़ें हों मगर जब तक वोह तौहीन आमेज़ फ़िक़रों से तौबा न करेंगे अहले सुन्नत उन से कभी राज़ी नहीं होंगे।

तौबा नामा दिखाना होगा

एक बात काबिले ज़िक्र येह है कि बा'ज हज़रात तौहीन आमेज़ इबारात के सरीह मफ़हूम को छुपाने के लिये उ-लमाए देवबन्द की वोह इबारात पेश कर देते हैं जिन में उन्होंने ने तौहीन व तन्कीस से अपनी बराअत ज़ाहिर की है या हुज़ूर ﷺ की ता'रीफ़ व तौसीफ़ के साथ अज़मते शाने नबुव्वत का इकरार किया है।

इस का मुख़्तसर जवाब येह है कि वोह इबारात उन्हें क़तअन मुफ़ीद नहीं। जब तक उन की कोई ऐसी इबारात न दिखाई जाए कि हम ने फुल्लं मक़ाम पर जो तौहीन की थी अब उस से हम रुजूअ करते हैं।

मसलन मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब नानोतवी ने तहज़ीरुन्नास में “खातमुन्नबियीन” के मा'नए मन्कूल मुतवातिर⁽¹⁾ “आखिरुन्नबियीन” को अ़वाम का ख़याल बताया है।⁽²⁾ अब अगर उन की दस बीस इबारतें भी इस मजमून की पेश कर दी जाएं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आखिरी नबी हैं या हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द मुहड़ए नबुव्वत काफ़िर है तो इस से कुछ फ़ाइदा न होगा ता वक़्त येह कि मौलवी मुहम्मद कासिम नानोतवी साहिब का येह क़ौल न दिखाया जाए कि मैं ने जो “खातमुन्नबियीन” के मा'नए मन्कूल मुतवातिर “आखिरुन्नबियीन” का इन्कार किया था। अब मैं उस से तौबा कर के रुजूअ करता हूँ।

देखिये। मिरज़ाई लोग मिरज़ा गुलाम अहमद की बराअत में जो इबारतें मिरज़ा साहिब की किताबों से पेश किया करते हैं इन के जवाब में मौलवी मुर्तज़ा हसन साहिब दरभंगी (नाज़िम ता'लीमाते मद्रसए देवबन्द) ने भी येही लिखा है। मुलाहज़ा फ़रमाइये !
(اشد العذاب مطبوعه مطبعه مجبائی عید پور دہلی، صفحہ ۱۵، ط ۱۲۰۱۶) : “जो इबारात मिरज़ा साहिब और मिरज़ाइयों⁽³⁾ की लिखी जाती हैं जब तक उन मज़ामीन से साफ़ तौबा न दिखाएं या तौबा न करें तो उन का कुछ ए'तिबार नहीं।”

① या'नी वोह मा'ना जिसे इस क़दर कसीर जमाअत ने रिवायत किया कि इन सब का झूट पर जम्अ होना मुहाल है ② तहज़ीरुन्नास स. 3 “सो अ़वाम के ख़याल में तो रसूलुल्लाह का ख़ातिम होना बई मा'ना है कि आप का ज़माना अम्बियाए साबिक के ज़माने के बा'द है और आप सब में आखिरी नबी हैं मगर अहले फ़हम पर रोशन होगा कि तक्हुम या तअख़वुरे ज़मानी में बिज़्ज़ात कुछ फ़ज़ीलत नहीं फिर...” अस्ल किताब की इबारात बाब “अक्सी इबारात” में

मुलाहज़ा फ़रमाएं। ③ मिरज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी और उस के पैरूकारों

देवबन्दियों की तौहीन आमेज़ इबारात के इज़हार की ज़रूरत

बा'ज देवबन्दी हज़रात कहा करते हैं कि उ-लमाए देवबन्द की इन इबारात के इज़हार व इशाअत की क्या ज़रूरत है जिन से आप लोग तौहीन समझते हैं। इस ज़माने में इन इबारात की इशाअत बिला वजह शोर व शर, फ़ितना व फ़साद का मूजिब है और येह बड़ी ना इन्साफी है कि उ-लमाए देवबन्द के साथ लड़ाई मोल ली जाए।

इस का जवाब येह है कि उ-लमाए देवबन्द की तौहीनी इबारतों के इज़हार की वोही ज़रूरत है जो “मौलवी अहमद अली साहिब” को “मौदूदियों” का पोल खोलने के लिये पेश आई कि उ-लमाए देवबन्द ने तमाम मुसलमानों के अक्कीदे के खिलाफ़ **अब्बाह** तआला और अम्बिया व औलिया की मुक़द्दस शान में वोह शदीद और नाक़ाबिले बरदाश्त हम्ले किये हैं जिन्हें कोई मुसलमान बरदाश्त नहीं कर सकता। मौलवी अहमद अली साहिब इस ज़रूरत को हस्बे ज़ैल इबारत में बयान फ़रमाते हैं।

“क्या जब डाकू किसी के घर में घुस आए तो घर वाला डाकू से मुक़ाबला कर के अपना माल और अपनी जान न बचाए ? और अगर माल और जान बचाने के लिये डाकू से मुक़ाबला करे तो फिर येह कहना सहीह है कि घर वाला बड़ा ही बे इन्साफ़ है कि डाकू से लड़ रहा है ?”

(रिसालए मज़कूरा⁽¹⁾, मौलवी अहमद अली साहिब, स. 84)

उ-लमाए देवबन्द की तहज़ीब का एक मुख़्तार नुमूना

देवबन्दी हज़रात आम तौर पर येह कहते हैं कि बरेलवी मौलवी उ-लमाए देवबन्द को गालियां दिया करते हैं।

① रिसाला “हक़ परस्त उ-लमा की मौदूदिय्यत से नाराज़ी के अस्बाब”

इस इल्ज़ाम की हकीकत तो हमारे इसी रिसाले से मुन्कशिफ़ हो जाएगी और हमारे नाज़िरीने किराम पर रोशन हो जाएगा कि जिस शाइस्तगी और तहज़ीब से हम ने उ-लमाए देवबन्द के ख़िलाफ़ येह रिसाला लिखा है इस की मिसाल हमारे मुख़ालिफ़ीन की एक किताब से भी पेश नहीं की जा सकती लेकिन मज़ीद वज़ाहत के लिये बतौरे नुमूना हम मौलवी हुसैन अहमद साहिब (मुदर्रिस मद्रसए देवबन्द) की किताब “अश्शहाबुस्साकिबु” से चन्द वोह इबारातें पेश करते हैं जिन में आ’ला हज़रत फ़ाजिले बरेलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيز को शदीद तरीन किस्म की दिल आज़ार गालियां दी गई हैं। इन इबारात को पढ़ कर हमारे नाज़िरीने किराम उ-लमाए अहले सुन्नत और फु-ज़लाए देवबन्द की तहज़ीब का मुक़ाबला कर लें। मुलाहज़ा फ़रमाइये :

(1)....“फिर तअज्जुब है कि मुजद्दिदे बरेलवी आंखों में धूल डाल रहा है और किज़्बे ख़ालिस मशहूर कर रहा है। لَعْنَةُ اللَّهِ تَعَالَى فِي الدَّارَيْنِ या’नी ला’नत करे **अब्बाह** तआला इस (मुजद्दिदे बरेलवी) पर दोनों ज़हानों में।”आमीन (अश्शहाबुस्साकिब, स. 81)

(2).....आप हज़रत ज़रा इन्साफ़ फ़रमाएं और इस बरेलवी दज्जाल से दरयाफ़्त करें। (अश्शहाबुस्साकिब, स. 86)

(3)...मुजद्दिदे الضّالّين ⁽¹⁾ फ़रमाते हैं।

(4) हम आगे चल कर साफ़ तौर से ज़ाहिर कर देंगे कि दज्जाले बरेलवी ने यहां पर महज़ बे समझी और बे अक्ली से काम लिया है। (स. 95)

(5)....इस के बा’द मुजद्दिदे الضّالّين ⁽²⁾ عَلَيْهِ مَا عَلَيْهِ ⁽¹⁾ (स. 103)

① गुमराहों के मुजद्दिद ② उस पर वोह ला’नतें हों जिन का वोह मुस्तहिक् है

سَلَبَ اللَّهُ إِيْمَانَكَ وَ سَوَّدَ وَجْهَكَ فِي الدَّارَيْنِ وَ عَاقَبَكَ بِمَا عَاقَبَ بِهِ أَبَا.... (6)
 جَهْلٍ وَ عَبْدَ اللَّهِ بْنِ أَبِي يَازِيْسَ الْمُتَبَدِّعِينَ - (آمِين)

ऐ बिदअतियों के सरदार (मुजद्दिदे बरेलवी) सल्ब करे
अल्लाह तआला तेरा ईमान और दोनों जहान में तेरा मुंह काला करे
 और तुझे वोही अज़ाब दे जो अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन उबय्य
 को दिया था । (आमीन) । (स. 104,105)

(7) मगर तहज़ीबे इल्म कोई लफ़्ज़ मुजद्दिदे बरेलवी के शायाने शान
 कलम से नहीं निकलने देती । (स. 105)

فَسَوَّدَ اللَّهُ وَجْهَهُ فِي الدَّارَيْنِ وَ أَسْكَنَهُ بِحُبُوحَةِ الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ مَعَ أَغْدَاءِ سَيِّد... (8)
 الْكُوفِيِّينَ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ آمِينَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ - (ص 119)

अल्लाह तआला इस (मुजद्दिदे बरेलवी) का दोनों जहां में
 मुंह काला करे और इसे हुज़ूर के दुश्मनों के साथ जहन्नम के सब से
 नीचे गढ़े में रखे ।

(9)... येह सब तक्फ़ीरें और ला'नतें बरेलवी और उस के इत्तिबाअ की
 तरफ़ लौट कर क़ब्र में उन के वासिते अज़ाब और ब वक्ते ख़ातिमा उन
 के लिये मूजिबे खुरूजे ईमान व इज़ालए तस्दीक व ईक़ान⁽¹⁾ होंगी
 और क़ियामत में उन के जुम्ला मुत्तबेईन के वासिते उस की मूजिब होंगी
 कि मलाइका हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** से कहेंगे : ⁽²⁾ **إِنَّكَ لَا تَذَرُنِي مَا أَخَذْتُوَا بَعْدَكَ**
 और रसूले मक्बूल **عَلَيْهِ السَّلَام** दज्जाले बरेलवी और उन के इत्तिबाअ को
⁽³⁾ **سُحْقًا سُحْقًا** फ़रमा कर अपने हौजे मौरूद व शफ़अते महमूद से कुत्तों
 से बदतर कर के धुतकार देंगे और उम्मते मर्हूमा के अज़्रो सवाब व
 मनाज़िल व नईम से महरूम किये जाएंगे ।

① ईमान की बरबादी का सबब ② आप नहीं जानते कि इन्होंने ने आप के बा'द
 दीन में क्या क्या ईजाद किया । ③ दूर हो जाओ, दूर हो जाओ

سَوَّدَ اللَّهُ وُجُوهُهُمْ فِي الدَّارَيْنِ وَجَعَلَ قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ. (10)

अल्लाह तआला उन बरेलवियों का मुंह दोनों जहां में काला करे और उन के दिलों को सख्त कर दे तो वोह ईमान न लाएं यहां तक कि अज़ाबे अलीम को देख लें। (अश्शहाबस्साकिब, स. 120)

इन तमाम बद दुआओं और गालियों के जवाब में सिर्फ इतना अर्ज है कि **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** आ'ला हज़रत बरेलवी तो हरगिज़ इस बदगोई के मिस्दाक नहीं हो सकते ⁽¹⁾ अलबत्ता ब मुक़्तज़ाए हदीस ⁽²⁾ आ'ला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** जैसी मुक़द्दस हस्ती के हक़ में ऐसे नापाक कलिमे बोलने वाला **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** दुनिया व आखिरत में अपने कलिमात का खुद मिस्दाक बनेगा। ⁽³⁾ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ

① इस लिये कि आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने ज़ाती अना या किसी दुनियावी गरज़ की बिना पर उ-लमाए देवबन्द पर कुफ़्र का फ़तवा नहीं लगाया बल्कि शरीअते इस्लाम की पासदारी और मन्सबे इफ़्ता की ज़िम्मेदारी के सबब आप हुक्मे कुफ़्र लगाने पर मजबूर हो गए और खुद उ-लमाए देवबन्द भी इस बात को तस्लीम करते हैं कि इन मुतनाज़ेआ इबारात पर अगर इमाम अहमद रज़ा ख़ान साहिब कुफ़्र का फ़तवा न लगाते तो खुद काफ़िर हो जाते। चुनान्चे, मुर्तज़ा हसन दरभंगी साहिब (नाज़िम ता'लीमाते मद्रसए देवबन्द) अपनी किताब “अशहुल अज़ाब” के सफ़हा 13 पर फ़रमाते हैं “अगर (मौलाना अहमद रज़ा) ख़ान साहिब के नज़दीक बा'ज़ उ-लमाए देवबन्द वाक़ेई ऐसे ही थे जैसा कि उन्होंने ने समझा तो (मौलाना अहमद रज़ा) ख़ां साहिब पर उन (उ-लमाए देवबन्द) की तक्फ़ीर फ़र्ज़ थी, अगर वोह उन (उ-लमाए देवबन्द) को काफ़िर न कहते तो खुद काफ़िर हो जाते...क्यूंकि जो काफ़िर को काफ़िर न कहे वोह खुद काफ़िर है। (सफ़ेद व सियाह स. 106)

② بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ٤٠ / ٢٤٨، الحديث: ٦٥٠٢..... ③ और येह **अल्लाह** पर कुछ दुश्वार नहीं।

बा'ज लोग कहते हैं

कि मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहिब बरेलवी ने जो उ-लमाए देवबन्द की इबारात पर उ-लमाए हरमैने तथ्यिबैन से कुफ़्र के फ़तवे हासिल कर के हुसामुल हरमैन में शाएअ किये, इस के जवाब में उ-लमाए देवबन्द ने “हुसामुल हरमैन” के ख़िलाफ़ ताईद में उ-लमाए हरमैने तथ्यिबैन के फ़तवे “अल मुहन्नद” में छापे और तमाम मुल्क में इस की इशाअत की। इस से साबित होता है कि मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहिब ने उ-लमाए देवबन्द की इबारात को तरोड़ मरोड़ कर ग़लत अक़ाइद उन की तरफ़ मनसूब किये थे। जब उ-लमाए देवबन्द की अस्ल इबारात और उन के अस्ली अक़ाइद सामने आए तो उ-लमाए हरमैने तथ्यिबैन ने उन की तस्दीक़ व ताईद फ़रमा दी।

इस का जवाब येह है कि आ 'ला हज़रत फ़ाजिले बरेलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى पर येह इल्ज़ाम क़तअन बे बुन्याद है कि इन्हों ने देवबन्दियों की इबारतों में रद्दो बदल किया है या ग़लत अक़ाइद उन की तरफ़ मनसूब किये हैं बल्कि वाक़िअ येह है कि हुसामुल हरमैन के शाएअ होने के बा 'द देवबन्दी हज़रत ने अपनी जान बचाने के लिये अपनी इबारतों में खुद क़तअ व बुरेद की⁽¹⁾ और अपने अस्ल अक़ाइद छुपा कर उ-लमाए अरबो अजम के सामने अहले सुन्नत के अक़ीदे ज़ाहिर किये जिस पर उ-लमाए दीन ने तस्दीक़ फ़रमाई। चूँकि इस मुख़्तसर रिसाले में तफ़सील की गुन्जाइश नहीं, इस लिये सिर्फ़ एक दलील अपने दा'वे के सुबूत में पेश करता हूँ। मुलाहज़ा कीजिये...

⁽¹⁾ तराश ख़राश की, कमी बेशी की

मुहम्मद अब्दुल वहहाब नजदी के बारे में देवबन्दियों का ए'तिकाद येह है कि वोह बहुत अच्छा आदमी था उस के अकाइद भी उम्दा थे । देखिये “फ़तावा रशीदिय्या” जिल्द 1, स. 111 पर मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही ने लिखा कि....

“मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब के मुक्तदियों को नजदी कहते हैं । उन के अकाइद उम्दा थे । मज़हब उन का हम्बली⁽¹⁾ था अलबत्ता उन के मिज़ाज में शिद्दत थी मगर वोह और उन के मुक्तदी अच्छे हैं मगर हां जो हृद से बढ़ गए उन में फ़साद आ गया और अकाइद सब के मुत्तहिद हैं । आ'माल में फ़र्क़ हनफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, हम्बली का है ।” (रशीद अहमद गंगोही)

नाज़िरीने किराम ने “फ़तावा रशीदिय्या” की इस इबारत से मा'लूम कर लिया होगा कि देवबन्दियों के मज़हब में मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब नजदी के अकाइद उम्दा थे और वोह अच्छा आदमी था लेकिन जब उ-लमाए हरमैने तय्यिबैन ने देवबन्दियों से सुवाल किया कि बताओ ! मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब के मुतअल्लिक तुम्हारा क्या ए'तिकाद है ? वोह कैसा आदमी था ? तो हीला साज़ी से काम ले कर अपना मज़हब छुपा लिया और लिख दिया । “हम उसे ख़ारिजी और बागी समझते हैं ।” मुलाहज़ा हो : अल मुहन्नद, स. 19,20....

“हमारे नज़दीक उन का हुक्म वोही है जो साहिबे दुर्रे मुख़्तार ने फ़रमाया है । इस के चन्द सतर बा'द मरकूम है कि अल्लामा शामी ने इस के हाशिये में फ़रमाया है : “जैसा कि हमारे ज़माने में अब्दुल वहहाब के ताबेईन से सरज़द हुवा के नज्द से निकल कर हरमैने तय्यिबैन पर मुतग़ल्लिब हुवे ।⁽²⁾ अपने को हम्बली मज़हब बताते थे मगर उन का अक़ीदा येह था कि बस वोही मुसलमान हैं और जो उन के अक़ीदे के ख़िलाफ़ हो वोह मुशरिक है और इसी बिना पर उन्होंने ने अहले सुन्नत और उ-लमाए अहले सुन्नत का क़त्ल मुबाह

① इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى के पैरूकार थे ② क़ब्ज़ा कर लिया

समझ रहा था। यहां तक कि **अल्लाह** तआला ने उन की शौकत तोड़ दी।” इन्तहा⁽¹⁾

देखिये यहां अपने मज़हब को कैसे छुपाया और फ़तावा रशीदिय्या” की इबारात को साफ़ हज़म कर गए। येह तो एक नुमूना था। तमाम किताब का येही हाल है कि जान बचाने के लिये अपने मज़हब पर पर्दा डाल दिया। अपनी इबारात को भी छुपा दिया। अब नाज़िरीने किराम खुद फ़ैसला फ़रमाएं कि ख़यानत करने वाला कौन है?

आखिरी सहारा

इस बहस में हमारे मुख़ालिफ़ीन (हज़राते उ-लमाए देवबन्द) का एक आखिरी सहारा येह है कि बहुत से अकाबिर उ-लमाए किराम व मशाइख़े इज़ाम ने उ-लमाए देवबन्द की तक्फ़ीर नहीं की जैसे सनदुल मुहद्दिसीन हज़राते मौलाना इरशाद हुसैन साहिब मुजद्दिदी रामपूरी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** और क़िब्लए आलम हज़रात सय्यिद पीर महर अली शाह साहिब गोलडवी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इसी तरह बा'ज दीगर अकाबिरे उम्मत की कोई तहरीर सुबूते तक्फ़ीर में पेश नहीं की जा सकती।

इस के मुतअल्लिक गुज़ारिश है कि तक्फ़ीर न करने वाले हज़रात में बा'ज हज़रात तो वोह हैं जिन के ज़माने में उ-लमाए देवबन्द की इबाराते कुफ़्रिय्या (जिन में इल्तिज़ामे कुफ़्र मुतयक्किन हो)⁽²⁾ मौजूद ही न थीं जैसे मौलाना इरशाद हुसैन साहिब रामपूरी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ**⁽³⁾ ऐसी सूरत में तक्फ़ीर का सुवाल ही पैदा नहीं होता और बा'ज वोह हज़रात हैं जिन के ज़माने में अगर्चे वोह इबारात

① رد المحتار، کتاب الجهاد، مطلب فی اتباع عبد الوهاب الخوارج فی زماننا ٦٠/٤٠٠

② या'नी ऐसी इबारात जिस में कुफ़्र पाया जाए और इस के काइल को उस कुफ़्र पर इत्तिलाअ भी हो। लुज़ूम व इल्तिज़ाम का फ़र्क़ मा'लूम करने के लिये देखिये सफ़हा नम्बर 23

③ जिन का इन्तिक़ाल 1312 हि. में हो चुका था जब कि कुफ़्रिय्या इबारात पर मन्बी किताबों में से बा'ज तो बा'द में लिखी गई या बा'ज पहले लिखी जा चुकी थीं मगर अम न होने की बिना पर इन उ-लमा की नज़र से नहीं गुज़री।

शाएअ हो चुकी थीं मगर उन की नज़र से नहीं गुज़रीं, इस लिये उन्होंने ने तक्फ़ीर नहीं फ़रमाई ।

हमारे मुख़ालिफ़ीन में से आज तक कोई शख़्स इस अग्र का सुबूत पेश नहीं कर सका कि फ़ुलां मुसल्लम बैनल फ़रीक़ैन बुजुर्ग़⁽¹⁾ के सामने उ-लमाए देवबन्द की इबारात मुतनाज़अति फ़ीहा⁽²⁾ पेश की गई और उन्होंने ने उन को सहीह क़रार दिया या तक्फ़ीर से सुकूत फ़रमाया : इलावा अज़ीं येह कि जिन अकाबिरे उम्मत मुसल्लम बैनल फ़रीक़ैन की अदमे तक्फ़ीर⁽³⁾ को अपनी बराअत की दलील क़रार दिया जा सकता है, मुमकिन है कि उन्होंने ने तक्फ़ीर फ़रमाई हो और वोह मन्कूल⁽⁴⁾ न हुई हो क्यूंकि येह ज़रूरी नहीं कि किसी की कही हुई हर बात मन्कूल हो जाए लिहाज़ा तक्फ़ीर के बा वुजूद अदमे नक्ल के एहतिमाल ने इस आख़िरी सहारे को भी ख़त्म कर दिया । وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

एक ताज़ा शुबे का जवाब

एक मेहरबान ने ताज़ा शुबा येह पेश किया है कि किसी को काफ़िर कहने से हमें कितनी रकअतों का सवाब मिलेगा । हम ख़्वाह मख़्वाह किसी को काफ़िर क्यूं कहें ? तौहीन आमेज़ इबारात लिखने वाले मर गए । इस दुन्या से रुख़्सत हो गए । हदीस शरीफ़ में वारिद है ⁽⁵⁾ اَذْكُرُوا مَوْتَكُمْ بِالْخَيْرِ (तुम अपने मुर्दों को ख़ैर के साथ याद करो) फिर येह भी मुमकिन है कि मरते वक़्त उन्होंने ने तौबा कर ली हो । हदीस शरीफ़ में है । ⁽⁶⁾ اِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنَّوَاتِيْمِ (अमल का दारो मदार ख़ातिमे पर है) हमें क्या मा'लूम कि उन का ख़ातिमा कैसा हुवा ? शायद ईमान पर उन की मौत वाक़ेअ हुई हो ।

① वोह बुजुर्ग़ जिन्हें दोनों फ़रीक़ तस्लीम करते हों ② जिन इबारात की बिना पर झगड़ा है ③ कुफ़्र का फ़तवा न लगाने को ④ ज़बानी या किताबी सूरत में

⑤ (مرقاة المفاتيح شرح مشكاة المصابيح، १/६: تحت الحديث: ३२०२)

⑥ (بخاری، کتاب القدر، باب العمل بالخواتيم، ४/ २७६: الحديث: ६१०७)

इस का जवाब यह है कि कुफ़र व इस्लाम में इमतिyाज करना जरूरिय्याते दीन से है । आप किसी काफ़िर को उग्र भर काफ़िर न कहें मगर जब उस का कुफ़र सामने आ जाए तो बर बिनाए कुफ़र उसे काफ़िर न मानना खुद कुफ़र में मुब्तला होना है । बेशक अपने मुर्दों को खैर से याद करना चाहिये मगर तौहीन करने वालों को मोमिन अपना नहीं समझता । न वोह वाक़ेअ में अपने हो सकते हैं । इस लिये मज़मूने हदीस को इन से दूर का तअल्लुक भी नहीं । हम मानते हैं कि ख़ातिमे पर आ'माल का दारो मदार है मगर याद रखिये ! दमे आख़िर का हाल **अल्लाह** तआला जानता है और उस का मआल भी उस की तरफ़ मुफ़व्वज है ।⁽¹⁾ अहकामे शरअ हमेशा ज़ाहिर पर मुत्तब होते हैं । इस लिये जब किसी शख्स ने **مَعَاذَ اللَّهِ** अलानिय्या तौर पर इल्तिज़ामे कुफ़र कर लिया तो वोह हुक्मे शरई की रू से क़तअन काफ़िर है ता वक़्त येह कि तौबा न करे । अगर कोई मुसलमान ऐसे शख्स को काफ़िर नहीं समझता तो कुफ़र व इस्लाम को **مَعَاذَ اللَّهِ** यक्सां समझना कुफ़रे क़तई है लिहाज़ा काफ़िर को काफ़िर न मानने वाला यकीनन काफ़िर है ।⁽²⁾ और अगर ब फ़र्जे मुहाल हम येह तस्लीम कर लें कि हुज़ूरे अक्दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की शाने अक्दस में गुस्ताख़ियां करने वालों को काफ़िर न कहना चाहिये इस लिये कि शायद उन्होंने ने तौबा कर ली हो और उन का ख़ातिमा बिल खैर हो गया हो तो इसी दलील से मिरज़ाइयों को काफ़िर कहने से भी हमें ज़बान रोकनी पड़ेगी क्यूंकि मिरज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी और उन के मुत्तबिईन सब के लिये येह एहतिमाल पाया जाता है कि शायद उन का ख़ातिमा भी **अल्लाह** तआला ने ईमान पर मुक़द्दर फ़रमा दिया हो । तो हम उन्हें किस तरह काफ़िर कहें लेकिन ज़ाहिर येह है कि मिरज़ाइयों के बारे में येह एहतिमाल कार आमद नहीं तो गुस्ताख़ाने नबुव्वत के हक़ में क्यूंकर मुफ़ीद हो सकता है ।⁽³⁾

① क़ब्र में उन के साथ क्या मुआमला होगा, वोह भी रब तआला जानता है ।

② ٢٦٥/١٤ الفتاوى الرضوية، ③ लिहाज़ा शरअ के उसूल पर अमल करते हुवे गुस्ताख़ी करने वालों पर हुक्मे कुफ़र जारी होगा ।

एक ज़रूरी तम्बीह

बा'ज लोगों को देखा गया है कि वोह तौहीन आमेज़ इबारात पर तो सख़्त नफ़रत का इज़हार करते हैं और बसा अवकात मजबूर हो कर इक़रार कर लेते हैं कि वाकेई इन इबारात में हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तौहीन है लेकिन जब इन इबारात के काइलीन का सुवाल सामने आता है तो साकित और मुतअम्मिल⁽¹⁾ हो जाते हैं और अपनी उस्तादी शागिर्दी, पीरी मुरीदी या रिश्तेदारी व दीगर तअल्लुकाते दुन्यवी खुसूसन कारोबारी, तिजारती, नफ़अ व नुक्सान के पेशे नज़र उन को छोड़ना, उन के कुफ़्र का इन्कार करना⁽²⁾ हरगिज़ गवारा नहीं करते। उन की ख़िदमत में मुख़िलसाना गुज़ारिश है कि वोह कुरआने मजीद की हस्बे ज़ैल आयतों को ठन्डे दिल से मुलाहज़ा फ़रमाएं। **अल्लाह** फ़रमाता है....

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا... (1)﴾

(3) ﴿الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾

तर्जमा : (ऐ ईमान वालो ! अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को अज़ीज़ रखें तो उन को अपना रफ़ीक़ न बनाओ और जो तुम में से ऐसे बाप भाइयों के साथ दोस्ती का बरताव रखेगा तो येही लोग हैं जो ख़ुदा के नज़दीक ज़ालिम हैं)

(2) ﴿قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا... (2)﴾

وَبِجَارَةٍ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِينَ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي

سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ (4)﴾

1 और उन्हें काफ़िर कहने में शशो पन्ज का शिकार हो जाते हैं।

2 या'नी उन के कुफ़्र को मुन्किर व बुरा जानना

4 10 سورة التوبة الآية 24

3 10 سورة التوبة الآية 23

ऐ नबी (ﷺ) आप मुसलमानों से फ़रमा दीजिये कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारे कुम्बेदार और माल जो तुम ने कमाए हैं और सौदागरी जिस के मन्दा⁽¹⁾ पड़ जाने का तुम को अन्देशा हो और मकानात जिन में रहने को तुम पसन्द करते हो । अगर येह चीजें **अल्लाह** और उस के रसूल और **अल्लाह** के रास्ते में जिहाद करने से तुम को ज़ियादा अज़ीज़ हों तो ज़रा सब करो । यहां तक कि **अल्लाह** अपने हुक्म को ले आए और **अल्लाह** तअ़ाला नाफ़रमानों को हिदायत नहीं फ़रमाता)

इन दोनों आयतों का मतलब वाज़ेह है कि अक़ीदे और ईमान के मुआमले में और नेकी के कामों में बसा अवकात ख़वेश व अकारिब,⁽²⁾ कुम्बा और बरादरी, महब्बत और दोस्ती के तअ़ल्लुकात हाइल हो जाया करते हैं । इस लिये इरशाद फ़रमाया कि जिन लोगों को ईमान से ज़ियादा कुफ़्र अज़ीज़ है, एक मोमिन उन्हें किस तरह अज़ीज़ रख सकता है । मुसलमान की शान नहीं कि ऐसे लोगों से रफ़ाक़त और दोस्ती का दम भरे । खुदा और रसूल के दुश्मनों से तअ़ल्लुकात उसतुवार करना यकीनन गुनहगार बनना और अपनी जानों पर जुल्म करना है । जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह और ए'लाए कलिमतुल हक़⁽³⁾ से अगर येह ख़याल मानेअ हो कि कुम्बा और बरादरी छूट जाएगी, उस्तादी शागिर्दी या दुन्यावी तअ़ल्लुकात में ख़लल वाक़ेअ होगा, अम्बाल तलफ़ होंगे या तिजारत में नुक़सान होगा, राहत और आराम के मकानात से निकल कर बे आराम होना पड़ेगा तो फिर ऐसे लोगों को खुदा तअ़ाला की तरफ़ से उस के अज़ाब के हुक्म का मुन्तज़िर रहना चाहिये । जो इस नफ़्स परस्ती, दुन्या तलबी और तन आसानी की वजह से उन पर आने वाला है ।

① सुस्त पड़ जाने ② रिश्तेदार ③ कलिमए हक़ को बुलन्द करने से

अल्लाह तअल्ला के इस वाजेह और रोशन इरशाद को सुनने के बा'द कोई मोमिन किसी दुश्मने रसूल से एक आन के लिये भी अपना तअल्लुक बर करार नहीं रख सकता न उस के दिल में हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तौहीन करने वालों के काफ़िर होने के मुतअल्लिक कोई शक बाकी रह सकता है।

हर्फे आखिर

देवबन्दी मुबल्लिगीन व मुनाज़िरीन आ'ला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खान साहिब बरेलवी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** और इन के हम खयाल उ-लमा की बा'ज़ इबारात बजो'मे खुद ⁽¹⁾ काबिले ए'तिराज़ करार दे कर पेश किया करते हैं।

इस के मुतअल्लिक सरे दस्त ⁽²⁾ इतना अर्ज़ कर देना काफ़ी है कि अगर फ़िल वाक़ेअ ⁽³⁾ उ-लमाए अहले सुन्नत की किताबों में कोई तौहीन आमेज़ इबारात होती तो उ-लमाए देवबन्द पर फ़र्ज़ था कि वोह उन उ-लमा की तक्फ़ीर करते जैसा कि उ-लमाए अहले सुन्नत ने उ-लमाए देवबन्द की इबाराते कुफ़्रिया की वजह से तक्फ़ीर फ़रमाई। लेकिन अग्रे वाक़ेअ ⁽⁴⁾ येह है कि देवबन्दियों का कोई आलिम आज तक आ'ला हज़रत या इन के हम खयाल उ-लमा की किसी इबारात की वजह से तक्फ़ीर न कर सका, न किसी शरई क़बाहत की वजह से इन के पीछे नमाज़ पढ़ने को ना जाइज़ करार दे सका।

देखिये देवबन्दियों की किताब “क़िससुल अकाबिर, मल्फूज़ाते मौलवी अशरफ़ अली साहिब थानवी, शाएअ कर्दा कुतुब खाना अशरफ़िय्या देहली, सफ़हा 99 ता 100” पर है :

“एक शख्स ने पूछा कि हम बरेली वालों के पीछे नमाज़ पढ़े तो नमाज़ हो जाएगी या नहीं ? फ़रमाया (हज़रत हकीमुल उम्मत **مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالَمِي** ने) : हां। हम उन को काफ़िर नहीं कहते।” इस के चन्द सतर बा'द मरकूम है :

- ① या'नी इन इबारात में गुस्ताख़ी का शाइबा तक नहीं लेकिन मुख़ालिफ़ीन बुग़्ज़ो इनाद या कम अक्ली की बिना पर इन्हें गुस्ताख़ाना इबारात करार देते हैं
- ② फ़िल हाल
- ③ हकीक़त में
- ④ हकीक़त येह है

“हम बरेली वालों को अहले हवा⁽¹⁾ कहते हैं । अहले हवा काफ़िर नहीं ।”

इस सिलसिले में मौलवी अशरफ़ अली साहिब थानवी का एक और मजेदार मल्फूज़ मुलाहज़ा फ़रमाएं :

(الافاضات اليومية، جلد پنجم، مطبوعه اشرف المطابع قحانه بھون، صفحہ ۲۲۰ پر مرقوم نمبر ۲۲۵) में मरकूम है :

“एक सिलसिलए गुफ्तगू में फ़रमाया कि देवबन्द का बड़ा जल्सा हुवा था तो उस में एक रईस साहिब ने कोशिश की थी कि देवबन्दियों में और बरेलवियों में सुल्ह हो जाए । मैं ने कहा : हमारी तरफ़ से कोई जंग नहीं । वोह नमाज़ पढ़ाते हैं, हम पढ़ लेते हैं । हम पढ़ाते हैं वोह नहीं पढ़ते तो उन को आमदा करो । (मुज़ाह्न फ़रमाया कि उन से कहो कि आ, मादा ! नर आ गया) हम से क्या कहते हो ।

इस इबारत से येह हकीकत रोज़े रोशन की तरह वाजेह हो गई कि उ-लमाए अहले सुन्नत (जिन्हें बरेलवी कहा जाता है) देवबन्दियों के नज़दीक मुसलमान हैं और उन का दामन हर किस्म के कुफ़्रो शिर्क से पाक है । हत्ता कि देवबन्दियों की नमाज़ उन के पीछे जाइज़ है । इबारते मन्कूलए बाला⁽²⁾ से जहां अस्ल मस्अला साबित हुवा वहां उ-लमाए देवबन्द के मुजद्दिदे आ'ज़म हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ़ अली साहिब⁽³⁾ की तहज़ीब और मख़सूस ज़ेहनिय्यत का नक़्शा भी सामने आ गया, जिस का आईनए दार मौलवी अशरफ़ अली साहिब के मल्फूज़ शरीफ़ का येह जुम्ला है कि :

इन (बरेलियों) से कहो, आ, मादा, नर आ गया ।

① अहले बिदअत ② या'नी थानवी साहिब की वोह इबारत जो अभी नक़ल की गई ③ मुतवफ़्फ़ा 1362 हि.

देवबन्दी हज़रात को चाहिये कि इस जुम्ले को बार बार पढ़ें और अपने अरिफ़े मिल्लत व हकीम के जौ'के हिक़मत व मा'रिफ़त से कैफ़ अन्दोज़ हो कर इस की दाद दें।

मौलवी अशरफ़ अली साहिब थानवी के मल्फ़ूज़ मन्कूलुस्सदर⁽¹⁾ से येह अम्र भी वाजेह हो गया कि बा'ज आ'माल व अक़ाइद मुख़्तलफ़ फ़ीहा⁽²⁾ की बिना पर मुफ़्तियाने देवबन्द का अहले सुन्नत (बरेलवियों) को काफ़िर व मुशरिक क़रार देना और उन के पीछे नमाज़ पढ़ने को नाजाइज़ या मकरूह कहना क़तअन ग़लत, बातिल महज़ और बिला दलील है। सिर्फ़ बुग़्जो इनाद और तअस्सुब की वजह से उन्हें काफ़िर व मुशरिक कहा जाता है वरना दर हकीकत अहले सुन्नत (बरेलवी) हज़रात के अक़ाइद व आ'माल में कोई ऐसी चीज़ नहीं पाई जाती जिस की बिना पर उन्हें काफ़िर व मुशरिक क़रार दिया जा सके या उन के पीछे नमाज़ पढ़ने को मकरूह कहा जा सके।

हमें उम्मीद है कि येह चन्द उमूर जो हम ने पहले बयान किये हैं **إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْعَزِيزُ** आइन्दा चल कर हमारे नाज़िरीन के लिये मशअले राह साबित होंगे।

हक़ व बातिल में इम्तियाज़

अब आइन्दा सफ़हात में देवबन्दी हज़रात और अहले सुन्नत का मस्लक मुलाहज़ा फ़रमा कर हक़ व बातिल में इम्तियाज़ कीजिये।

(1) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी हज़रात के मुक़तदा मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही के शागिर्दें रशीद मौलवी हुसैन अली साहिब साकिन वांभचरां ज़िल्अ मियानवाली और उन के शागिर्द व बा'ज दीगर उ-लमाए

① थानवी साहिब का वोह मल्फ़ूज़ जो पहले ज़िक्र किया गया या'नी "हम बरेली वालों को अहले हवा कहते हैं। अहले हवा काफ़िर नहीं।"

② ऐसे अक़ाइद जिन में सुन्नियों और देवबन्दियों का इख़्तिलाफ़ है।

देवबन्द के नज़दीक **अल्लाह** तआला को अपने बन्दों के कामों का इल्म पहले से नहीं होता बल्कि बन्दों के करने के बा'द **अल्लाह** तआला को उन के कामों का इल्म होता है। देखिये : मौलवी हुसैन अली अपनी तफ़सीर “बुल ग़तुल हैरान”⁽¹⁾ मतबूआ हिमायते इस्लाम प्रेस लाहोर, बारे अव्वल सफ़हा 157 ता 158 पर इरक़ाम फ़रमाते हैं :
 “और इन्सान खुद मुख़्तार है, अच्छे काम करें या न करें और **अल्लाह** को पहले से कोई इल्म भी नहीं होता कि क्या करेंगे बल्कि **अल्लाह** को उन के करने के बा'द मा'लूम होगा और आयाते कुरआनी जैसा कि ⁽²⁾ ﴿وَلَيَعْلَمَ الَّذِينَ﴾ वगैरा भी और अहादीस के अल्फ़ाज़ भी इस मज़हब पर मुन्तबिक हैं।⁽³⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक इल्मे इलाही का मुन्किर ख़ारिज अज़ इस्लाम है। देखिये : शर्हे फ़िक़हे अक्बर सफ़हा 201
 ﴿مَنْ اعْتَقَدَ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ الْأَشْيَاءَ قَبْلَ وَقُوعِهَا فَهُوَ كَافِرٌ وَإِنْ عُدَّ قَاتِلُهُ مِنْ أَهْلِ الْبِدْعَةِ۔﴾⁽⁴⁾

तर्जमा : “जिस शख्स का येह ए'तिकाद हो कि **अल्लाह** तआला किसी चीज़ को उस के वाक़ेअ होने से पहले नहीं जानता, वोह काफ़िर है अगर्चे उस का क़ाइल अहले बिदअत से शुमार किया गया हो।”

आयए करीमा ⁽⁵⁾ ﴿فَلْيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ﴾ और इस किस्म की दीगर आयात व अहादीस में मुजाहिदीन व ग़ैरे मुजाहिदीन और मोअमिनीन

① इसी तफ़सीर के सफ़हा 4 पर आख़िरी सतर येह है। मुलाहज़ा फ़रमाएं : “येह तक़रीरें जो आगे आती हैं हज़रत साहिब (मौलवी हुसैन अली) ने गुलाम ख़ां से क़लमबन्द करवाई हैं और बजाते खुद उन पर नज़र फ़रमाई है।”

(बुल ग़तुल हैरान, स.4, मतबूआ हिमायते इस्लाम, प्रेस लाहोर, बार अव्वल)

② ٤: سورة آل عمران الآية ١٦٧

③ अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं।

④ شرح فقه كبير ص ١٦٣، مطبوعة كراچی

⑤ तो ज़रूर **अल्लाह** सच्चों को देखेगा। (٣: سورة العنكبوت الآية ٢٠)

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

व मुनाफ़िक़ीन का इम्तियाज़ बाहमी मुराद है और मा'ना येह हैं कि

अल्लाह तअ़ाला ने मुनाफ़िक़ीन को मोअमिनीन से और ग़ैर मुजाहिदीन को मुजाहिदीन से अभी तक जुदा नहीं किया। आइन्दा (इल्मे इलाही के मुताबिक़) उन्हें अलग कर दिया जाएगा। यहां “इल्म” से “तमीज़” मुराद है : ﴿فَلْيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ﴾ ब मन्ज़ला ⁽¹⁾ ﴿لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ﴾ ⁽²⁾ में ख़बीस का तय्यिब से जुदा होना मन्सूस है, ऐसे ही इन आयात में (जिन्हें मौलवी हुसैन अली ने नफ़िये इल्मे इलाही की दलील समझा है) मोमिनीन व मुनाफ़िक़ीन और मुजाहिदीन व ग़ैरे मुजाहिदीन का एक दूसरे से अलग होना मज़कूर है। देखिये : बुख़ारी शरीफ़, जिल्द सानी, स. 703 पर मरकूम है।

﴿فَلْيَعْلَمَنَّ اللَّهُ﴾ عِلْمُ اللَّهِ ذَلِكَ إِنَّمَا هِيَ بِمَنْزِلَةِ فَلْيَمِيزَ اللَّهُ كَقَوْلِهِ ﴿لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ﴾.....إِنْتَهَى ⁽³⁾

येह मतलब हरगिज़ नहीं कि **मَعَادُ اللَّهِ** खुदाए अलीमो ख़बीर को इन का इल्म नहीं। **अल्लाह** तअ़ाला तो हर चीज़ को जानता है। ⁽⁴⁾

① **अल्लाह** तअ़ाला जुदा कर देगा।

② इस लिये कि **अल्लाह** गन्दे को सुथरे से जुदा फ़रमा दे (१ सूरह الانفال، الآية २७)

③ بخارى، كتاب التفسير، باب ﴿إِنَّ الَّذِي فَرَضَ﴾ २/२९६، الحديث: ४७७२

④ इस मक़ाम पर येह कहना कि इस इब़ारत में मौलवी हुसैन अली साहिब ने अपना मज़हब बयान नहीं किया है बल्कि मो'तज़िला का मज़हब नक़ल किया है इन्तिहाई मुज़हि़का ख़ैज़ है इस लिये कि जब मौलवी साहिबे मज़कूर ने कुरआनो हदीस को इस मज़हब पर मुन्तबिक़ माना तो इस की हक्कानिय्यत को तस्लीम कर लिया ख़्वाह वोह मो'तज़िला का मज़हब हो। अगर दूसरे का मज़हब, कुरआनो हदीस जिस पर मुन्तबिक़ है इस का इन्कार क्यूं हो सकता है।

(2) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द **अल्लाह** तआला के हक़ में किज़्ब के काइल हैं। देखिये : “जमीमा बराहीने क़ातिआ” मतबूआ सादूरा स. 272 अल हासिल इमकाने किज़्ब⁽¹⁾ से मुराद खुले किज़्ब तहूते कुदरते बारी तआला है” और मौलवी रशीद अहमद गंगोही “फ़तावा रशीदिय्या” जिल्द 1, स. 19 पर तहरीर फ़रमाते हैं :

“पस मज़हबे जमीअ मुहक्किनीने अहले इस्लाम व सूफ़ियाए किराम व उ-लमाए इज़ाम का इस मस्अले में येह है कि किज़्ब दाख़िले तहूते कुदरते बारी तआला है।” 1 हि.⁽²⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत कहते हैं कि किज़्ब के तहूते कुदरते बारी तआला होने से बन्दों के झूट की तख़लीक़ और इस के बाकी रखने या न रखने पर कुदरते खुदावन्दी का होना मुराद है या येह मक्सद है कि **अल्लाह** तआला ब जाते खुद सिफ़ते किज़्ब से मुत्तसिफ़ हो सकता है। अगर पहली शिक़ मुराद है तो इस में आज तक किसी सुन्नी ने इख़िलाफ़ नहीं किया। फिर येह कहना कि इमकाने किज़्ब के मस्अले में शुरूअ से इख़िलाफ़ रहा है। बातिल महज़ और जहालत व ज़लालत है और अगर दूसरी शिक़ मुराद हो तो इस से बढ़ कर शाने उलूहियत में क्या गुस्ताख़ी हो सकती है कि **مَعَاذَ اللَّهِ** **अल्लाह** तआला के मुत्तसिफ़ बिल किज़्ब होने को मुमकिन करार दिया जाए।⁽³⁾ अहले सुन्नत के नज़दीक़ ऐसा अक़ीदा कुफ़्रे ख़ालिस है। **أَعَاذَنَا اللَّهُ مِنْهَا**

(3) देवबन्दियों का मज़हब

कुबरा उ-लमाए देवबन्द का मस्लक़ येह है कि कुरआने करीम ने कुफ़्फ़ार को अपनी फ़साहत व बलाग़त से आजिज़ नहीं

① झूट बोलना मुमकिन होने से मुराद ② या'नी खुदा चाहे तो झूट बोल सकता है.....अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं।

③ या'नी **अल्लाह** तआला के झूटा होने को मुमकिन करार दिया जाए।

किया था और फ़साहत व बलागत से अजिज करना उ-लमाए देवबन्द के नज़दीक कोई कमाल भी नहीं। चुनान्वे, मौलवी हुसैन अली साहिब तल्मीजे रशीद मौलवी रशीद अहमद गंगोही साहिब अपनी किताब “बुल ग़तुल हैरान” मतबूआ हिमायते इस्लाम, प्रेस लाहोर (तब्बु अव्वल) में सफ़हा 12 पर लिखते हैं : “येह ख़याल करना चाहिये कि कुफ़्फ़ार को अजिज करना कोई फ़साहत व बलागत से न था। क्यूँकि कुरआन ख़ास वासिते कुफ़्फ़ारे फुसहा बुलगा के नहीं आया था और येह कमाल भी नहीं।”⁽¹⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि कुरआने करीम ने यकीनन अपनी फ़साहत व बलागत से कुफ़्फ़ारे फुसहाए अरब को अजिज किया था और कुरआन की येह शाने ए'जाज़ कियामत तक बाक़ी रहेगी। जो शख्स इस ए'जाज़े कुरआनी का मुन्किर है और कुरआने करीम की फ़साहत व बलागत को कमाल नहीं समझता वोह दुश्मने कुरआन मुल्हिद व बे दीन ख़ारिज अज़ इस्लाम है।

(4) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द के नज़दीक शैतान और मलकुल मौत का इल्म रसूलुल्लाह ﷺ के इल्म से ज़ियादा है और शैतान और मलकुल मौत के लिये मुहीत ज़मीन की वुसअते इल्म दलीले शरई से साबित है⁽²⁾ और फ़ख़्रे आलम ﷺ के लिये इस इल्म का साबित करना शिर्क है। (देखिये “बराहिने क़ातिआ” मुसन्निफ़ मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी मुसद्दक़ा मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मतबूआ सादूरा, सफ़हा 51)

“अल हासिल ग़ौर करना चाहिये कि शैतान व मलकुल मौत का हाल देख कर इल्मे मुहीते ज़मीन का फ़ख़्रे आलम को

① अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं।

② या'नी शैतान व मलकुल मौत के लिये तमाम रूए ज़मीन के चप्पे चप्पे का इल्म कुरआनो हदीस से साबित है।

ख़िलाफ़े नुसूसे क़तइय्या के बिला दलील महज़ कियासे फ़ासिदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है ? शैतान व मलकुल मौत को येह वुस्अते नस्स⁽¹⁾ से साबित हुई, फ़ख़्रे आलम की वुस्अते इल्म की कौन सी नस्स क़तई है जिस से तमाम नुसूस को रद्द कर के एक शिर्क साबित करता है।⁽²⁾

इसी “बराहिने क़ातिआ” के सफ़हा 52 पर है : “आ’ला इल्लिय्यीन⁽³⁾ में रूहे मुबारक عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ रखना और मलकुल मौत से अफ़ज़ल होने की वजह से हरगिज़ साबित नहीं होता कि इल्म आप का इन उमूर में मलकुल मौत के बराबर भी हो चे जाइका ज़ियादा।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मज़हब येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुक़ाबले में शैतान के लिये मुहीते ज़मीन⁽⁴⁾ का इल्म साबित करना और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ाते अक्दस से इस की नफ़ी करना बारगाहे रिसालत की सख़्त तौहीन है।

अहले सुन्नत के नज़दीक शैतान व मलकुल मौत के मुहीते ज़मीन के इल्म पर कुरआनो हदीस में कोई नस्स⁽⁵⁾ वारिद नहीं हुई। जो शख़्स नस्स का दा’वा करता है वोह कुरआनो हदीस पर निहायत ही नापाक बोहतान बांधता है। इसी तरह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इल्म को नुसूसे क़तइय्या⁽⁶⁾ के ख़िलाफ़ कहना भी कुरआनो हदीस पर इफ़तराए अज़ीम है। कुरआनो हदीस में कोई ऐसी नस्स वारिद नहीं हुई जिस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के हक् में मुहीते ज़मीन के इल्म की नफ़ी होती हो बल्कि कुरआनो हदीस के बेशुमार नुसूस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के लिये हर चीज़ का इल्म साबित है। अहले

① कुरआनो हदीस से ② अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़र्माएं। ③ वोह मक़ाम जहां मोअमिनीन की रूहें कियामत तक रहती हैं ④ पूरी ज़मीन ⑤ कोई आयत या हदीस ⑥ आयात या अहदादीसे मुतवातिरा

सुन्नत का मस्लक है कि किसी मख़्लूक के मुक़ाबले में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये इल्म की कमी साबित करना हुज़ूर की शाने अक़दस में बदतरीन गुस्ताखी है।

(5) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी हज़रात का मज़हब है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को न अपनी अक़िबत⁽¹⁾ का इल्म है, न दीवार के पीछे हुज़ूर जानते हैं। इसी “बराहीने क़ातिआ” के स. 51 पर है :

खुद फ़ख़्रे आलम عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमाते हैं : “وَاللّٰہُ لَا اَدْرِیْ مَا یَفْعَلُ بَیْ وَ لَا بَیْہُمْ” और शैख़ अब्दुल हक़ रिवायत करते हैं कि “मुझ को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं।”⁽²⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मस्लक येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिर्फ़ अपनी ही नहीं बल्कि तमाम मोअमिनीन व कुफ़्फ़ार की भी अक़िबत का हाल जानते हैं। ज़मीनो आस्मान का कोई गोशा निगाहे रिसालत से मख़फ़ी नहीं।

“وَاللّٰہُ لَا اَدْرِیْ” वाली हदीस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अपने और दूसरों के अन्जामे कार से ला इल्म होने पर इस्तिदलाल करना इन्तिहाई मुज़हिका ख़ैज़ है। क्या कुरआने करीम में हुज़ूर और عَسٰی اَنْ یَّجِئَکَ رَبُّکَ مَقَامًا مَّحْضُوٰمًا⁽³⁾ के लिये صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم وَلَا خَرَجَ حَیْزُکَ مِنَ الْاَوَّلٰی⁽⁴⁾ वारिद नहीं हुवा और क्या मोअमिनीन

① आख़िरत में अन्जाम का ② मुकम्मल इबाराते अस्ल किताब के आख़िरी बाब ब उन्वान “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं।

③ करीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी हम्द करें (سورة بنی سرائیل، الآیة ۷۹)

④ और बेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है (سورة الضحی، الآیة ۴)

के हक़ में (1) لَيْدُ خَلِّ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ تَجْرِي مِنْ حَتَّىٰ لَا تَهْرُ خَلِيْفَيْنِ فِيْهَا
 कुरआने मजीद में मौजूद नहीं ? फिर समझ में नहीं आता कि हुज़ूर
 के इल्म की नफी किस बिना पर की जाती हैं ?

हदीस “لَا أَدْرِي” के मा'ना सिर्फ़ येह हैं कि मैं बिगैर ता'लीमे
 खुदावन्दी के महज़ अटकल से नहीं जानता कि मेरे और तुम्हारे
 साथ क्या होगा ।

वोह हदीस जो ब हवालए रिवायते शैख़ अब्दुल हक़ साहिब
 رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ पेश की गई है । इस के मुतअल्लिक़ पहले तो येह अर्ज़ है
 कि शैख़ अब्दुल हक़ साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अगर इस हदीस को लिखा
 है तो वोह बतौरै नक़ल व हिक़ायत के तहरीर फ़रमाया है । इस को रिवायत
 कहना अपनी जहालत का सुबूत देना है । फिर लुत्फ़ येह कि येही शैख़
 अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपनी किताब
 “मदारिजुनुबुव्वत” में इस रिवायत का जवाब देते हुवे फ़रमाते हैं ।

”جَوَابُ شَأْنِ كَيْفِ هَؤُلَاءِ سَخُنُ أَصْلِي نَدَارُ وَرَوَايَتِي بَدَا صَحِيحٌ نَشُدُّهُ“ (2)

ऐसी बे अस्ल रिवायतों से हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के
 कमालाते इल्मी का इन्कार करना अहले सुन्नत के नज़दीक बद
 तरीन जहालत व ज़लालत है ।

❦ (6) देवबन्दियों का मज़हब ❦

देवबन्दी मौलवी साहिबान अशरफ़ अली साहिब थानवी
 का रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इल्मे ग़ैब को ज़ैद व अम्र,
 बच्चों, पागलों, बल्कि तमाम हैवानों और जानवरों के इल्म से तशबीह
 देना मुलाहज़ा फ़रमाइये “हिफ़ज़ुल ईमान” मुसन्निफ़हू मौलवी अशरफ़
 अली साहिब थानवी स. 8”

❶ ताकि ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को बाग़ों में ले जाए जिन
 के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें । (२६,सुरة الفتح, الآية ५)

❷ इस का जवाब येह है कि येह बात सहीह नहीं है और न येह रिवायत सहीह है

فيض القدير، حرف الهزة، १/ १८९... مدارج النبوة، باب در بیان حسن خلقت و جمال، १/ ७، مرکز اهل سنت برکات رضا

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

“फिर येह कि आप की ज़ाते मुक़द्दसा पर इल्मे ग़ैब किया जाना अगर बकौले ज़ैद सहीह हो तो दरयाफ़्त तलब येह अम्र है कि इस ग़ैब से मुराद बा’ज ग़ैब है या कुल ग़ैब ? अगर बा’ज उलूमे ग़ैबिय्या मुराद हैं तो इस में हुज़ूर ही की क्या तख़्सीस है ? ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ैद व अम्र बल्कि हर सबी⁽¹⁾ व मजनून बल्कि जमीअ हैवानात व बहाइम⁽²⁾ के लिये भी हासिल है ।⁽³⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इल्म तमाम काइनात के इल्म से मुमताज़ है और इस किस्म की तशबीह शाने नबुव्वत की शदीद तरीन तौहीन व तन्कीस है ।

(7) देवबन्दियों का मज़हब

हज़राते उ-लमाए देवबन्द के नज़दीक नमाज़ में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़याल मुबारक दिल में लाना बैल और गधे के तसव्वुर में गर्क हो जाने से बदरजहा बदतर है ।

देखिये उ-लमाए देवबन्द की मुसल्लम व मुसद्दका किताब⁽⁴⁾ “सिराते मुस्तक़ीम” स. 86 मतबूआ मुजतबाई देहली
 “أَرْوَسُوهُ زَنَا خِيَالِ مُجَامَعَتِ زَوْجِهِ خَوْدِ بَهْتَرِ أَنتَ وَصَرَفَ هِمَّتِ بَسُوئے شَيْخٍ وَأَمْتَالِ أَنْ أَرْوَسُوهُ دَاسْتِ”⁽⁵⁾

گو جناب رسالت مآب باشند بچندین مرتبہ از استغراق در صورت گاو خرخوداست”

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मस्लक में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़याले मुबारक तक्मीले नमाज़ का मौकूफ़े अलैह है⁽⁶⁾ और
 ① बच्चे ② जानवरों और चोपायों ③ अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं । ④ उ-लमाए देवबन्द की तस्दीक़ शुदा किताब ⑤ अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं । ⑥ या’नी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का खयाले मुबारक आए बिगैर नमाज़ ज़ाहिरी व बातिनी लिहाज़ से मुकम्मल नहीं होगी

हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सूरते करीमा को दिल में हाज़िर करना मक्सदे इबादत के हुसूल का ज़रीआ और वसीलए उज़्मा है ⁽¹⁾ और हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का खयाल मुबारक दिल में लाने को गाए बैल के तसव्वुर में ग़र्क हो जाने से बदतर कहना हुजूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की वोह तौहीने शदीद है जिस के तसव्वुर से मोमिन के बदन पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और अहले सुन्नत ऐसा कहने वाले को जहन्नमी और मलज़न तसव्वुर करते हैं ।

(8) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दियों के मुक़तदर उ-लमा ⁽²⁾ के नज़दीक लफ़्ज़ “रहूमतुल्लिल अलमीन” रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सिफ़ते ख़ास्सा नहीं । “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा दुवुम, स. 9 पर तहरीर फ़रमाते हैं :

इस्तिफ़ता : क्या फ़रमाते हैं उ-लमाए दीन कि लफ़्ज़ “रहूमतुल्लिल अलमीन” मख़सूस आं हज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से है या हर शख़्स को कह सकते हैं ?

अल जवाब : लफ़्ज़ “रहूमतुल्लिल अलमीन” सिफ़ते ख़ास्सा रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) की नहीं है ।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक “रहूमतुल्लिल अलमीन” ख़ास रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का वस्फ़े जमील है इस में दूसरे को शरीक करना हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की शान को घटाना है ।

¹ या'नी हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का खयाले मुबारक कुर्बे इलाही का ज़रीआ बनेगा न कि शिर्क का सबब ² मुअज़्ज़ज़ उ-लमा

(9) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द के नज़दीक कुरआने करीम में “खातमुन्नबिय्यीन” के मा’ना आखिरी नबी मुराद लेना अ़वाम का ख़याल है।

मुलाहज़ा फ़रमाइये : तहज़ीरुन्नास, स. 3 मुसन्निफ़हू मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब नानोतवी बानिये मद्रसए देवबन्द

“बा’द हम्दो सलात के क़ब्ल अर्जे ज़वाब येह गुज़ारिश है कि अव्वल मा’ना “खातमुन्नबिय्यीन” मा’लूम करने चाहीयें ताकि फ़हमे ज़वाब में कुछ दिक्कत न हो। सो अ़वाम के ख़याल में तो रसूलुल्लाह ﷺ का ख़ातिम होना बर्इ मा’ना है⁽¹⁾ कि आप का ज़माना अम्बियाए साबिक के ज़माने के बा’द है और आप सब में आखिरी नबी हैं मगर अहले फ़हम पर रोशन होगा कि तक्दुम या तअख़बुरे ज़मानी⁽²⁾ में बिज़्ज़ात कुछ फ़ज़ीलत नहीं फिर मक़ामे मदह में ﴿وَلَكِنَّ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ﴾ फ़रमाना⁽³⁾ इस सूरत में क्यूंकर सहीह हो सकता है ?”⁽⁴⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का अक़ीदा येह है कि कुरआने करीम में जो लफ़्ज़ “खातमुन्नबिय्यीन” वारिद हुवा है। इस के मा’ना मन्कूले मुतवातिर “आखिरुन्नबिय्यीन” ही हैं।⁽⁵⁾ जो शख़्स इस को अ़वाम का ख़याल क़रार देता है वोह कुरआने करीम के मा’नाए मन्कूले मुतवातिर का मुन्किर है।⁽⁶⁾

① अ़वाम हुज़ूर को आखिरी नबी इन मा’नों में समझते हैं ② किसी का ज़माना पहले होना या बा’द में होना ③ जैसा कि “پ ۲۲ سورة الاحزاب، الآية ۴۰” में फ़रमाया गया। ④ अस्ल किताब की मुकम्मल इबारत इसी किताब के आखिरी बाब ब उन्वान “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं। ⑤ अहदीसे मुतवातिरा में येही मा’ना वारिद हुवे हैं ⑥ जैसा कि अश्शिफ़ा, हिस्सा दुवुम, स. 285, मतबूआ मर्कजे अहले सुन्नत बरकाते रज़ा में है।

(10) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी हज़रात का मज़हब येह है कि अगर बिलफ़र्ज ज़मानए नबवी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बा'द भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी हुज़ूर की ख़ातमिय्यत में कुछ फ़र्क न आएगा। देखिये इसी “तहज़ीरुन्नास” के सफ़हा 28 पर मरकूम है।

“अगर बिलफ़र्ज बा'दे ज़मानए नबवी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी ख़ातमिय्यते मुहम्मदी में कुछ फ़र्क न आएगा चे जाएका आप के मुआसिर⁽¹⁾ किसी और ज़मीन में या फ़र्ज कीजिये इसी ज़मीन में कोई और नबी तजवीज़ किया जाए।”⁽²⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

येह है कि अगर ब फ़र्जे मुहाल बा'द ज़मानए नबवी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कोई नबी पैदा हो तो ख़ातमिय्यते मुहम्मदी में ज़रूर फ़र्क आएगा। जैसा कि ब फ़र्जे मुहाल दूसरा इलाह⁽³⁾ पाया जाए तो **अब्बाह** तआला की तौहीद में ज़रूर फ़र्क आएगा जो शख्स इस फ़र्क का मुन्किर है वोह न तौहीदे बारी को समझा न ख़त्मे नबुव्वत पर ईमान लाया।

(11) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ-लमा के नज़दीक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को उर्दू ज़बान का इल्म उस वक़्त हासिल हुवा जब हुज़ूर का मुआमला उ-लमाए देवबन्द से हो गया। इस से पहले हुज़ूर उर्दू ज़बान न जानते थे। देखिये “बराहीने क़ातिआ” में मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी सफ़हा 26 पर लिखते हैं :

“मद्रसए देवबन्द की अज़मत हक़ तआला की बारगाह में बहुत है कि सदहा आलिम यहां से पढ़ कर गए और ख़ल्के कसीर को

① आप की हयाते तय्यिबा में ② अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाइयें। ③ दूसरा मा'बूद, खुदा

जुल्मात व ज़लालत से निकाला। येही सबब है कि एक सालेह⁽¹⁾

फ़ख़्रे आलम عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशरफ़ हुवे तो आप को उर्दू में कलाम करते देख कर पूछा कि आप को येह कलाम कहां से आ गई? आप तो अरबी हैं! फ़रमाया कि जब से उ-लमाए मद्रसए देवबन्द से हमारा मुआमला हुवा हम को येह ज़बान आ गई।

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ इस से रुत्बा इस मद्रसे का मा'लूम हुवा।"⁽²⁾

अहले सुन्नत क़ मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अव्वल अम्र से हर ज़बान के आलिम हैं जो शख्स हुज़ूर के लिये किसी ज़बान के इल्म को इस अहले ज़बान से मुआमला होने के बा'द साबित करे और उस का मस्लक येह हो कि हुज़ूर को येह ज़बान उस वक़्त आ गई जब इस ज़बान वालों से हुज़ूर का मुआमला हुवा। या'नी इस से पहले हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام इस ज़बान के आलिम न थे, वोह शख्स कमालाते रिसालत को मजरूह कर रहा है।

(12) देवबन्दियों क़ मज़हब

देवबन्दी हज़रात को ऐसी ख़्वाबें नज़र आती हैं जिन में वोह (مَعَادَ اللَّهِ) रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को गिरता हुवा देखते हैं और फिर हुज़ूर को गिरने से रोकते और बचाते हैं। दलील के तौर पर मौलवी हुसैन अली साहिब शागिर्दे रशीद मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही का इरशाद “बुल ग़तुल हैरान, स. 8” पर देखिये :

وَرَأَيْتُ أَنَّهُ يَسْقُطُ فَأَمْسَكْتُهُ وَأَعَصَمْتُهُ مِنَ السَّقُوطِ
 रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को देखा कि हुज़ूर गिर रहे हैं तो मैं ने हुज़ूर को रोका और गिरने से बचा लिया।⁽³⁾

① नेक शख्स ②-③ अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मस्लक है कि ज़ाते जनाबे रिसालते मआब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** को ख़्वाब में देख कर हुज़ूर के इलावा कोई दूसरी चीज़ मुराद नहीं ली जा सकती जिस ने हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** को देखा उस ने ला रैब हुज़ूर ही को देखा।⁽¹⁾ ऐसी सूरत में जो शख्स येह कहे कि **(مَعَادَ اللّٰہِ)** मैं ने हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** को गिरता हुवा देख कर हुज़ूर को गिरने से बचा लिया, वोह बारगाहे रिसालत में दरीदा दहन निहायत गुस्ताख़ है।

(13) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द के मुक्तदा मौलवी अशरफ़ अली साहिब थानवी ने न सिर्फ़ ख़्वाब बल्कि बेदारी की हालत में भी **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا وَمَوْلَانَا اَشْرَفْ عَلٰی** और **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْرَفْ عَلٰی رَسُوْلُ اللّٰهِ** पढ़ने को अपने मुत्तबए सुन्नत होने का इशारए गैबी क़रार दे कर पढ़ने वाले की हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई। देखे : रुइदादे मुनाज़रा “गया” अल फुरक़ान जिल्द 3, नम्बर 12 के सफ़हा 75 पर देवबन्दी हज़रात के माया नाज़ मुनाज़िर मौलवी मन्ज़ूर अहमद साहिब संभली नो’मानी तहरीर फ़रमाते हैं :

“येह पंजाब के रहने वाले हैं। इन्हों ने मौलाना थानवी को एक तवील ख़त लिखा है अख़ीर में अपने ख़्वाब का वाकिआ इन अल्फ़ाज़ में लिखते हैं :

“कुछ अर्से के बा’द ख़्वाब देखता हूं कि कलिमा शरीफ़ **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْرَفْ عَلٰی رَسُوْلُ اللّٰهِ** पढ़ता हूं लेकिन **مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللّٰهِ** की जगह हुज़ूर⁽²⁾ का नाम लेता हूं। इतने में दिल के अन्दर ख़याल पैदा हुवा कि तुझ

① जिस ने मुझे ख़्वाब में देखा तहक़ीक़ उस ने मुझे ही देखा इस लिये कि शैतान मेरी सूरत नहीं अपना सकता ۱۱۰، الحديث: ۵۷/۱، البخاری، کتاب العلم، باب اثم من کذب علی النبی ﷺ

② अशरफ़ अली थानवी साहिब

से ग़लती हुई कलिमा शरीफ़ के पढ़ने में। इस को सहीह पढ़ना चाहिये।
इस खयाल से दोबारा कलिमा शरीफ़ पढ़ता हूं। दिल पर तो येह है

कि सहीह पढ़ा जाए लेकिन ज़बान से बे साख़्ता बजाए रसूलुल्लाह
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नाम के “अशरफ़ अली” निकल जाता है
हालांकि मुझ को इस बात का इल्म है कि इस तरह दुरुस्त नहीं लेकिन
बे इख़्तियार ज़बान से येही कलिमा निकलता है। दो तीन बार जब
येही सूरत हुई तो हुज़ूर को अपने सामने देखता हूं और भी चन्द शख्स
हुज़ूर के पास थे लेकिन इतने में मेरी येह हालत हो गई कि मैं खड़ा
खड़ा ब वजहे इस के कि रिक्कत तारी हो गई ज़मीन पर गिर पड़ा
और निहायत जोर के साथ एक चीख़ मारी और मुझ को मा'लूम होता
था कि मेरे अन्दर कोई ताक़त बाकी नहीं रही इतने में बन्दा ख़्वाब से
बेदार हो गया लेकिन बदन में बदस्तूर बे हिंसी थी और वोह असरे
ना ताक़ती बदस्तूर था लेकिन जब हालते बेदारी में कलिमा शरीफ़
की ग़लती पर खयाल आया तो इस बात का इरादा हुवा कि इस
खयाल को दिल से दूर किया जाए। इस वासिते कि फिर कोई ऐसी
ग़लती न हो जाए। बई खयाल बन्दा बैठ गया और फिर दूसरी
करवट लेट कर कलिमा शरीफ़ की ग़लती के तदारुक में रसूलुल्लाह
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूं लेकिन फिर भी येह
कहता हूं **اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا وَمَوْلَانَا أَشْرَفَ عَلَى** हांलांकि अब बेदार हूं ख़्वाब में
नहीं लेकिन बे इख़्तियार हूं, मजबूर हूं। ज़बान अपने काबू में नहीं।”

इस ख़त में येह जो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَشْرَفَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ** और
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا وَمَوْلَانَا أَشْرَفَ عَلَى पढ़ने का वाक़िआ लिखा हुवा है। इस के
जवाब में मौलवी अशरफ़ अली साहिब थानवी ने जो इबारत लिखी
वोह हम इसी रूइदाद मुनाज़रा “गया” से नक़ल करते हैं। मुलाहज़ा
फ़रमाइये : रूइदाद मुनाज़रा “गया” स. 87

“इस वाक़िए में तसल्ली थी कि जिस की तरफ़ तुम रुजूअ
करते हो वोह **بِعَوْنِ تَعَالَى** मुत्तबए सुन्नत है।”

अहले सुन्नत का मज़हब

और ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَشْرَفَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ“ अहले सुन्नत के नज़दीक ”اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا وَمَوْلَانَا أَشْرَفَ عَلَى“ के ख़बीस और नापाक अल्फ़ाज़ कलिमाते कुफ़्र हैं।

ख़्वाब या बेदारी में येह अल्फ़ाज़ पढ़ना, पढ़ने वाले के मग़ज़ूबे इलाही⁽¹⁾ होने की दलील है। जो शख्स बे इख़्तियार इन को अदा करता है वोह ग़लबए शैतानी से मग़लूब हो कर बे इख़्तियार हुवा है। **अब्बाह** तअ़ाला की तरफ़ इस सल्बे इख़्तियार की निस्बत करना और येह समझना कि **अब्बाह** तअ़ाला ने “अशरफ़ अली थानवी” के मुतबए सुन्नत होने की तरफ़ इशारा करने के लिये इस के इख़्तियार को सल्ब कर लिया था और **अब्बाह** तअ़ाला की तरफ़ से येह कलिमाते कुफ़्रिया उस की ज़बान पर जारी कराए गए थे, मज़ीद ग़ज़बे इलाही और अज़ाबे खुदावन्दी का मूजिब है। ⁽²⁾ **سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ** अहले सुन्नत के नज़दीक हालते मज़कूरा अग़वा और इज़लाले शैतान⁽³⁾ से है। जिस से तौबा करना फ़र्ज़ है। अगर खुदा न ख़्वास्ता काइल ऐसी हालत में तौबा से पहले मर जाए तो नारी और जहन्नमी करार पाएगा।

(14) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ-लमा के पेशवा मौलवी हुसैन अली साहिब (साकिनवां भचरां ज़िल्अ मियानवाली) के नज़दीक रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ने हज़रते जैद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की मुतल्लक़ा⁽⁴⁾ हज़रते जैनब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** से बिगैर इद्दत गुज़ारे निकाह कर लिया। “बुल ग़तुल हैरान” स. 267 पर है :

① जिस पर **अब्बाह** तअ़ाला का ग़ज़ब हुवा हो। ② “इलाही पाकी है तुझे, येह बहुत बड़ा बोहतान है।” ③ शैतान के बहकाने और गुमराह करने ④ जिन्हें हज़रते जैद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने तलाक़ दी थी।

“और कब्बुदुखूल तलाक़ दो तो उस औरत पर इद्दत लाज़िम न होगी जैसा कि ज़ैनब को तलाक़ कब्बुदुखूल दी गई और रसूलुल्लाह **ﷺ** ने उस से बिला इद्दत निकाह कर लिया।⁽¹⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मज़हब में येह कहना हुज़ूर **ﷺ** पर इफ़तरा है कि हुज़ूर **ﷺ** ने इद्दत गुज़ारने से पहले हज़रते ज़ैनब से निकाह कर लिया बल्कि हकीकत येह है कि हुज़ूर **ﷺ** ने उन की इद्दत गुज़रने से पहले पैग़ामे निकाह तक नहीं भेजा जैसा कि “मुस्लिम शरीफ़” जिल्द 1, स. 460 पर हदीस वारिद है :

”لَمَّا انْقَضَتْ عِدَّةُ زَيْنَبَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَزَيْنَبَ فَأَذْكُرَهَا عَلَى..... الْحَدِيثِ“⁽²⁾

या'नी जब हज़रते ज़ैनब **رضي الله تعالى عنها** की इद्दत पूरी हो गई तो रसूलुल्लाह **ﷺ** ने हज़रते ज़ैद से फ़रमाया कि तुम ज़ैनब को मेरी तरफ़ से निकाह का पैग़ाम दो लिहाज़ा जो शख्स हुज़ूर पर येह इफ़तरा करता है, वोह बारगाहे रिसालत का सख़्त तरीन दुश्मन और बद तरीन गुस्ताख़ है।

(15) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ-लमा के मज़हब में हुज़ूर **ﷺ** की ता'ज़ीम बड़े भाई की सी करनी चाहिये। “तक्वियतुल ईमान” के सफ़हा नम्बर 22 पर है :

① मुतल्लका औरत की इद्दत येह है कि अगर वोह हामिला हो तो वज़ए हम्मल (या'नी बच्चे की विलादत हो जाना) और अगर ना बालिगा या आइसा (या'नी पचपन साला या इस से ज़ाइद उम्र) की है तो उस की इद्दत हिजरी सिन के हिसाब से तीन महीने होगी वरना हैज़ वाली हो तो तीन हैज़ होगी।

②.....مسلم، كتاب النكاح، باب زواج زينب بنت جحش، ص ٧٤٥، الحديث: ١٤٢٨

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

“सब इन्सान आपस में भाई हैं। जो बड़ा बुजुर्ग हो, वोह बड़ा भाई है। सो उस की बड़े भाई की सी ता'जीम कीजिये।”

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मज़हब में जिस तरह तमाम हज़रते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अपनी उम्मतों के रूहानी बाप हैं, इसी तरह हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी अपनी उम्मत के रूहानी बाप हैं और इसी लिये **अल्लाह** तआला ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अज़वाजे मुतहहरात को “उम्माहातुल मोअमिनीन” फ़रमाया।⁽¹⁾ लिहाज़ा हज़रते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام बिल ख़ुसूस हज़रते मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ता'जीम व तकरीम उन की नबुव्वत व रिसालत और उबुव्वते रूहानिय्या⁽²⁾ के मुआफ़िक़ की जावेगी। बड़े भाई की तरह उन की ता'जीम करना, उन की शान को घटाना और उन के हक़ में बदतरीन क़िस्म की तौहीन व तन्कीस का मुर्तकिब होना है।

(16) देवबन्दियों का मज़हब

हयातुनबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुतअल्लिक़ मौलवी इस्माईल साहिब देहलवी मुसन्निफ़े “तक्वियतुल ईमान” का अक़ीदा येह है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ मर कर मिट्टी में मिल गए। मुलाहज़ा फ़रमाइये : “तक्वियतुल ईमान” स. 34 पर मरकूम है : “या'नी मैं भी⁽³⁾ एक दिन मर कर मिट्टी में मिलने वाला हूँ।”⁽⁴⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام बा वुजूदे मौते आदी तारी होने के हयाते हकीकी⁽⁵⁾ के साथ ज़िन्दा होते हैं और उन के अजसामे करीमा सहीह व सालिम होते हैं।

① प २१ سورة الاحزاب, الآية १ ② रूहानी बाप ③ या'नी नबिय्ये करीम

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ④ अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं। ⑤ बिल्कुल दुन्यावी ज़िन्दगी की तरह

हदीस शरीफ में वारिद है :

(1) ”إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللَّهِ حَتَّى يُرْزَقَ.“ (مشکوٰۃ، جلد ۱، صفحہ ۱۲)

लिहाजा हुजूर सय्यदे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हक में येह ए'तिकाद रखना कि مَعَاذَ اللَّهِ हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मर कर मिट्टी में मिल गए, सरीह गुमराही है और हुजूर की तरफ मन्सूब कर के येह कहना कि مَعَاذَ اللَّهِ मैं भी मर कर मिट्टी में मिलने वाला हूं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर इफ़तराए महज़ (2) और शाने अक्दस में तौहीने सरीह है। الْعِيَاذُ بِاللَّهِ

(17) देवबन्दियों का मज़हब

मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब नानोतवी बानिये मद्रसए देवबन्द के नज़दीक जिस तरह हुजूर नबिये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुत्तसिफ़ ब हयात बिज़्ज़ात हैं बिल्कुल इसी तरह مَعَاذَ اللَّهِ दज्जाल भी मुत्तसिफ़ ब हयात बिज़्ज़ात है और जिस तरह हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की आंख सोती थी, दिल नहीं सोता था इसी तरह दज्जाल की भी आंख सोती है दिल नहीं सोता।

मुलाहज़ा फ़रमाइये मौलवी साहिबे मज़कूर अपनी किताब “आबे हयात” मतबअ क़दीमी वाक़ेअ देहली, स. 169 पर लिखते हैं :

चुनान्चे, आं हज़रत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कलाम इस हैचमदान (3) की तस्दीक करता है। फ़रमाते हैं :

① बेशक **अल्लाह** ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि वोह अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के बदनों को खाए, इस लिये **अल्लाह** का नबी ज़िन्दा है

और उसे रिज़क भी दिया जाता है। ۱/ ۲۶۵، الحديث: ۱۳۶۶

② फ़क़त झूटा इल्ज़ाम ③ बे इल्म या'नी कासिम नानोतवी

पेशक़श : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

“تَنَامُ عَيْنَايَ وَلَا يَنَامُ قَلْبِي”⁽¹⁾ लेकिन इस क़ियास पर दज्जाल का हाल भी येही होना चाहिये । इस लिये कि जैसे रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ब वजहे मन्शाइय्यते अरवाहे मोअमिनीन⁽²⁾ जिस की तहक्कीक़ से हम फ़ारिग़ हो चुके हैं, मुत्तसिफ़ ब हयात बिज्ज़ात हुवे ऐसे ही दज्जाल भी ब वजहे मन्शाइय्यते अरवाहे कुफ़फ़ार⁽³⁾ जिस की तरफ़ हम इशारा कर चुके हैं, मुत्तसिफ़ ब हयात बिज्ज़ात होगा और इस वजह से उस की हयात क़ाबिले इनफ़िकाक न होगी और मौत व नौम में इस्तितार होगा । इन्किताअ न होगा और शायद येही वजह मा’लूम होती है कि इब्ने सियाद जिस के दज्जाल होने का सहाबा को ऐसा यकीन था कि क़सम खा बैठे थे । अपनी नौम का वोही हाल बयान करता है जो रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अपनी निस्बत इरशाद फ़रमाया या’नी ब शहादते अहादीस वोह भी येही कहता था कि “تَنَامُ عَيْنِي وَلَا يَنَامُ قَلْبِي”

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के अ़कीदे में हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का मुत्तसिफ़ ब हयात बिज्ज़ात होना हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** का ऐसा कमाल है जो हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** के सिवा किसी दूसरे को हासिल नहीं है, चे जाएका दज्जाले लईन⁽⁴⁾ के लिये साबित हो ।

अहले सुन्नत तमाम अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** की हयात के क़ाइल हैं मगर बिज्ज़ाते हयात से मुत्तसिफ़ होना हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ही की शान है । इसी तरह आंख का सोना और दिल का न सोना भी ऐसी

① अबुदावुद, کتاب الطهارة, باب الوضوء, من النوم, १/ १००, الحديث: २०२

② मोअमिनीन की रूहों का सबब या वजह

③ कुफ़फ़ार की रूहों का सबब या वजह ④ ला’नती दज्जाल

सिफत है जो अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के सिवा किसी दूसरे के लिये किसी दलीले शरई से साबित नहीं। चे जाएका कौले दज्जाल को दलीले शरई तस्लीम करते हुवे उस के लिये भी येह वस्फे नबुव्वत साबित कर दिया जाए। अहले सुन्नत के मस्लक में इस्लाम ह्यात और मौत कुफ्र है इस लिये दज्जाल को अगर मन्शाए अरवाहे कुफ्र माना जाए तो वोह मम्बए कुफ्र होने की वजह से मुत्तसिफ ब ह्यात बिज्जात होगा। अल हासिल हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के खुसूसी अवसाफ दज्जाल के लिये साबित करना مَعَادُ اللَّهِ तन्कीसे शाने नबुव्वत⁽¹⁾ है।

(18) देवबन्दियों का मजहब

(1) “तक्वियतुल ईमान” में मौलवी इस्माईल साहिब देहलवी ने स. 9 पर लिखा है : “**अल्लाह** के सिवा किसी को न मान और उस से न डर।”

(2) “तक्वियतुल ईमान” के स. 10 पर तहरीर किया :

“हमारा जब खालिफ **अल्लाह** है और उस ने हम को पैदा किया तो हम को भी चाहिये कि अपने हर कामों पर उसी को पुकारें और किसी से हम को क्या काम ? जैसे जो कोई एक बादशाह का गुलाम हो चुका तो वोह अपने हर काम का अलाका उसी से रखता है दूसरे बादशाह से भी नहीं रखता और किसी चोहड़े चमार का तो क्या जिक्र ?”⁽¹⁾

(3) “तक्वियतुल ईमान” स. 14 पर तहरीर है :

“उस के दरबार में उन का⁽³⁾ तो येह हाल है कि जब वोह कुछ हुक्म फरमाता है तो वोह सब रो’ब में आ कर बे ह्वास हो जाते हैं।”

(4) “तक्वियतुल ईमान” स. 16 पर लिखते हैं :

① मन्सबे नबुव्वत की शान व अज़मत को घटाना है ② अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फरमाएं। ③ अम्बियाए किराम का

“उस शहनशाह की तो येह शान है कि एक आन में चाहे तो करोड़ों नबी और वली, जिन्न और फिरिश्ते, जिब्राईल और मुहम्मद

ﷺ की बराबर पैदा कर डाले ।”

(5) “तक्वियतुल ईमान” के स. 22 पर है :

“जिस का नाम मुहम्मद या अली है वोह किसी चीज़ का मालिको मुख्तार नहीं ।”(1)

(6) “तक्वियतुल ईमान” के स. 22 पर है :

“रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता ।”

अहले सुन्नत का मज़हब

(1)...अहले सुन्नत के नज़दीक **अल्लाह** के सिवा किसी को न मानना या'नी येह अक़ीदा रखना कि सिर्फ **अल्लाह** पर ईमान लाना चाहिये और किसी पर ईमान लाना जाइज़ नहीं कुफ़्रे ख़ालिस है । देखिये तमाम उम्मत मुस्लिमा का मुत्तफ़िका अक़ीदा है कि जब तक **अल्लाह**, मलाइका⁽²⁾ आस्मानी किताबों, **अल्लाह** के तमाम रसूलों, यौमे आख़िरत और ख़ैरो शर के मिन्जानिबिल्लाह मुक़द्दर होने⁽³⁾ और मरने के बा'द उठने पर ईमान न लाए, उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता ।

(2)...हर सुन्नी मुसलमान का अक़ीदा है कि हमारे तमाम कामों में मुत्तसरिफ़े हकीकी⁽⁴⁾ सिर्फ **अल्लाह** तआला है लेकिन इस का येह मतलब नहीं कि **अल्लाह** तआला के नबियों, रसूलों और उस के मुक़र्रब बन्दों से हमारा कोई काम ही न हो, किताब व सुन्नत में बे शुमार नुसूस वारिद हैं, जिन का मफ़ाद येह है कि हमें अपने कामों में महबूबाने खुदावन्दी की तरफ़ रुजूअ करना चाहिये ।

① अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं ।

② फिरिश्तों ③ अच्छी या बुरी तकदीर **अल्लाह** तआला की तरफ़ से है

④ हकीकी तसरूफ़ करने वाला

देखिये : **अल्लाह** तआला फरमाता है : (1) **وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ**

“काश वोह लोग जिन्हों ने अपनी जानों पर जुल्म किया, आप के पास आ जाते ।”

दूसरी जगह **अल्लाह** तआला ने फरमाया :

(2) ﴿مَسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۚ﴾

“अगर तुम नहीं जानते तो अहले जिक्र से दरयाफ्त कर लो ।”

देखिये इन दोनों आयतों में **अल्लाह** तआला ने अपने मुक़र्रब बन्दों से हमारा काम वाबस्ता फरमाया है या नहीं ? इस इबारत में जो तमाम मा सिवा **अल्लाह** (3) को चोहड़े चमार से ता'बीर किया गया है, अहले सुन्नत के नज़दीक येह मुक़र्रबीने बारगाहे ईज़दी की शान में बदतरीन गुस्ताखी है । **نَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذٰلِكَ**

(3) अहले सुन्नत के नज़दीक अम्बियाए किराम या मलाइकए मुक़र्रबीन पर ख़ौफ़ व ख़शियते इलाही का तारी होना तो हक़ है मगर उन्हें बे ह्वास कहना उन की शान में बे बाकी और गुस्ताखी है । **اَلْعِيَاذُ بِاللّٰهِ**

(4) अहले सुन्नत के नज़दीक हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की मिस्ल व नज़ीर के पैदा करने से कुदरत व मशियते ईज़दी (4) का मुतअल्लिक होना मुहाले अक्ली है क्यूंकि हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पैदाइश में तमाम अम्बिया से हकीकतन अव्वल हैं और बिअसत में तमाम अम्बिया से आखिर और खातमुनबिय्यीन हैं । ज़ाहिर है कि जिस तरह अव्वले हकीकी में तअद्दुद मुहाल बिज़्ज़ात है इसी तरह

1 سورة النساء الآية १६ 2 سورة الانبياء الآية १७ 3 **अल्लाह** के सिवा हर चीज़ (जिस में अम्बियाए किराम, औलियाए उज़्ज़ाम व मलाइकए मुक़र्रबीन भी दाख़िल हैं) 4 **अल्लाह** तआला की कुदरत

खातमुन्नबिय्यीन में भी तअहुदे मुमतनिअ लिज्जातिही है और इस बिना पर कुदरत व मशिय्यते खुदावन्दी का नाक़िस होना लाज़िम नहीं आता बल्कि इसी अग्रे मुहाल⁽¹⁾ का क़बीह व मज़मूम होना साबित होता है कि वोह इस बात की सलाहिय्यत ही नहीं रखता कि **अल्लाह** तअ़ाला की कुदरत व मशिय्यत इस से मुतअल्लिक हो सके।

(5) अहले सुन्नत का मज़हब है कि मिल्क व इख़्तियार बिल इस्तिक़लाल⁽²⁾ तो ख़ास्सए खुदावन्दी है और मिल्क व इख़्तियारे ज़ाती किसी फ़र्दे मख़्लूक के लिये साबित नहीं लेकिन **अल्लाह** तअ़ाला का दिया हुआ इख़्तियार और उस की अ़ता की हुई मिल्क आम इन्सानों के लिये दलाइले शरइय्या से साबित है और येह ऐसी रोशन और बदीही बात है कि जिस के तस्लीम करने में कोई मख़बूतुल ह्वास भी तअम्मुल नहीं कर सकता चे जाएका समझदार आदमी इस का इन्कार कर सके।

हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हक़ में अलल इतलाक़ येह कह देना कि वोह किसी चीज़ के मालिको मुख़्तार नहीं, शाने अक्दस में सरीह तौहीन है और उन तमाम नुसूसे शरइय्या और अदल्लए क़तइय्या के क़तअन ख़िलाफ़ है जिन से हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के लिये **अल्लाह** तअ़ाला की दी हुई मिल्क और इख़्तियार साबित होता है।

(6) अहले सुन्नत का मस्लक येह है कि मुक़र्रबीने बारगाहे ईज़दी उबूदिय्यत के उस बुलन्द मक़ाम पर होते हैं कि उन की ज़वाते कुदसिय्या मज़हरे सिफ़ाते रब्बानी हो जाती हैं और ब मुक़तज़ाए हदीसे कुदसी⁽³⁾ (4) **”بِئْسَ يَسْمَعُ رَبِّي يُبْصِرُ”** उन का देखना, सुनना, चलना,

① वो चीज़ जो पाई न जा सके ② हमेशा हमेशा से मालिको मुख़्तार होना

③ “हदीसे कुदसी” वोह हदीस है जिस के रावी हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** हों और निस्बत

अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ हो। (तिसिर मصلّح الحديث، الباب الأول، الفصل الرابع، ص १२६)।

④ वोह मेरे ज़रीए सुनता और देखता है। (فتح الباری، کتاب الرقاق، باب التواضع، १/ २९३، تحت الحديث: ००२)

फिरना, इरादा व मशिय्यत सब कुछ **अल्लाह** तअला की तरफ मन्सूब होता है। वोह मैदाने तस्लीमो रिज़ा के मर्द होते हैं। उन का चाहना

अल्लाह का चाहना और उन का इरादा **अल्लाह** का इरादा होता है।

ऐसी सूरत में हुज़ूर सय्यिदुल मुक़र्रबीन नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हक् में येह कहना कि “रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता।” अज़मते शाने रिसालत के मनाफ़ी है बल्कि मक़ामे नबुव्वत की तौहीन व तन्कीस है। जब रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** सिफ़ाते इलाहिय्या का मज़हरे अतम हैं और उन की मशिय्यत, मशिय्यते ईज़दी का ज़ुहूर है तो इस का पूरा न होना **مَعَادُ اللهِ** मशिय्यते खुदावन्दी की नाकामी होगी। येही तौहीने नबुव्वत और कुफ़्रे ख़ालिस है और कमालाते अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** की तन्कीस इसी लिये कुफ़्र है कि कमालाते नबुव्वत क़तअन सिफ़ाते इलाही का ज़ुहूर होते हैं।

(19) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी मज़हब में है कि हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ता'रीफ़ बशर⁽¹⁾ की सी की जाए बल्कि इस में भी इख़्तिसार किया जाए। “तक्वि़यतुल ईमान” के सफ़हा 35 पर लिख दिया है :

“या'नी किसी बुजुर्ग की ता'रीफ़ में ज़बान संभाल कर बोलो और जो बशर की सी ता'रीफ़ हो वोही करो सिवा इस में भी इख़्तिसार ही करो।”

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक हर बुजुर्ग की तारीफ़ उस की शान और मर्तबे के लाइक की जाएगी हत्ताकि हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ता'रीफ़ बशर की सी होना तो दर कनार मलाइकए मुक़र्रबीन⁽²⁾ से भी ज़ियादा होगी क्यूंकि हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** का मर्तबा उन से बुलन्दो बाला है।

① आ़म आदमी ② मुक़र्रब फिरिश्तों

(20) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ-लमा के मज़हब में अम्बिया, रसूल, मलाइका **مَعَادُ اللَّهِ** सब नाकारे हैं : “तक्वियतुल ईमान” सफ़्हा 15-16 पर लिख दिया है।

“**अल्लाह** जैसे ज़बरदस्त के होते हुवे ऐसे अज़िज़ लोगों को पुकारना कि कुछ फ़ाइदा और नुक़सान नहीं पहुंचा सकते महूज़ बे इन्साफ़ी है कि ऐसे बड़े शख़्स का मर्तबा ऐसे नाकारा लोगों को साबित कीजिये।”

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक महबूबाने खुदावन्दी अम्बियाए किराम, रसूल, मलाइकाए उज़्ज़ाम के हक़ में लफ़्ज़ “नाकारा” बोलना उन की शान में बेहूदा गोई और दरीदा दहनी है। **نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ ذَلِكَ**

(21) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द के नज़दीक **अल्लाह** तआला की बड़ी मख़्लूक अम्बिया व रसुले किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَام** की शान **अल्लाह** तआला की बारगाह में **مَعَادُ اللَّهِ** चोहड़े चमार से भी गिरी हुई है। “तक्वियतुल ईमान” के स. 8 पर तहरीर है : “और येह यकीन जान लेना चाहिये कि हर मख़्लूक बड़ा हो या छोटा **अल्लाह** की शान के आगे चमार से भी ज़लील है।”

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मज़हब में येह इबारत हज़राते अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम की सख़्त तरीन तौहीन का नुमूना है। हर छोटी और बड़ी मख़्लूक के मा'ना रसुले किराम और औलियाए

इज़्जाम का होना मुतअय्यिन हो गया क्योंकि छोटी मख़्लूक के लफ़्ज़ से छोटे मर्तबे की कुल मख़्लूक़ाते आम्मा और हर “बड़ी मख़्लूक़” के लफ़्ज़ से बड़े मर्तबे की कुल ख़ास मख़्लूक़ के मा’ना बिगैर तावील व तअम्मुल के हर शख़्स की समझ में आते हैं। ज़ाहिर है कि बड़े मर्तबे की ख़ास मख़्लूक़ अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मलाइकए किराम और औलियाए किराम ही हैं। अब इन्हें बारगाहे खुदावन्दी में **مَعَادُ اللَّهِ** चोहड़े चमार से ज़ियादा ज़लील कहना जिस किस्म की शदीद तौहीन है, मोहताजे तशरीह नहीं।

अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में अपने मुक़र्रब बन्दों को (1) ﴿عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ﴾ और (2) ﴿كَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيبُهَا﴾ फ़रमा कर इन्हें अपनी बारगाह में बड़ी इज़्जत व बुजुर्गी वाला और जी वजाहत फ़रमाया है, नीज़ अपने पाक बन्दों को (3) ﴿مُنْعَمٌ عَلَيْهِمْ﴾ क़रार दे कर और (4) ﴿إِنَّا كَرَّمَكُمُ عِنْدَ اللَّهِ فَأَقْشَمُ﴾ फ़रमा कर उन की शान बढ़ाई है। लेकिन इस के बिल मुक़ाबिल देवबन्दी उ-लमा खुसूसन साहिबे तक्वियतुल ईमान ने इन्हें चोहड़े चमार से ज़ियादा ज़लील क़रार दे कर उन की तौहीन व तन्कीस की है। अहले सुन्नत इस इबारात को गन्दगी और नजासत तसव्वुर करते हैं और ऐसे अक़ीदे को कुफ़्रे ख़ालिस समझते हैं। **أَعَاذَنَا اللَّهُ مِنْهُ**

(22) देवबन्दियों का मज़हब

हज़राते उ-लमाए देवबन्द के नज़दीक **مَعَادُ اللَّهِ** हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** एक गंवार की बात सुन कर बेहवास हो गए। इसी “तक्वियतुल ईमान” के स. 31 पर लिखा है :

① बन्दे हैं इज़्जत वाले (سورة الانبياء، الآية 26) ② मूसा **अल्लाह** के यहां आबरू वाला है। (سورة الاحزاب،) ③ जैसा कि ٦٩ سورة النساء الآية में है.... जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़ल किया या’नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग। ④ बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इज़्जत वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है (سورة الحجرات، الآية 13)

سُبْحَنَ اللّٰهِ अशरफुल मखलूक़ात मुहम्मदुरसूलुल्लाह
 صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तो उस के दरबार में येह हालत है कि एक गंवार
 के मुंह से इतनी बात सुनते ही मारे दहशत के बेहवास हो गए ।

अहले सुन्नत का मज़हब

एहले सुन्नत का मज़हब येह है कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के
 हवास तमाम इन्सानों के हवास से अक्वा और आ'ला हैं । सय्यिदुल
 अम्बिया صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हक् में येह कहना कि हुज़ूर एक
 गंवार की बात सुन कर बेहवास हो गए बारगाहे नबुव्वत में
 सख़्त तरीन तौहीन व तन्कीस है ।

(23) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द के मज़हब में फ़िरिशतों और रसूलों को
 ताग़ूत कहना जाइज़ है । मौलवी हुसैन अली शाकिन वां भचरां अपनी
 तफ़्सीर “बुल ग़तुल हैरान” के सफ़हा 43 पर फ़रमाते हैं :

और ताग़ूत का मा'ना ⁽¹⁾ “كُلَّمَا عِبِدَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ فَهُوَ الطَّاغُوتُ” इस
 मा'ना ब मूजिब जिन्न और मलाइका और रसूलों को ताग़ूत बोलना
 जाइज़ होगा । ⁽²⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक़ फ़िरिशतों और रसूलों को
 “ताग़ूत” ⁽³⁾ कहना उन की सख़्त तौहीन है और मलाइका व रुसुले
 किराम की तौहीन करने वाला ख़ारिज अज़ इस्लाम है ।

(24) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी हज़रात का मज़हब येह है कि सरीह झूट की हर
 किस्म से नबी का मा'सूम होना ज़रूरी नहीं है । मौलवी मुहम्मद
 कासिम साहिब नानोतवी, बानिये मद्रसए देवबन्द अपनी किताब

① तर्जमा : अब्बाह के सिवा जो भी पूजा जाए, वोह ताग़ूत है । ②अस्ल
 किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं । ③ ताग़ूत का
 मा'ना : शैतान, गुमराहों का सरदार (फ़ीरोजुल लुगात, स. 872, फ़ीरोज़सन्ज़)

“तस्फ़ियतुल अक्काइद” मतबूआ मुजतबाई के स. 25 पर फ़रमाते हैं :

1 : फिर दरोगे सरीह⁽¹⁾ भी कई तरह पर होता है, जिन में से हर एक का हुक्म यक्सां नहीं, हर किस्म से नबी को मा'सूम होना जरूरी नहीं ।

2 : बिल जुम्ला अलल उलूमे किज़्ब को⁽²⁾ मनाफ़िये शाने नबुव्वत, बई मा'ना समझना कि येह मा'सिय्यत है और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मआसी से मा'सूम हैं, खाली ग़लती से नहीं ।

(तस्फ़ियतुल अक्काइद, स.28)⁽³⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام हर किस्म के किज़्ब व मआसी से अलल उमूम मा'सूम हैं और इन के हक़ में किसी मा'सिय्यत का तसव्वुर या किसी किस्म के दरोगे सरीह को इन के लिये साबित करना इज़्ज़त व नामूसे रिसालत पर बद तरीन हम्ला है ।

(25) देवबन्दियों का मज़हब

हज़राते अकाबिरे देवबन्द के नज़दीक अम्बियाए किराम عَلَيْهِMُ السَّلَام अपनी उम्मत से सिर्फ़ इल्म ही में मुमताज़ होते हैं । अमली इम्तियाज़ उन्हें हासिल नहीं होता । मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब नानोतवी, बानिये मद्रसए देवबन्द अपनी किताब “तहज़ीरुन्नास” में स. 5 पर तहरीर फ़रमाते हैं :

“अम्बिया अपनी उम्मत से अगर मुमताज़ होते हैं तो उलूम ही में मुमताज़ होते हैं । बाक़ी रहा अमल इस में बसा अवकात ब जाहिर उम्मती मसावी हो जाते हैं बल्कि बढ़ जाते हैं ।”⁽⁴⁾

① वाजेह झूट ② मुतलकन झूट को

③-④ अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं ।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मज़हब में अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अपनी उम्मत से जिस तरह इल्म में मुमताज़ होते हैं इसी तरह अमल में भी पूरी इम्तियाज़ी शान रखते हैं। जो शख्स अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के इस इम्तियाज़ का मुन्किर है, वोह शाने नबुव्वत में तख़्ज़ीफ़ का मुर्तकिब है।

(26) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द **अल्लाह** तअ़ला के छोटे बड़े सब बन्दों को बे ख़बर और नादान कहते हैं। देखिये “तक्वियतुल ईमान” स. 13 पर लिखा है :

“इन बातों में सब बन्दे बड़े हों या छोटे सब यक्सां बे ख़बर और नादान हैं।”

अहले सुन्नत का मज़हब

अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को बे ख़बर और नादान कहना बारहगाहे नबुव्वत में सख़्त दरीदा दहनी है और ऐसा कहना बदतरनीन जहालत व गुमराही है।

(27) देवबन्दियों का मज़हब

हज़राते उ-लमाए देवबन्द, अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام को अपनी उम्मतों का सरदार किन मा'नों में मानते हैं। “तक्वियतुल ईमान” स. 35 पर लिखा है।

“जैसा हर क़ौम का चौधरी और गाऊं का ज़मीनदार, सो इन मा'नों को हर पैग़म्बर अपनी उम्मत का सरदार है।”

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मस्लक येह है कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को अपनी उम्मत पर वोह सरदारी हासिल है जो किसी मख़्लूक के लिये साबित करना तौहीने रिसालत है।

(28) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी हज़रात के नज़दीक मुफ़स्सरीन झूटे हैं। मौलवी हुसैन साहिब शागिर्दे रशीद मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही “बुल ग़तुल हैरान” स. 15 पर लिखते हैं :

(1) **أَدْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا** बाब से मुराद मस्जिद का दरवाज़ा है जो कि नज़दीक थी और बाक़ी तफ़्सीरों का किज़्ब है।”

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के अक़ीदे में तफ़्सीरों को किज़्ब कहने वाला खुद कज़़ाब⁽²⁾ है।

(29) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द के नज़दीक मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब और उस के मुक्तादी वहाबियों के अक़ाइद उम्दा थे।

“फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा अव्वल, स. 111 पर है :

सुवाल : वहाबी कौन लोग हैं और अब्दुल वहहाब नजदी का क्या अक़ीदा था और कौन मज़हब था और वोह कैसा शख़्स था और अहले नज्द के अक़ाइद में और सुन्नी हनफ़ियों के अक़ाइद में क्या फ़र्क है ?

अल जवाब : मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब के मुक्तादियों को वहाबी कहते हैं। उन के अक़ाइद उम्दा थे और मज़हब उन का हम्बली था अलबत्ता उन के मिज़ाज में शिद्दत थी मगर वोह और उन के मुक्तादी अच्छे हैं मगर हां जो हृद से बढ़ गए उन में फ़साद आ गया और अक़ाइद सब के मुत्तहिद हैं। आ'माल में फ़र्क हनफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, हम्बली का है।

रशीद अहमद गंगोही

2 ۱۰ سورة البقرة، الآية ۸۰ 2 बहुत बड़ा झूटा

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब बागी ख़ारिजी बे दीन व गुमराह था उस के अक़ाइद को उम्दा कहने वाले उसी जैसे दुश्मनाने दीन, ज़ाल व मुज़िल⁽¹⁾ हैं।

(30) देवबन्दियों का मज़हब

मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही पेशवा उ-लमाए देवबन्द के नज़दीक किताब “तक्वियतुल ईमान” निहायत उम्दा किताब है। इस के सब मसाइल सहीह हैं। इस का रखना, पढ़ना और अमल करना ऐन इस्लाम है। मुलाहज़ा फ़रमाइये : “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा अब्वल, स. 113 ता 114 :

सुवाल : “तक्वियतुल ईमान” में कोई मस्अला ऐसा भी है जो क़ाबिले अमल नहीं या कुल इस के मसाइल सहीह हैं ?

अल जवाब : बन्दे के नज़दीक सब मसाइल इस के सहीह हैं। तमाम “तक्वियतुल ईमान” पर अमल करे।

इसी तरह “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा अब्वल, स. 60 पर है : “और किताब “तक्वियतुल ईमान” निहायत उम्दा किताब है और रद्दे शिर्क व बिदअत में ला जवाब है। इस्तिद्लाल इस के बिल्कुल किताबुल्लाह और अहादीस से हैं। इस का रखना और पढ़ना और अमल करना ऐन इस्लाम है।”

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत, इस्माईल साहिब देहलवी की किताब “तक्वियतुल ईमान” को तमाम अम्बियाए किराम और औलियाए इज़्ज़ाम की तौहीन व तन्कीस का मजमूआ क़रार देते हैं। दर हकीक़त येह मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब नज़दी की किताब “अत्तौहीद” का

① खुद भी गुमराह और दूसरों को भी गुमराह करने वाले

खुलासा है, जिस में तमाम उम्मतें मुहम्मदिय्या علي صاحبها الصلوة والسلام को काफ़िर व मुशरिक कहा गया है और दिल खोल कर खुदा के मुक़द्दस और महबूब बन्दों की शान में गुस्ताखियां की गई हैं।

(31) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ-लमाए किराम “या शैख़ अब्दल क़ादिर” कहने वालों को काफ़िर, मुर्तद, मलज़न, जहन्नमी कहते हैं। फिर जो शख्स जान बूझ कर इन्हें ऐसा न कहे उस को भी वैसा ही काफ़िर, मुर्तद, मलज़न, जहन्नमी और ज़ानी क़रार देते हैं। और उन के निकाह को बातिल समझते हैं।

मुलाहज़ा फ़र्माइये : फ़तवा मुन्दरज़ा “बुल ग़तुल हैरान” स. 2...

“या शैख़ अब्दल क़ादिर या ख़्वाजा शम्सुद्दीन पानीपती, चुनान्चे, अ़वाम मी गोयन्द शिर्क व कुफ़्र अस्त”

फ़तवा : मौलाना मुर्तज़ा हसन साहिब, नाज़िमे ता’लीमे देवबन्द ब हवाला पर्चा अख़बार अमृतसर, 114 अक्टूबर 1927 ई.

“इन अक़ाइदे बातिला पर मुत्तलअ हो कर इन्हें काफ़िर, मुर्तद, मलज़न, जहन्नमी न कहने वाला भी वैसा ही मुर्तद व काफ़िर है फिर इस को जो ऐसा न समझे वोह भी ऐसा ही है।

”كوكب يمانى على اولاد الزانى“، ”كوكب يمانين على الجعلان

والخراطين“، ”توضيع المراد لمن تخبط فى الاستمداد“

इन किताबों में साबित किया है कि ऐसे अक़ाइद रखने वाले काफ़िर हैं। इन का निकाह कोई नहीं। सब ज़ानी हैं।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक सिद्दहते ए’तिकाद के साथ

“या शैख़ अब्दल क़ादिर जीलानी” और इस किस्म के तमाम अल्फ़ाज़े निदा कहना जाइज़ हैं। जो शख्स कहने वालों को

काफ़िर, मुर्तद, मलज़न, जहन्नमी और ज़ानी करार देता है वोह अकाबिर औलियाए उम्मत की शान में गुस्ताखी कर के खुद मलज़न, जहन्नमी और ज़ानी है।

(32) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द के नज़दीक बुजुर्गाने दीन को **अल्लाह** तआला का बन्दा और उस की मख़्लूक मान कर और उन के लिये **अल्लाह** की दी हुई कुव्वत तस्लीम कर के उन्हें अपना सिफ़ारिशी समझने वाले और उन की नज़्रो नियाज़ करने वाले (गोया सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** से ले कर आज तक के तमाम मुसलमान, औलिया, उ-लमा, मुज्ताहिदीन, सालिहीन) सब काफ़िर व मुर्तद और अबू जहल की तरह मुशरिक हैं। “तक्वियतुल ईमान” सफ़्हा 4 पर मरकूम है :

“काफ़िर भी अपने बुतों को **अल्लाह** के बराबर नहीं जानते थे बल्कि उसी की मख़्लूक और उसी का बन्दा समझते थे और इन को उस के मुक़ाबिल की ताक़त साबित नहीं करते थे मगर येही पुकारना और मन्तें माननी और नज़्रो नियाज़ करनी और इन को अपना वकील और सिफ़ारिशी समझना येही उन का कुफ़्र व शिर्क था। सो जो कोई किसी से येह मुआमला करे गो कि उस को **अल्लाह** का बन्दा व मख़्लूक ही समझे, सो अबू जहल और वोह शिर्क में बराबर है।”

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक ऐसे लोगों को काफ़िर व मुशरिक कहना खुद कुफ़्रो शिर्क के वबाल में मुब्तला होना है। मुकर्रबीने बारगाहे खुदावन्दी के लिये मुक़य्यद बिल इज़्ने तसरूफ़, ताक़त व कुदरत और सिफ़ारिश साबित करना⁽¹⁾ हक़ और दुरुस्त है और इस का इन्कार मूजिबे ज़लाल और बाइसे नकाल⁽²⁾ है।

① या'नी इन्हें येह ताक़त व तसरूफ़ और सिफ़ारिश का इख़्तियार **अल्लाह** ने दिया है। ② गुमराही और अज़ाब का सबब है।

(33) देवबन्दियों का मजहब

अकाबिरे उ-मलाए देवबन्द के हस्बे जैल अकाइद व मसाइल मुन्दरिजए जैल इबारात व हवाला जात मन्कूला में मुलाहजा फ़रमाएं ।

(1) रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के इल्मे ग़ैब का अक़ीदा रखना सरीह शिर्क है ।

(2) उर्स का इल्तिज़ाम करे या न करे, बहर हाल नाजाइज़ है ।

(3) तारीख़े मुअय्यन पर क़ब्रों पर जम्अ होना बिग़ैर लगविय्यात के भी गुनाह है ।

(4) मुत्तबेए सुन्नत और दीनदार को वहाबी कहते हैं ।

(5) तीजा वग़ैरा नाजाइज़ है । कुरआन शरीफ़ व कलिमए तय्यिबा और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर सवाब पहुंचाना और चने तक्सीम करना सब नाजाइज़ है ।

(6) चालीसवां और ग्यारहवीं भी बिदअत है ।

(7) खाने या शीरिनी वग़ैरा पर फ़ातिहा पढ़ना बिदअत और गुमराही है और ऐसा करने वाले सब बिदअती और गुमराह हैं ।

हवाला जात मुलाहजा फ़रमाएं

“फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा दुवुम, स. 141 पर है...

(1) और येह अक़ीदा रखना कि आप को इल्मे ग़ैब था, सरीह शिर्क है ।

(2) उर्स का इल्तिज़ाम करे या न करे बिदअत और नादुरस्त है ।

(3) तअय्युने तारीख़ से क़ब्रों पर इजतिमाअ करना गुनाह है ख़्वाह और लगविय्यात हों या न हों ।

(4) इस वक़्त और इन अतराफ़ में वहाबी मुत्तबेए सुन्नत और दीनदार को कहते हैं ।

(5) नीज़ “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा अव्वल, स. 101

पर है :

“क्या फ़रमाते हैं उ-लमाए दीन व मुफ़्तियाने शर्हे मतीन इस सूरत में कि फ़ी ज़मानिना रवाज है कि जब कोई मर जाता है तो उस के अज़ीज़ो अकारिब उस रोज़ या दूसरे या तीसरे रोज़ या किसी और रोज़ जम्अ हो कर और मस्जिद या किसी और मकान में कुरआन शरीफ़ व कलिमए तय्यिबा और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर बिला तअय्युने शुमार सवाब उस पढ़े हुवे का मुतवफ़्फ़ा⁽¹⁾ को बख़्शते हैं और चने वगैरा तक्सीम करते हैं तो इस तरह जम्अ होना और कुरआने मजीद वगैरा पढ़ना और पढ़वाना दुरुस्त है या नहीं ?
(2) **يُنَوِّا بِالْكِتَابِ تُوجَرُوا فِي يَوْمِ الْحِسَابِ** मुजय्यन ब महर⁽³⁾ फ़रमाएं ।

अल जवाब : सूरते मसऊला का येह है कि मुजतमिअ होना अज़ीज़ो अकारिब वगैरुहुम का वासिते तीसरे रोज़ बिदअत व मकरूह है । शरअ शरीफ़ में इस की कुछ अस्ल नहीं ।

(6) इसी तरह “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा सिवुम, स. 92 पर है :

सुवाल : मरने के बा’द चालीस रोज़ तक रोटी मुल्ला को देना दुरुस्त है या नहीं ?

अल जवाब : चालीस रोज़ तक रोटी की रस्म कर लेना बिदअत है । ऐसे ही ग्यारहवीं भी बिदअत है । बिला पाबन्दिये रस्म व कुयूद ईसाले सवाब मुस्तहसून है ।

فَكَتُ وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ । बन्दा रशीद अहमद गंगोही

(7) इस के इलावा “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा दुवुम में स. 150 पर है :

मस्अला : फ़ातिहा का पढ़ना खाने पर या शीरीनी पर बरोजे जुमा’रात के दुरुस्त है या नहीं ?

अल जवाब : फ़ातिहा खाने या शीरीनी पर पढ़ना बिदअते ज़लालत है । हरगिज़ न करना चाहिये । फ़क़त रशीद अहमद गंगोही

① फ़ौतशुदा ② किताब से बयान करो और क़ियामत के दिन अज़्र पाओ ।

③ मोहर लगा कर जीनत बख़्शें ।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत व जमाअत के अक्काइद हस्बे जैल हैं।

(1) ब ए'लामे खुदावन्दी⁽¹⁾ रसूलों के लिये इल्मे गैब हासिल होने का अक्कीदा ऐन ईमान है।

(2) अहले सुन्नत के नज़दीक बिगैर वुजूबे इल्तिज़ाम के अक्कीदे के इल्तिज़ाम के साथ उर्स करना जाइज़ है और बिला इल्तिज़ाम भी जाइज़ है।⁽²⁾

(3) तारीख़े मुअय्यन पर मज़ाराते औलियाउल्लाह पर मुसलमानों की हाज़िरी और बुजुर्गों की रूहानिय्यत से फ़ैज़ हासिल करना अहले सुन्नत के अक्काइद की रू से न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि मुस्तहसन है बशर्त येह कि वहां फ़िस्को फुजूर और मा'सिय्यत न हो।

(4) अहले सुन्नत के नज़दीक मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब के मुत्तबेईन को वहाबी कहते हैं। जिन के अक्काइद की रू से सिर्फ़ वोही लोग मुसलमान हैं जो उन के हम मस्लक और हम मशरब हों। बाक़ी तमाम मुसलमानों को वोह काफ़िर व मुशरिक और मुबाहुदम⁽³⁾ कहते हैं।

(5) अहले सुन्नत के नज़दीक तीजा वगैरा और कुरआन शरीफ़ व कलिमए तय्यिबा व दुरूद शरीफ़ पढ़ कर इस का सवाब अरवाहे मोअमिनीन को पहुंचाना और चने तक्सीम करना सब जाइज़ और मूजिबे रहमत व बरकत है बशर्त येह कि येह उमूर खुलूसे ए'तिकाद और नेक निय्यती से किये जाएं।⁽⁴⁾

(6) और (7) चालीसवां, ग्यारहवीं शरीफ़ और खाने या शीरीनी वगैरा पर फ़ातिहा पढ़ना सब जाइज़ और बाइसे अज़्रो सवाब है और ऐसा करने वाले मुसलमान सहीहुल अक्कीदा अहले

① अब्बाह तआला के बताने से ② या'नी उर्स को मुस्तहब समझ कर करना मुतलक़न जाइज़ है अलबत्ता इसे वाजिब समझना ग़लती है और मुसलमान इसे वाजिब समझते भी नहीं। ③ जिन का क़त्ल जाइज़ हो ④ या'नी इन्हें मुस्तहब समझ कर बजा लाए, वाजिब न समझे।

सुन्नत व जमाअत हैं। इन कामों को बिदअत करार देना और इन कामों के करने वाले सुन्नी मुसलमान को बिदअती कहना सख्त गुनाह और बिदअत व जलालत है।

(34) देवबन्दियों का मजहब

देवबन्दी साहिबान के नजदीक बिदअती के पीछे नमाज़ मकरूहे तहरीमा है : “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा सिवुम, स. 47 पर है :

सुवाल : बिदअती के पीछे नमाज़ जाइज़ है या नहीं ?

अल जवाब : मकरूहे तहरीमा है (فی المختار، باب الإمامة) واللّٰهُ تَعَالٰی اعْلَم۔

बन्दा रशीद अहमद गंगोही عَفَى عَنْهُ

....और इसी “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा सिवुम के सफ़हा 50 ता 51 पर है :

सुवाल : जुमुआ की नमाज़ जामेअ मस्जिद में बा वुजूद येह कि इमाम बद अक़ीदा है, पढ़े या दूसरी जगह पढ़ ले ?

अल जवाब : जिस के अक़ीदे दुरुस्त हों उस के पीछे नमाज़ पढ़नी चाहिये।

अहले सुन्नत का मजहब

अहले सुन्नत का मस्लक येह है कि उर्स व मीलाद करने वालों और खाने या शीरीनी वगैरा पर फ़तिहा पढ़ने वालों और ग्यारहवीं करने वालों को बिदअती कहना और इन के पीछे नमाज़ पढ़ने को मकरूहे तहरीमा जानना सख्त गुनाह और बदतरीन किस्म की गुमराही है।

अहले सुन्नत के नजदीक फ़ी ज़माना उर्स व फ़तिहा करने वालों ही के पीछे नमाज़ पढ़ना सहीह है। इन के मुख़ालिफ़ीने मजकूरैन के पीछे जाइज़ नहीं।

(35) देवबन्दियों का मजहब

अकाबिरे हज़रते उ-लमाए देवबन्द के नजदीक कोई मजलिसे मीलाद और कोई उर्स किसी हाल में दुरुस्त नहीं। मौलवी रशीद

अहमद साहिब गंगोही “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा 2 स. 150 पर इरकाम फ़रमाते हैं :

सुवाल : मस्अला इन्डिकादे मजलिसे मीलाद बदूने क़ियाम ब रिवायते सहीहा दुरुस्त है या नहीं ? ⁽¹⁾ **بَيَّنَّا وَأَوْتَوْا جُرُوءًا**

रक़ीमा : नियाज़ मुहम्मद इम्तियाज़ अली, तालिबे इल्म मद्रसा क़स्बा सहनपूर, जवाब तलब मअ हवाला किताब फ़क़त

अल जवाब : इन्डिकादे मजलिसे मीलाद बहर हाल नाजाइज़ है । तदाइये अम्रे **मन्दूब** ⁽²⁾ के वासिते मन्अ है ।

فقط واللّٰهُ اعلم

अगर पढोगे तो हवाले कुतुब मा'लूम हो जाएंगे, न पढोगे तो तक्लीद से अमल करना फ़क़त वस्सलाम

कतबा : अल अहक़र ⁽³⁾ रशीद अहमद गंगोही

सुवाल : जिस उर्स में सिर्फ़ कुरआन शरीफ़ पढ़ा जाए और तक्सीमे शीरीनी हो, जाइज़ है या नहीं ?

अल जवाब : किसी उर्स और मौलूद शरीफ़ में शरीक होना दुरुस्त नहीं और कोई सा उर्स और मौलूद दुरुस्त नहीं ।

فقط واللّٰهُ اعلم (बन्दा रशीद अहमद गंगोही غَفِيَ عَنْهُ)

मस्अला : महफ़िले मीलाद में जिस में रिवायते सहीहा पढ़ी जाएं और लाफ़ो गुज़ाफ़ ⁽⁴⁾ और रिवायते मौजूआ और काज़िबा न हों, शरीक होना कैसा है ?

अल जवाब : नाजाइज़ है ब सबब और वुजूह के ।

फ़क़त रशीद अहमद (फ़तावा रशीदिय्या, हिस्सा, 2 स. 155)

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मज़हब में मजलिसे मीलादे पाक अफ़ज़ल तरीने मन्दूबात ⁽⁵⁾ और आ'ला तरीन मुस्तह्सनात से है और

① ऐसी मीलाद की मजलिसे मुनअक्किद करना जिस में क़ियामे ता'ज़ीमी न हो और अहादीस व वाकिआत भी दुरुस्त बयान किये जाएं, क्या दुरुस्त है ?

② मुस्तहब अमल ③ हक़ीर तरीन शख़्स ④ बेहुदा सराई ⑤ मुस्तहब आ'माल में अफ़ज़ल तरीन

आ'रासे⁽¹⁾ बुजुर्गाने दीन भी अहले सुन्नत के नज़दीक मिन जुमला मुस्तहब्बात हैं। जो शख्स येह कहता है कि “बुजुर्गाने दीन के उर्स में कोई लगविय्यत और अग्रे ममनूअ न हो तब भी नाजाइज़ और बिदअत है” वोह बुजुर्गाने दीन का सख्त मुअनिद⁽²⁾ और इन के फुयूज़ो बरकात से महरूम और खाइबो खासिर है।

इसी तरह मीलाद शरीफ़ को बहर हाल नाजाइज़ व बिदअत करार देना हत्ताकि सलाम व क़ियाम न हो और रिवायाते मौजूआ न हों बल्कि सहीह रिवायतों के साथ मीलाद शरीफ़ पढ़ा जाए तब भी उसे नाजाइज़ और बिदअत व हराम कहना अहले सुन्नत के नज़दीक बारगाहे रिसालत से बुग्ज़ो इनाद की रोशन दलील है।

(36) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ-लमा के नज़दीक ब रिवायाते सहीहा मुहर्रम में हज़राते हसनैन رضي الله تعالى عنهم की शहादत का बयान, शरबत और दूध पिलाना, सबील लगाना सब हराम है। मुलाहज़ा फ़रमाइये, “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा सुवुम, स. 113

सुवाल : मुहर्रम में अशरह वगैरा के रोज़ शहादत का बयान करना ब रिवायाते सहीहा या बा'ज ज़ईफ़ा भी व नीज़ सबील लगाना, चन्दा देना और शरबत, दूध बच्चों को पिलाना दुरुस्त है या नहीं ?

अल जवाब : मुहर्रम में ज़िक्रे शहादते हसनैन عليهما السلام करना अगर्चे ब रिवायाते सहीहा हो या सबील लगाना, शरबत पिलाना या चन्दा सबील और शरबत में देना सब ना दुरुस्त और तशब्बोहे रवाफ़िज़ की वजह से हराम है।⁽³⁾

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मस्लक में रिवायाते सहीहा के साथ मुहर्रम वगैरा में हज़राते हसनैन رضي الله تعالى عنهم का ज़िक्रे शहादत

① उर्स की जम्अ ② सख्त दुश्मन ③ अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारत” में मुलाहज़ा फ़रमाएं।

बाइसे रहमत व बरकत है। इसी लिये शुहदाए किराम को ईसाले सवाब के लिये शरबत व दूध वगैरा पिलाना सब जाइज और मुस्तहसन है।

तशब्बोह बिरवाफिज⁽¹⁾ की आइ ले कर इन उमूरे मुस्तहसना को नाजाइज व हराम कहना मुसलमानों को हुसूले खैरो बरकत से महरूम रखना है।

(37) देवबन्दियों का मजहब

अकाबिरे उ-लमाए देवबन्द के मजहब में हिन्दूओं के सूदी रूपे से जो पानी पियाव (सबील) लगाई जाए उस का पानी पीना मुसलमानों के लिये जाइज है। देखिये “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा 3 सफ़हा नम्बर 114 पर है :

सुवाल : हिन्दू जो पियाव पानी कि लगाते हैं सूदी रूपिया सर्फ़ कर के, मुसलमानों को उस का पानी पीना दुरुस्त है या नहीं ?

अल जवाब : उस पियाओ से पानी पीना मुजाइका नहीं।
فقط واللّه تعالیٰ اعلم ⁽²⁾ (रशीद अहमद गंगोही رحمته الله)

देवबन्दी हज़रात के मस्लक में हिन्दूओं की होली और दीवाली की पूरियां वगैरा मुसलमानों के लिये खाना हलाले तय्यिब है। “फ़तावा रशीदिय्या” हिस्सा दुवुम, स. 123 पर मरकूम है :

मसअला : हिन्दू तहवार होली या दीवाली में अपने उस्ताद या हाकिम या नोकर को खेलें या पूरी या और कुछ खाना बतौरे तौहफ़ा भेजते हैं इन चीज़ों का लेना और खाना उस्ताद या हाकिम व नौकर मुसलमान को दुरुस्त है या नहीं।

अल जवाब : दुरुस्त है फ़क़त। ⁽³⁾

① शीओं से मुशाबहत

②-③ अस्ल किताब की इबारत बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक यह अग्र अहले बैते अतहार खुसूसन सय्यिदुना इमाम हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ अ़दावते क़ल्बी की बय्यिन दलील है कि इमाम हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के फ़ातिहा के शरबत को तशब्बोह बिरवाफ़िज़ की आड़ ले कर ह़राम कहा जाए और इस के बिल मुक़ाबिल तशब्बोह बिल हुनूद⁽¹⁾ से आंखें बन्द कर के हिन्दूओं के मुशरिकाना तहवार होली, दीवाली की पूरी कचोरी को जाइज़ व हलाल क़रार दिया जाए।

नीज़ अहले सुन्नत इस बात को अहले बैते रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ बद तरीन दुश्मनी तसव्वुर करते हैं कि इमामे हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ईसाले सवाब के लिये लगाई हुई सबील के पानी को नाजाइज़ समझा जाए और इस के मुक़ाबले में हिन्दूओं के सूदी रूपे से लगाए हुवे पियाव का पानी हलाले तय्यिब जाइज़ और पाक माना जाए। मक़ामे तअज़्जुब है कि तशब्बोह बिरवाफ़िज़ तो मल्हूज़ रहे और तशब्बोह बिल कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन⁽²⁾ बिल्कुल नज़र अन्दाज़ कर दिया जाए। अहले इन्साफ़ ग़ौर फ़रमाएं कि येह अ़दावते हुसैन नहीं तो क्या है? العياذ بالله واليه المشتكى

(38) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द के पेशवायाने किराम के मज़हब में “जागे मा’रूफ़ा” (मशहूर कव्वा जो आ़म तौर पर पाया जाता है) खाना सवाब है। “फ़तावा रशीदिyyा” हिस्सा 2, स. 130 को देखिये। इस पर लिखा है :

मसअला : जिस जगह जागे मा’रूफ़ा को अकसर ह़राम जानते हों और खाने वाले को बुरा कहते हों तो ऐसी जगह इस को खाने वाले को कुछ सवाब होगा या न सवाब होगा न अज़ाब ?

अल जवाब : सवाब होगा। फ़क़त : रशीद अहमद गंगोही⁽³⁾

⁽¹⁾ हिन्दूओं से मुशाबहत ⁽²⁾ कुफ़्फ़ार और मुशरिकीन से मुशाबहत

⁽³⁾ अस्ल किताब की इबारात बाब “अक्सी इबारात” में मुलाहज़ा फ़रमाएं।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मज़हब येह है कि पाक ग़िज़ा पाक लोगों के लिये है और ख़बीस व नापाक ग़िज़ा ख़बीसों और नापाकों के लिये है। जाग़ (मशहूर कव्वा) हराम और ख़बीस है जिस का खाना मोअमिनीने तय्यिबीन के लिये जाइज़ नहीं। कव्वा खाने वाले हराम ख़ोर और अज़ाबे आख़िरत के सज़ावार हैं।

(39) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द की नज़र में मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही, बानिये इस्लाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के “सानी” हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइये “मर्सिय्या” मुसन्निफ़हू मौलवी महमूद हसन देवबन्दी, मतबूआ सादूरा, स. 6

ज़बान पर अहले अहवा⁽¹⁾ की है क्यूं उ'लू हुबल⁽²⁾ शायद उठा दुन्या से कोई बानिये इस्लाम का सानी

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लासानी व बे नज़ीर हैं और मरसिय्या का ज़ेरे नज़र शे'र हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शान में तौहीन व तन्कीस है। इस शे'र में मौलवी रशीद अहमद गंगोही को बानिये इस्लाम का सानी कहा गया है।

“बानिये इस्लाम” से मुराद **अब्बाह** तआला होगा या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लिहाज़ा मौलवी रशीद अहमद गंगोही

① गुमराहों ② तर्जमा : ऐ हुबल ! बुलन्द हो जा....हुबल कुफ़ारे मक्का के एक बुत का नाम है। कुफ़ारे मक्का अपनी फ़तह के मौक़अ पर “उ'लू हुबल” के ना'रे लगा कर मसरत का इज़हार करते।”

(مَعَاذَ اللَّهِ) **अल्लाह** तअला के सानी हुवे या रसूलुल्लाह

ﷺ के ? ज़ाहिर है कि येह गिनती और शुमार का मौक़अ नहीं, इस लिये तस्लीम करना पड़ेगा कि मौलवी महमूदुल हसन साहिब देवबन्दी ने मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही को **अल्लाह** तअला या रसूलुल्लाह ﷺ का मिस्ल करार दे कर खुदा और रसूल की शान में तौहीन की ।

तअज्जुब है कि अगर किसी जाहिल आदमी को मौलवी अशरफ़ अली थानवी या मौलवी रशीद अहमद गंगोही का सानी कह दिया जाए तो देवबन्दियों के दिल में फ़ौरन दर्द पैदा होगा कि “उफ़” हमारे मुक़्तदाओं की तौहीन हो गई लेकिन येह खुद एक मौलवी को रसूलुल्लाह ﷺ का सानी कहें तो इन्हें तौहीने रसूल का क़तअन एहसास नहीं होता बल्कि ऐसे तौहीन आमेज़ कलाम की तावीलाते फ़ासिदा में ऐड़ी चोटी का जोर लगाने लगते हैं । (1) فَاغْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ

(40) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दियों के नज़दीक मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही के हकीर और छोटे से काले गुलामों का लक़ब “यूसुफ़े सानी” है ।

देखिये : “मर्सिय्या” मौलवी मुहम्मद हसन साहिब, स. 11 :

क़बूलिय्यत उसे कहते हैं, मक़बूल ऐसे होते हैं

उबैदे सौद का उन के लक़ब है यूसुफ़े सानी

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मस्लक येह है कि किसी को वस्फ़े ऐब से ता'बीर कर के “यूसुफ़े सानी” उस का लक़ब करार देना

❶ तो इब्रत लो ऐ निगाह वालो !

यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की शान में तौहीन व तन्कीस है। “उबैदे सौद” के मा’ना हैं : “काले रंग के हकीर और छोटे गुलाम” जिन को दूसरे लफ्ज़ों में “काले गुलमटे” भी कहा जा सकता है। अगर किसी ने किसी को यूसुफ़ सानी से ता’बीर किया है तो उस के हुस्न को तस्लीम कर के और उसे हसीन करार दे कर कहा है लेकिन इस शे’र में तो मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही के गुलामो को “उबैदे सौद” काले गुलमटे कह कर और इन के मुहक्कर व मुसगर⁽¹⁾ होने का इज़हार कर के फिर उन्हें सियाह फ़ाम मानने के बा’द उन का लक़ब “यूसुफ़ सानी” रखा है, जिस में जमाले यूसुफ़ी की सरीह तौहीन है। الْعِيَاذُ بِاللَّهِ

❦ (41) देवबन्दियों का मजहब ❦

देवबन्दी मस्लक में मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही की मसीहाई सय्यिदुना ईसा बिन मरयम⁽²⁾ की मसीहाई से बढ़ चढ़ कर है। देखिये “मर्सिय्या” मुसन्निफ़हू मौलवी मुहम्मद हसन साहिब देवबन्दी, स. 33

मुर्दों को ज़िन्दा किया, ज़िन्दों को मरने न दिया
इस मसीहाई⁽³⁾ को देखें ज़री⁽⁴⁾ इब्ने मरयम

❦ अहले सुन्नत का मजहब ❦

अहले सुन्नत का मजहब यह है कि किसी नबी के मो’जिज़ात और कमालात में किसी ग़ैरे नबी को नबी से बढ़ चढ़ कर मानना तौहीने नबुव्वत है। इस शे’र में मुर्दा और ज़िन्दा से हकीकी मुर्दा और ज़िन्दा मुराद हो या मजाज़ी हो, हर सूरत में हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की तौहीन है। इस लिये कि मौलवी रशीद अहमद साहिब की मसीहाई

❶ इन्तिहाई हकीर और छोटा ❷ عَلَيْهِ السَّلَام ❸ हयात बख़्शी, ज़िन्दगी देना

❹ ज़री : ज़रा की जगह इस्ति’माल होता है, मा’ना थोड़ा (फ़ीरोजुल्लुगात)

का हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मसीहाई से मुक़ाबला किया गया है और फिर मौलवी रशीद अहमद साहिब की मसीहाई को हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मसीहाई पर तरजीह दी गई है जो सय्यिदुना मसीह इब्ने मरयम की शान में गुस्ताखी है। اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ

(42) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी हज़रात के नज़दीक का'बे में भी गंगोह का रस्ता तलाश करना चाहिये। मौलवी महमूदुल हसन साहिब देवबन्दी अपने तस्नीफ़ कर्दा "मर्सिय्या" के सफ़्हा नम्बर 13 पर इरशाद फ़रमाते हैं :

फिरें थे का 'बा में भी पूछते गंगोह का रास्ता
जो रखते अपने सीने में थे शौक़ व जौक़े इरफ़ानी

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक का'बए मुतहहरा तमाम दुन्याए इन्सानियत का मर्कज़ व मरजअ और सब के लिये अमन व अफ़ियत का गहवारा है। मर्दे मोमिन का दिल खुद ब खुद का'बा की तरफ़ खींचता है, खुसूसन अरिफ़ बा जौक़ पर का'बा के हकीकी हुस्नो जमाल और इस के अन्वार व तजल्लिय्यात का इन्किशाफ़ होता है। ऐसी सूरत में जो लोग का'बा में पहुंच कर भी गंगोह का रस्ता ढूँढते हैं वोह इल्मो इरफ़ान और जौक़ो शौक़ से क़तअन महरूम हैं। का'बा में पहुंचने के बा'द गंगोह का मुतलाशी होना यकीनन का'बए मुतहहरा की अज़मत व शान को घटाना है।

नाज़िरीने किराम

तस्वीर के दोनों रुख आप के सामने मौजूद हैं। अब आप को इख़्तियार है जिसे चाहें पसन्द फ़रमाएं। मैं अपने मा'बूदे हकीकी रब्बे काइनात मुजीबुद्दा'वात **جَلَّ مَجْدُهُ** से बसद तज़रुअ व ज़ारी दुआ करता हूं कि **अल्लाह** तआला क़बूले हक़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

وَهُوَ يَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ وَ آخِرُ دَعْوَانَا اِنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَ الصَّلَاةُ
السَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ وَ عَلَى آلِهِ وَ صَحْبِهِ وَ اَوْلِيَائِهِ عَلَيْهِ وَ غُلَمَائِهِ اُمِّتِهِ اَجْمَعِينَ -

تَمَّتْ بِالْخَيْرِ

सख्खिद अहमद सईद क़ाज़िमी



ज़ियाराते औलिया व क़शमाते औलिया

❀ कभी ज़ियारत, अहले कुबूर से फ़ाइदा उठाने के लिये होती है
जैसा कि कुबूरे सालिहीन की ज़ियारत के बारे में अहदादीस आई हैं।

(जज़बुल कुलूब तर्जमा अज़ फ़ारसी)

❀ इमाम इब्नुल हाज़ मुदख़ल में इमाम अबू अब्दुल्लाह बिन नो'मान की
किताब मुस्तताब **سفيّة النّساء لال النّساء في كرامات الشيخ أبي النّساء** से नाकिल :

تَحَقَّقْ لِدَوَى الْبَصَائِرِ وَالْإِعْتِبَارِ زِيَارَةَ قُبُورِ الصَّالِحِينَ مُحِبُّوهُ لَا جُلِّي التَّبَرُّكِ مَعَ الْإِعْتِبَارِ فَإِنَّ
بَرَكَاتِهِ الصَّالِحِينَ جَارِيَةً بَعْدَ مَمَاتِهِمْ كَمَا كَانَتْ فِي حَيَاتِهِمْ. (المدخل: فصل في زيارة القبرين، دار الكتاب العربي بيروت ١٣٩١)

या'नी अहले बसीरत व ए'तिबार के नज़दीक मोहक्क़ हो
चुका है कि कुबूरे सालिहीन की ज़ियारत ब ग़रजे तहसीले बरकत व
इब्रत महबूब है कि इन की बरकतें जैसे ज़िन्दगी में जारी थीं बा'दे
विसाल भी जारी हैं।

बाब इवशी इबाशात

अक्सी इबारात

मुतनाज़िआ इबारात पढ़ कर हो सकता है कि किसी के ज़ेहन में आए कि ऐसा कौन लिख सकता है या मुमकिन है कि अस्ल इबारात में तग़य्युर कर के उन्हें मुतनाज़िआ बना दिया गया हो, लिहाज़ा इस किस्म के तमाम शुब्हात का क़लअ क़म्अ करने के लिये बा'ज़ अस्ल कुतुबे वहाबिय्या से मुतनाज़िआ इबारात को स्केन (scane) कर के इस बाब में पेश किया जा रहा है ताकि क़ारेईन के लिये क़ल्बी इतमीनान का बाइस हो।

①....."تقوية الإيمان"، باب أول، فصل ١، شرك مع بجنه كايان، ص ٢٨: مير محمد كتب خانہ

بجود سے یا ہر جگہ حاضر و ناظر ہو۔ دوسری یہ کہ جب ہمارا خالق اللہ ہے اور اس نے ہم کو پیدا کیا تو ہم کو بھی چاہیے کہ اپنے ہر کاموں کس کو کاپڑیں اور کسی سے ہم کو کیا کام بھیجے جو کوئی ایک پادشاہ کا غلام ہو چکا تو وہ اپنے ہر کام کا علاقہ اسی سے رکھتا ہے دوسرے پادشاہ سے بھی نہیں رکھتا اور کبھی چوہڑے چھار کا تو کیا ذکر ہے۔

②....."تقوية الإيمان"، باب أول، فصل ٥، شرك في العبادات كى برائى كايان، ص ٥٧: مير محمد كتب خانہ

ف ایمنی میں بھی ایک دن مرکبوشی میں ملنے والا ہوں

③....."تقوية الإيمان"، باب أول، فصل ٤، شرك في العبادات كى برائى كايان، ص ٤٥: مير محمد كتب خانہ

معلوم ہوا کہ آخر زمان میں قدیم شرک سے رنج ہوگا سو بغیر خدا کے متوافق ہوا یعنی بیسے مسلمان لوگ اپنے نبیؐ و امامؑ

④....."تقوية الإيمان"، باب أول، فصل ٤، شرك في العبادات كى برائى كايان، ص ٤٣: مير محمد كتب خانہ

نہیں اور جس کا نام محمدؐ یا علیؑ ہے وہ کسی چیز کا معتز نہیں

.....6..... ”تقوية الايمان“، فصل ۵: شرك في العادات کی برائی کا بیان، ص ۵۵: میر محمد کتب خانہ

ف یعنی جو کہ اللہ کی شان ہے اور اس میں کسی مخلوق کو دخل نہیں سواس میں اللہ کے ساتھ کسی مخلوق کو نہ ملائے گو کہتا ہی بڑا ہوا اور گھبراہی مقرب مثلاً یوں نہ بولے کہ اللہ و رسول چاہے گا تو فلاں کام ہو جائے گا کہ سارا کاروبار جہان کا اللہ ہی کے چاہنے سے ہوتا ہے رسول کے چاہنے سے کچھ نہیں ہوتا۔ یا کوئی شخص کسی سے کہے کہ فلاں کے دل میں کیا ہے یا فلاں کی شادی کب ہوگی یا فلاں درخت میں کتنے پتے ہیں یا آسمان میں کتنے تارے ہیں تو اس کے جواب میں یہ نہ کہے کہ اللہ و رسول ہی جانے کیونکہ غیب کی بات اللہ ہی جانتا ہے رسول کو کیا خبر اور اس بات کا کچھ

.....6..... ”فتاویٰ رشیدیہ“، کتاب العقائد، ص ۲۱۰ - ۲۱۱.

مخفی نہیں پس مذہب جمیع محققین اہل اسلام و صوفیائے کرام و علما و عظام کا اس مسئلہ میں یہ ہے کہ کذب داخل تحت قدرت باری تعالیٰ ہے

7..... اور دوسرے مقام پر لکھا :

”کذب لازم آئے مگر آیت اولیٰ سے اس کا تحت قدرت باری تعالیٰ داخل ہونا معلوم ہوا پس ”کاذب“ کلمہ کذب داخل تحت قدرت باری تعالیٰ مل و علی ہے کیوں نہ ہو دھو علی کل شیء قدیر

8..... ”اسی तरह इसमईल देहल्वी ने अपने रिसाले ”यक रोज़ा“ (फ़ारसी) में **अब्बाह** तआला की तरफ़ इमकाने किज़्ब की निस्बत करते हुवे लिखा :

قوله - وهو محال لانه نقص والنقص عليه تعالى محال -

اقول اگر مراد از محال متعذر لذات است که تحت قدرت الهیه داخل نیست پس از سلم که کذب مذکور محال معنی مسطور یا شرط مقدمه تعذیر غیر مطابق واقع واقعاً آں بر خلاف کذب و انبیاء خارج از قدرت الهیه نیست والا لازم آید که قدرت الهیه انسانی از قدرت ربانی باشد چه تعذیر تعذیر مطابق واقع واقعاً آں بر غایتین در قدرت اگر قضا و انسان است کذب مذکور است انانی محکم است استسما پس متعذر بانه نیست -
بند مذکور کذب یا الکلمات حضرت حق سبحانہ سے شمارند و اور اہل شانہ آں مرح سے
تندر خلاف اخرس و جماد کہ ایشان را کہے بدم کذب مرح نے کندہ و نیز ظاہر است

۳۱۷

۹..... "تحذیر الناس"، خاتم النبیین کا معنی، ص ۴ - ۵. دار الاشاعت کراچی

سورہ کرم کے خیال میں تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا خاتم ہونا بایں معنی ہے کہ آپؐ ان زمانہ انبیاء سابقین کے زمانہ کے بعد اور آپؐ سب میں آخر نبی ہیں۔ مگر اہل فہم پرورش پروردگار کہ تقدم یا آخر زمانے میں بالذات کچھ فضیلت نہیں پھر مقام مرح میں وہن رسول اللہ و خاتم النبیین فرماتا اس صورت میں کیونکر صحیح ہو سکتا۔ ہاں اگر اس وصف کو اور صاف مرح میں سے نہ کیے اور اس مقام کو مقام مرح نہ قرار دے دیکھے تو البتہ خاتمیت یا قبائے تاخر زمانی صحیح ہو سکتی ہے۔ مگر میں جانتا ہوں کہ اہل اسلام میں سے

۱۰..... "تحذیر الناس"، خاتم النبیین کا معنی، ص ۶. دار الاشاعت کراچی

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خاتمیت کو تصور فرمائیے۔ یعنی آپؐ موصوف بوصف نبوت بالذات ہیں اور سوا آپؐ کے اور نبی موصوف بوصف نبوت بالعرض اور دلی کی

۱۱..... "تحذیر الناس"، خاتم النبیین ہونے کا حقیقی مفہوم... الخ، ص ۱۸. دار الاشاعت کراچی

عرض کیا تو آپؐ کا خاتم ہونا انبیاء گذشتہ ساری کی نسبت خاص نہ ہو گا۔ بلکہ اگر بالفرض آپؐ کے زمانے میں بھی کہیں اور کوئی نبی جو جب بھی آپؐ کا خاتم ہونا بدستور باقی رہتا ہے۔ مگر جیسے اطلاق خاتم النبیین اس بات کو مقتضی ہے کہ اس نقطہ

..... 12) ”تحذیر الناس“، روایت حضرت عبد اللہ ابن عباس کی، تحقیق، ص ۳۹: دار الانعامت کراچی

سچی آپ کی افضلیت ثابت ہو جائیگی بلکہ اگر باقرض بعد نہ ملے بنوی صلح بھی کوئی نئی پیدا ہو تو میری مخالفت محمدی میں کچھ فرق نہ آئے گا چہ جائے کہ آپ کے معاصر کسی اور زمانہ میں یا فرض کیجئے اسی زمین میں کوئی اور سبب جو یزید کا جائے بالحد ثبوت اثر مذکور دونوں مثبتات خاتمہ ہے معارض و مخالف

⑬ "صراط مستقیم"، ص ۸۶؛ مکتبہ سلغیہ لاہور

کسی که خود متوجه تیرمیزی از نامور دنیا و نبویه شود هرگز آن مقام کشف نشود و سید غازی نسبت به ظلمات
بعضیه افریق بعضی از سوسنه خیال جوست و چه خود بهرست محض بهرست بسوی شیخ و امثال
انفین عمر جناب سالت ناب باشد بخوبین مرتبه جز از استعراق در صورت کما و خود هست که خیال آن
با عظیم و احوال بسوی دل انسان بجهت خلاف خیال او و فکر نشاندند چسپیگی می برود و عظیم که در
و حقیر می بود و این عظیم و احوال غیر که در ظاهر معلوم و معقول میشود بشکریکیش بهر احوال ظهور بیان تفاوت ناب و ساد

14..... ”براهین قاطعہ“ بحواب ”أنوار ساطعہ“، مسئلہ علم غیب، ص ۵۵؛ دار الاشاعت کراچی

علیہ السلام فرماتے ہیں: **والله فعل بالی** والی جمع الخیرات اور شیخ عبدالحق دایت کرتے ہیں کہ مخلوق کو وارث کے سجدے کا بھی علم نہیں اور جلسہ عراج کا سلسلہ بھی بحر اقیانوس وغیرہ کتب سے لکھا گیا تیسرے اگر افضلیت ہی موجب اس کی ہے تو تمام مسلمان اگر عین حق

15..... ”براہین قاطعہ“ بجواب ”انوار ماطعہ“، مسئلہ عدم غیب، ص ۵۵: دار الاشاعت کراچی

دور از علم و عقل ہے، البتہ حاصل فکر کرنا چاہیے کہ شعیطان دلعن الموت کا حال دیکھ کر کون کونسا کافر عالم کو خلاف مخصوص قطعیت پر باطل محض قریب یا سوسے ثابت کرنا شروع نہیں تو گوں مایمان کا حصہ شعیطان دلعن الموت کو یہ وسعت نفس و ثبات ہوئی، فکر عالم کا وسعت علم کی کوئی نفس قطعیت پر نہ کہ جس سے تمام مخصوص کوڑہ کے ایک مشترک ثبات کرتا ہے اور خاصہ کی تعریف تہذیب

16..... ”حفظ الایمان“، جواب سوال سوم، ص ۱۳: قدیمی کتب خانہ

مشاد یا۔ پھر یہ کہ آپ کی ذات مقدسہ پر علم غیب کا حکم کیا جانا اگر قبول زید صحیح ہو تو دریافت طلب یہ امر ہے کہ اس غیب سے مراد بعض غیب ہے یا کل غیب، اگر بعض علوم غیبیہ مراد ہیں تو اس میں حضور ہی کی کیا تخصیص ہے، ایسا علم غیب تو زید و عمر و بلکہ ہر صبی دہیجہ، و مجنون دیاہل، بلکہ جمیع حیوانات و بہائم کے لئے بھی حاصل ہے کیونکہ ہر شخص کو کسی نہ کسی ایسی بات کا علم ہوتا ہے جو دوسرے

17..... تصفیۃ العقائد، صفحہ ۳۱، دار الاشاعت کراچی

تو پھر یہ تامل بیجا ہے بالجلہ علی العموم کذب کو منافی شان نبوت باین معنی سمجھ کر یہ معصیت ہے اور انبیاء علیہم السلام معاصی سے معصوم ہیں خالی غلطی سے

ہیں پھر تفسیر تعریضات جو واقع میں اقسام کذب میں سے نہیں ہوتی بلکہ مشابہ کذب ہوتی ہیں ہرگز مخالف شان نبوت نہیں ہو سکتیں علی ہذا النقیاس کسی امر متنب کا اس لحاظ سے ترک کر دینا کہ اس میں کوئی فساد عظیم جس کا وزن منفعت استنباب سے بڑھ جائیگا پیدا ہوگا اگر یہ لفظ ہر مستلزم ایہام مخالفت واقع ہے کیونکہ انبیاء علیہم السلام کا کسی بات کو ترک کر کے ایک انداز کو اختیار کر لینا اس جانب مشیر ہے کہ یہی انداز متحسن ہے اور مرنزوک غیر متحسن اور یہ لفظ ایہام مخالف منجملہ دروغ سمجھا جاتا ہے ہرگز مخالف شان نبوت نہیں بلکہ موافق شان نبوت ہے

ہستفاد کیا فرماتے ہیں علامہ دین کہ لفظ رحمۃ اللعالمین مخصوص انحضرت صلی اللہ علیہ وسلم ہے
 بشرط کہ کہہ سکتے ہیں الجواب لفظ رحمۃ اللعالمین صفت تمامہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی نہیں ہے
 بلکہ دیگر اولیاء و انبیاء اور علماء ربانیین بھی موجب رحمت عالم ہوتے ہیں اگرچہ جناب رسول اللہ
 صلی اللہ علیہ وسلم سب میں اعلیٰ ہیں لہذا اگر دوسرے پر اس لفظ کو بتاویل بول دیوے تو جائز ہے
 فقط بندہ رشید احمد گنگوہی عفی عنہ۔
 رشیدیہ
 ۱۲۱۳ھ

مسئلہ ہندو تہوار ہولی یا دیوالی میں اپنے استاد یا حاکم یا نوکر کو کھیلے یا پوری یا اور کچھ کھانا بطور
 تحفہ بھیجے میں ان چیزوں کا لینا اور کھانا استاد و حاکم و نوکر مسلمان کو درست ہے یا نہیں۔
 الجواب درست ہے فقط مسئلہ ہندوؤں کے لڑکوں کو ان کے تہوار ہولی یا دیوالی

سوال محرم میں عشرہ وغیرہ کے روز شہادت کا بیان کرتا مگر بعض اشعار بروایت صحیحہ یا بعض ضعیفہ
 بھی و نیز بسبیل لگانا اور چندہ دینا اور شربت دودھ بھوں کو پلانا درست ہے یا نہیں الجواب
 محرم میں ذکر شہادت حسین علیہا السلام کرتا اگرچہ بروایت صحیحہ یا بسبیل لگانا شربت پلانا یا چندہ بسبیل
 اور شربت میں دینا یا دودھ پلانا مایہ و درست اور تشبہ و افش کی وجہ سے حرام ہیں فقط رشید احمد

21..... فتاویٰ رشیدیہ، حصہ دوم، صفحہ ۱۳۰، امیر محمد کتب خانہ

مسئلہ جو بڑے چار کے گھر کی روشنی میں حرج نہیں ہے اگر باگ ہو۔ فقط
واللہ تعالیٰ اعلم۔ رشید احمد گنگوہی، عفی عنہ [امام رشید]
مسئلہ جس جگہ زناغ معروذ کو اکثر حرام جانتے ہوں اور کھانپوائے کو برا کہتے ہوں تو ایسی
جگہ اس کو کھانپنے والے کو کچھ ثواب ہو گا یا نہ ثواب ہو گا نہ عذاب ہو گا نہ عذاب ہو گا فقط رشید

22..... بلغة الحیران، مبشرات، مکتبۃ اخوت

الحرام لم یثبت عند رسول اللہ علیہ وسلم قلت اعلوۃ والسلام علیک یا رسول اللہ فالعن علی اللہ علیہ وسلم والی اللطائف
والالذلال وادایت ان یسقط فاسکتہ وامنتم من السقوط فمیرت فی ذلک الوقت ان المراد اقامتہ وینہ ونحو الشک

ترجمہ : مولوی حسین اُلی کہتے ہیں کہ میں نے کھاب میں سرکار ﷺ کو
دیکھ کر اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ پڑھا پھر میں نے دیکھا کہ آپ گھر رہے ہیں
پس میں نے آگے بڑھ کر آپ کو تھام لیا اور گرنے سے بچا لیا۔

23..... بلغة الحیران، صفحہ ۱۲، مکتبۃ اخوت

تم اپنے بھروسے کہ جو حاضر زمانہ جانتے ہو یا وہ بکواس کتاب جیسے کوئی کتاب نکالیں۔ تحقیق مقام مجاہد تنویر ہے
بلکہ منسوب یہ سنی کہ قرآن میں اور فصیح کلام ہے اس کی مثل کوئی ایسی فصیح کلام لاؤ لیکن یہ خیال کرنا چاہئے کہ کفار کو عاجز
کرنا کوئی فصاحت اور بلاغت سے تھا کیونکہ قرآن خاص واسطے کفار فصیح اور فصاحت کے نہیں آیا تھا۔ اور یہ کمال بھی نہیں ہے بلکہ

24..... بلغة الحیران، صفحہ ۴۳، مکتبۃ اخوت

اور طاغوت کا سنی کلمہ عبد من دون اللہ فهو الطاغوت اس میں بوجہ طاغوت جن اور ملائکہ اور رسول کو بولنا جائز ہو گا۔ یا
مروا عن شیطان ہے یُخْرِجُکُمْ مِنَ الظِّلْمَاتِ إِلَى النُّورِ ظلمات سے مراد ظلمات حاصل یہ کہ ربط القلوب کرنا ہے یعنی جَعَلَهُمْ

کیا اس کا عالم نہیں ہے کیونکہ اصل میں وہ شے بھی نہیں ہے۔ اور انسان خود مختار ہے اچھے کام کریں یا نہ کریں۔ اور اللہ کو چاہئے اس سے کوئی علم بھی نہیں کہ کیا کرے گا بلکہ اللہ کو اس کے کرنے کے بندہ معلوم ہوگا۔ اور آیات قرآنیہ جیسا کہ دلیلہ الگین وغیرہ بھی بھی اور احادیث کے لفظ ظاہری اس مذہب پر تطبیق میں نہ ہوں بعض مقام قرآن جو اس کے مطابق نہیں ہے ان کا معنی صحیح کرتے ہیں اور

26..... براہین قاطعہ، صفحہ ۳۰، دار الاشاعت

کثیر کو ظلمات خلافت سے نکال دی سبب ہے کہ ایک صالح نماز عالم علیہ السلام کی زیارت سے خواب میں مشرف ہوئے تو آپ کو اردو میں کلام کرتے دیکھ کر جھکا کہ آپ کو یہ کلام کہاں سے آگئی آپ تو عربی ہیں، فرمایا کہ جب سے علماء مدسہ دیوبند سے ہمارا معاملہ ہوا ہم کو یہ بات آگئی، سبحان اللہ اس سے رتبہ اس سلسلہ کا معلوم ہوا پس جس کا رتبہ عند اللہ زیادہ ہوگا شیطان عدو میں اس کی تخریب و تزیین میں زیادہ

क्या नबी का बदन मिट्टी खा सकती है ?

اَللّٰهُ کے مہربوب، داناए गुयूब، मुनज़्ज़हुन

अनिल ड़ूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने अज़ीमुश्शान है :

اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلٰی الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰهِ حٰی یُرَزَقُ

बेशक **اَللّٰهُ** तअ़ाला ने ज़मीन पर हराम फ़रमा

दिया है कि वोह अम्बियाए किराम के बदन खाए। **اَللّٰهُ**

के नबी ज़िन्दा हैं और इन को रोज़ी दी जाती है।”

(سُئِنَ ابْنِ مَاجِيْن ۲ ص ۲۹۱ حدیث ۶۳۶ ادار المعرفۃ بیروت)

माخذ و مراجع

مكتبة المدينة	کلام الہی	قرآن مجید
مكتبة المدينة	امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۱۳۲۰ھ	ترجمہ کنز الایمان
کتاب تفاسیر		
دار احیاء التراث ۱۴۲۰ھ	امام فخر الدین محمد بن عمر رازی رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۷۶۱ھ	التفسیر الکبیر
دار الفكر بیروت ۱۴۲۱ھ	امام عارف باللہ رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۱۲۴۱ھ	تفسیر الصاوی
المطبعة الميمنية بمصر ۱۳۱۷ھ	امام علی بن محمد خازن رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۷۴۱ھ	تفسیر الخازن
مکتبة پشاور	شاہ عبد العزیز محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۱۲۳۹ھ	تفسیر عزیز
کتاب احادیث		
دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۲۵۶ھ	صحیح البخاری
دار ابن حزم ۱۴۱۹ھ	امام مسلم بن حجاج قشیری رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۲۶۱ھ	صحیح مسلم
دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ	امام ابو داود سلیمان بن اشعث رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۲۷۵ھ	ابو داود
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ	محمد بن عبد اللہ خطیب تبریزی رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۷۴۰ھ	مشکاۃ المصابیح
مکتبة العلوم والحکم ۱۴۲۳ھ	امام ابوبکر احمد بن عمرو و یزار رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۲۹۲ھ	مسند البزار
دار الفكر بیروت ۱۴۱۳ھ	ملا علی قاری بن سلطان محمد رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۱۰۱۴ھ	مرقاۃ شرح مشکاۃ
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ	امام محمد عبدالرءوف مناوی رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۱۰۳۱ھ	فیض القدير
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۰ھ	امام ابن حجر عسقلانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۸۵۲ھ	فتح الباری
کتاب علم کلام		
باب المدینہ کراچی	ملا علی قاری بن سلطان محمد رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۱۰۱۴ھ	شرح فقہ اکبر
مطبعة السعادة	شیخ کمال الدین محمد بن محمد رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۹۰۲ھ	المسامرة
مکتبة المدینہ ۱۴۳۰ھ	سعد الدین مسعود بن عمر تغتازانی رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۷۹۲ھ	شرح العقائد
کتاب متفرقة		
باب المدینہ کراچی	محمود الطحان	التیسیر
مرکز اہلسنت بروکات رضا ۱۴۲۳ھ	امام عیاض بن موسیٰ مالکی رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۵۴۴ھ	الشفاء
مرکز اہلسنت بروکات رضا	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۱۰۵۲ھ	مدارج النبوة
دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ	امام عبد الوہاب الشعرانی رحمۃ اللہ علیہ - متوفی ۹۷۳ھ	الیواقیت و الجواهر

باب المدینة کراچی	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی رحمۃ اللہ علیہ + متوفی ۹۱۱ھ	تاریخ الخلفاء
دار المعرفہ ۱۳۲۰ھ	سید محمد امین ابن عابدین شامی رحمۃ اللہ علیہ + متوفی ۱۲۵۲ھ	رد المحتار
رضا فاؤنڈیشن ۱۴۱۸ھ	امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ + متوفی ۱۳۳۰ھ	فتاویٰ رضویہ
دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۷ھ	الشیخ عبد القادر الجیلانی رحمۃ اللہ علیہ + متوفی ۵۶۱ھ	الغنیة (غنیة الطالبین)
ضیاء القرآن پبلیکیشنز	علامہ ڈاکٹر کوب نورانی اوکاڑوی	سفید و سیاہ
فیروز سنز ۲۰۰۵م	الحاج مولوی فیروز الدین	فیروز اللغات
ضیاء القرآن پبلیکیشنز	علامہ عبد السمیع بیدل انصاری رحمۃ اللہ علیہ	انوار ساطعہ
کتاب بد مذہبان		
قدیمی کتب خانہ	اشرف علی تھانوی + متوفی ۱۳۶۲ھ	حفظ الایمان
میر محمد کتب خانہ	اسماعیل دہلوی + متوفی ۱۲۴۶ھ	تقویۃ الایمان
دار الاشاعت کراچی ۱۹۸۷ء	خلیل احمد انبیٹھوی + متوفی ۱۳۲۶ھ	براہین قاطعہ
مطبع مجتائی	محمد قاسم نانوتوی + متوفی ۱۲۹۷ھ	تصفیۃ العقائد
دار الاشاعت کراچی	محمد قاسم نانوتوی + متوفی ۱۲۹۷ھ	تحذیر الناس
محمد علی کارخانہ ۲۰۰۱ء	رشید احمد گنگوہی + متوفی ۱۳۲۳ھ	فتاویٰ رشیدیہ
مکتبہ سلفیہ لاہور	اسماعیل دہلوی + متوفی ۱۲۴۶ھ	صراط مستقیم
حمایت اسلام لاہور	حسین علی وان بھجرائی	بلغۃ الحیران
میر محمد کتب خانہ	حسین احمد + متوفی ۱۳۷۷ھ	الشہاب الثاقب
مطبع مجتائی	مرتضیٰ حسن درپننگی	اشد العذاب
.....	انور شاہ کشمیری ۱۳۵۲ھ	اکفار الملحدين
کتب خانہ اشرفیہ	ملفوظات اشرف علی تھانوی + متوفی ۱۳۶۲ھ	قصص الاکابر
.....	خلیل احمد انبیٹھوی + متوفی ۱۳۲۶ھ	المہند
اشرف المطابع	ملفوظات اشرف علی تھانوی + متوفی ۱۳۶۲ھ	الافاضۃ الیومیۃ
ساڈھورا	محمود حسن دیوبندی + متوفی ۱۳۳۹ھ	مرثیہ
.....	مولوی احمد علی	حق پرست علما کی مودودیت سے ناراضگی کے اسباب

याद द्वाशत

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्दर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी ।

[illegible]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ تَبْلِیغِ کُرآنو سُنُّت کی اِآلَمِغِی رِ سِیَاسِی تَهْرِیْک دا 'بَته' اِسْلاَمِی کے مَہ کے مَہ کے مَدَنی مَآہِوَل مَے ب کَظَرَت سُنُّتے سِیْخِی اُور سِیْخَا اُ جَاتِی ہِے، ہر جُمَا رَاَت اِشَا کی نَمَآج کے بَا 'د اِآپ کے شَہر مَے ہونے والے دا 'بَته' اِسْلاَمِی کے ہَفْطَاوار سُنُّتوں بَہرے اِجْتِمَاع مَے رِجَا اِ اِلاہِی کے لِیَے اَچْخِی اَچْخِی نِیْیَیْتوں کے سَاِث سَاِی رَاَت جُجَارنے کی مَدَنی اِلتِجَا ہِے، اِشِیْکَانے رَسُول کے مَدَنی کَافِیَلوں مَے ب نِیْیَیْتے شَہَاَب سُنُّتوں کی تَرْبِیْیَیْت کے لِیَے سَفَر اُور رِوْجَانَا "فِکْرے مَدِیْنَا" کے جَرِی اِ مَدَنی اِنْجَامَاَت کَا رِیَسَالَا پُور کَر کے ہر مَدَنی مَآہ کے اِبْتِیْدَا اِ دَس دِیْن کے اَنْدَر اَنْدَر اِپنے یَہَاں کے جِمْپَہَار کو جَمْ اِ کَر بَانے کَا مَآ 'مُول بَنَا لِیْجِیَے، اِنَّ شَاءَ اللّٰہُ تَعَالٰی اِ س کی بَرکَت سے پَاَبَنْدے سُنُّت بَنانے، جُناہوں سے نَفَرَت کَرنے اُور اِ اِمان کی اِفْجَا جُت کے لِیَے کُڈنے کَا جِہُن بَنےگا۔

ہر اِسْلاَمِی بَا اِ اِپنا یَہ جِہُن بَنَا اِ کِ "مُڈھے اِپنی اُور سَاِی دُنْیَا کے لوگوں کی اِسْلا_ہ کی کِوشِش کَرنی ہِے۔" اِنَّ شَاءَ اللّٰہُ تَعَالٰی اِپنی اِسْلا_ہ کی کِوشِش کے لِیَے "مَدَنی اِنْجَامَاَت" پَر اِمل اُور سَاِی دُنْیَا کے لوگوں کی اِسْلا_ہ کی کِوشِش کے لِیَے "مَدَنی کَافِیَلوں" مَے سَفَر کَرنا ہِے۔ اِنَّ شَاءَ اللّٰہُ تَعَالٰی

ISBN 978-969-579-677-1



0101427

کتابتہ المدینہ
(مکتبہ اسلامی)

MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

email : maktabadelhi@gmail.com

web : www.dawateislami.net